

निर्मात्य

रचयिता--कविरत्न मोहनलाल महतो, गयावाल



यदि आप विश्वकवि श्रीरवीन्द्रनाथ ठाकुर की 'गीताञ्जलि' के ढग की मौलिक कविता-पुस्तक देखना चाहते हैं, तो इसे एक बार अवश्य पढ़िये। इसके द्वाब्द शब्द से आध्यात्मिक तरलीनता टपकती है।

हिन्दी के सुप्रसिद्द समालोचक प० जगन्नाथप्रसाद चतुर्वेदी इसकी भूमिका में लिखते हैं—

“श्री गयाधाम के गौख, गयावाल-वशावत्त, ललित-कहा कुशल, 'वियोगी' पडित श्रीमोहनलाल महतो के लिये काम्री चौड़ी भूमिका की आवश्यकता नहीं, क्योंकि व्यंग्यचित्रों की विचिनता के कारण वह स्वय प्रसिद्धि प्राप्त कर चुके हैं। महतोजी की महत्ता की सत्ता यों ही जम गई है और उनकी प्रतिभा का परिचय भी पत्र पत्रिकाओं के द्वारा प्राय सनको मिल चुका है। इसलिये अब कहना केवल यही है कि इस नवीन 'निर्मात्य' के निरीक्षण से सुरसिक्कों को सन्तोष हुए विना न रहेगा। निरवद्य पद्य-रचना-चातुर्य और माधुर्य के अतिरिक्त सुन्दर सूक्ष्म, कमनीय वरपना, अन्य भाव तथा नूतनत्व के निदर्शन का दर्शन स्थान स्थान पर हो जाता है। सचमुच यह समूह सुन्दर और सगहना के योग्य हुआ है।”

लगभग १४० पृष्ठ। दो चित्र। मोटे कागज पर सुन्दर छपाई। पक्की जिल्द। मूल्य केवल १)

पटना

 पुस्तक-भटार 

लहेरियासराय

‘अभिनव अक्षरेव’, ‘मैमिल शोकिल’

विद्यापति की पदावली

टिप्पणी-सहित

सकलयिता

श्रीरामवृत्त शर्मा बेनीपुरी

बालचन्द्र विजयवर्द्ध भाषा । दुइ नहि लगई हृदय दासा ।
ओ परमेश्वर हर-हर सोई । ई निश्चय नाश्वर-मन मोह ॥
—विद्यापति कृत ‘कीर्ति जता’

सशोधक

कुमार गगानन्द सिंह एम ए., एम. एल. ए.

पुस्तक-भंडार, लहेरियासराय और पटना

प्रकाशक
पुस्तक-भण्डार, लहेरियासराय

प्रथम संस्करण पौष १९८२ वि०

मूल्य २)

द्वितीय संस्करण, वैशाख १९८८ वि०

तृतीय संस्करण, ज्येष्ठ १९८३ वि०

प्रदक — हनुमानप्रसाद, विद्यापति प्रेस, लहेरियासराय

समर्पण

हिन्दी के उन सफल समालोचकों के कुशल करो मैं
जो अपने कतरे को अकाट्य और अलंघनीय साबित करने के लिये

‘नवरत्न’ में दस रत्न छुसेह सकते हैं,
जो ‘देव’ को श्रेष्ठ सिद्ध करने के लिये ‘बिहारी’ की,
एव बिहारी को श्रेष्ठ सिद्ध करने के लिये
कितने अन्य कवियों की
कीर्ति पर

सफाई के साथ पर्दा ढाल सकते हैं,
जो किसी विशेष कवि के श्रद्धालु समर्थकों को
नीचा दिखाने के लिये
दास को आज्ञाश पर चढ़ा सकते हैं

तथा
जो केशव की कविता में तुलसी की कविता से
अधिक काव्य-गुण पाते हैं—

अमिनन जयदेव

मैथिलकोकिल

विद्यापति की पदावली

का

यह संपिप्त सफ़ल
उसके भोसिले सफल्यता द्वारा
सादर, सविनय और समय समर्पित

हमारी सर्व-प्रशंसित पुस्तक-मालाएँ

राष्ट्रभाषा हिन्दी के सभी विभागों को उत्तमोत्तम ग्रन्थ-रत्नों से पूर्ण करने के लिये हमने निम्नलिखित पुस्तक-मालाएँ विरोना आरम्भ किया है।

आपका कर्तव्य

है कि हमारी इन मालाओं को अपना कर राष्ट्रभाषा की अधिकाधिक सेवा करने को हमें उत्साहित करें। आपके सुभीते के लिये हमने यह प्रबन्ध किया है कि जो महाशय ॥) फीस भेजकर हमारे स्थायी ग्राहक हो जायेंगे, उन्हें

सभी मालाओं की पुस्तकें पौने मूल्य में ही मिलेंगी। हमें पूरा विश्वास है कि आप यह मौका न चूकेंगे।

हमारी सर्वांगसुन्दर मालाएँ—

- | | |
|-----------------------|---------------------|
| १ सुवाध काव्य-माला | ४ महिला-मनोरजन माला |
| २ सुन्दर साहित्य माला | ५ नवयुवक-हृदय हार |
| ३ बाल-मनोरजन माला | ६ सरल-पद्य माला |
| ७ चारु-चरित-माला | |

पुस्तक भंडार, लहेरियासराय और पटना

मैथिल कोकिल



कोकिल की कलकठता कितनी मधुर, कितनी सरस और कितनी हृदय-प्राहिणी होती है, इसका परिचय इसीसे मिलता है कि जब सस्कृत के सहृदय विद्वानों को कविकुल-गुरु महर्षि वाल्मीकि की वदना के लिये जिहा खोलनी पड़ी तब उन्होंने यही कहा—

कूजन्त रामरामेति मधुर मधुराक्षरम् ।

आरुह्य कविता शाखा वन्दे वाल्मीकि कोकिलम् ॥

इस एक श्लोक ही में जो समस्त गुण आदिकनि की रचनाओं में हैं, उनका व्यापक निरूपण है, थोड़े से शब्दों में ही बहुत-बुद्ध कह दिया गया है। इसी प्रकार भारती के वरपुत्र विद्यापति की लोकोत्तर रचनाओं का परिचय देने, उनके माधुर्य, प्रसाद, सरसता और मनोमुग्धकारिता की व्याख्या करने के लिये उनको 'मैथिल-कोकिल' कह देना ही पर्याप्त है। आप मैथिलीभाषा राकारजनी के राकेश और कविता-कामिनी के कमनीयकान्त हैं। आपको कोकिल-काकली-कलित मधुमयता, कोमल कान्त पदावली, भावुक-हृदय-विमोहिनी भावुकता, और नव-नव भावोन्मेषिणी प्रतिभा देखकर चित्त विमुग्ध हो जाता है। आपके इन्हीं

गुणों की आकर्षिणी शक्ति का यह प्रभाव है कि केवल मैथिलीभाषा को ही आपका गर्व नहीं है, वगभाषा और हिन्दी-भाषा-भाषी भी आपको अपनाने में अपना गौरव समझते हैं, और आज भी हृदय से आपका अभिनन्दन करते हैं। तीन तीन प्रान्तों में समान भाव से समादृत होने का गुण यदि किसी कविता में है, तो आपकी ही कविता में है, अन्य किसीकी कविता को आज तक यह महत्व नहीं प्राप्त हुआ। खेद है, ऐसी अपूर्व रचना का समुचित प्रचार अत्र तक प्रत्येक प्रान्त में नहीं हुआ। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिये यह सप्ताह तैयार किया गया है। सप्ताह-कर्त्ता ने उनकी उत्तमोत्तम रचना-कुसुमावली में से सरस-से सरस सुमनों के सप्ताह करने में जिस मधुप-वृत्ति का परिचय दिया है, उसकी भूयसी प्रशंसा की जा सकती है। पाद-टिप्पणियाँ तो सोने में सुगन्ध हैं। यदि आपलोगों ने इसका समुचित समादर किया, तो अतीव सुन्दर आकार-प्रकार में उक्त कविपुंगव की अधिकांश रचना आपलोगों के कर-कमलों में अर्पित की जावेगी। उस समय मैं एक वृहत् भूमिका-द्वारा इस महान् कवि की रचनाओं पर समुचित प्रकाश डालने की चेष्टा करूँगा। आज इन कतिपय पक्षियों को लिखकर ही सतोष ग्रहण करता हूँ।

हिन्दू-विश्व विद्यालय,
काशी }

अयोध्यासिंह उपाध्याय
'हरिऔध'

द्वितीय-संस्करण

हिन्दी भाषा के प्रेमियों ने जिस प्रकार विद्यापति की पदावली के इस सवित्र सटीक-सुन्दर संस्करण के प्रथम संस्करण को सराया है उसका अनुभव कर मैं निश्चिन्त सुखी हूँ। आज इस संस्करण का दूसरा संस्करण प्रकाशित होने जा रहा है। इस उपलक्ष्य में सद्गुरु प्रकाशक महोदय तथा सफलता जो को मैं धन्यार्थ देता हूँ।

प्रकाशकजी के अनुरोध से वाध्य होकर संशोधन करने की दृष्टि से मैंने इसकी पुनरावृत्ति की। मुख्यतः यह धीयुत नगेन्द्र नाथ गुप्त के संस्करण पर अवलम्बित है। जब तक उस संस्करण की परीक्षा प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थों के सहारे न की जायगी तब तक मूल पदों पर फलम खगाना अनुचित होगा। पर इसके ब्रिये जितना अवकाश चाहिये, वह मुझे नहीं मिल सका। इस संस्करण की बड़ी माँग है, अतएव अधिक दिनों तक इसे अप्रकाशित रखना भी उचित नहीं है। मूल पदा के पाठ को मैंने उषों का त्यों रहने दिया है, क्योंकि इससे शुद्ध पाठ अब तक पाठकों को देखने का सौभाग्य नहीं हुआ है और वे इससे अभ्यस्त-सा हो गये हैं। बिना प्रमाण के इसमें यदि हेरफेर की जाय तो कैसे? हाँ, कई स्थानों में मुझे सम्भेद उत्पन्न हुए थे, पर वक्तव्य निराकरण तब तक नहीं हो सकेगा जब तक हस्तलिखित प्राचीन पुस्तकों को मैं न देखूँगा।

टीका में मैंने जहाँ-तहाँ कुछ हेरफेर की है। समकालीन साहित्य के अभाव के कारण विद्यापति की पदावली का अर्थ जगता सब स्थानों में सर्वथा विवाद शून्य नहीं रह सकता। लोग समझते

दोंगे कि मैथिल इन मैथिली पदों को अच्छी तरह समझते होंगे । यद्यपि साधारणतया यह ठीक है, पर सम्पूर्णतया नहीं । आधुनिक मैथिली विद्यापति के काव्य की मैथिली नहीं है । दोनों में बहुत अन्तर हो गया है । कहीं-कहीं तो ऐसा मालूम पड़ता है कि इस महाकवि ने अपने अनूठे भावों को सगीत-बद्ध करने के लिये अनूठे शब्दों का निर्माण किया है । ऐसी अवस्था में कितनी टीकाएँ प्रकाशित हुई हैं और होंगी उनके सम्यग्बोध में समाजोचना की गुंजाइश है और रहेगी । इन बातों को दृष्टि में रखते हुए मैंने प्रथम संस्करण में फी टीका का संशोधन उन स्थानों में किया है जहाँ भाषा का यथार्थ भाव व्यक्त करने के लिये वैसा करना मुझे नितान्त आवश्यक प्रतीत हुआ । यह मानना होगा कि इस प्रकार के गुटके संस्करण में टीका के लिये यथेष्ट स्थान मिलना असम्भव है । यदि अपने काम से मुझे कुछ भी सतोष है तो इसीलिये कि इससे अधिक संशोधन मैं इस संस्करण में नहीं कर सकता था ।

मैं तो एक ऐसे संस्करण की प्रतीक्षा कर रहा हूँ जिसमें पदों के पाठ निर्विवाद हों और टीका विस्तृत, समाजोचनात्मक और प्रामाणिक । देखूँ, यह मधुर स्वप्न कब तक चरितार्थ होता है । तब तक के लिये सहृदय पाठकों से मेरा अनुरोध है कि ऐसे अधूरे प्रयत्नों से सतोष करें । यदि इससे उनकी तृप्ति न हो तो शिष्ट समाजोचना द्वारा तत्त्व निरूपण करके ही वे अपने वाच्य की ओर अभिमुख हों ।

धन्यवाद

इस पुस्तक के पदों के प्रकलन में मुझे मने द्रनाथ गुप्त द्वारा सम्पादित और जस्टिस साप्ताचारण मित्र द्वारा प्रकाशित पैंगना 'विद्यापतिर पदावली' से अधिक सहायता मिली है, अतः इन दोनों का मैं अत्यन्त अनुमोदित हूँ। 'विद्यापति का परिचय' लिखने में, एक पुस्तक, 'मैथिल कोकिल विद्यापति', 'हिस्ट्री ऑफ लिखत' एवं 'मिथिला दर्पण' से सहायता मिली है, अतः इनके लेखक भी मेरे धन्यवाद के पात्र हैं। हिन्दू विश्वविद्यालय के अध्यापन एवं कविता रचना से अपना समूह समय बचाकर इस छोटे से समूह के लिये एक छोटी-मिन्तु चोली-भूमिका लिख देने के लिये प० अयोध्यासिंह उपाध्यायजी का मैं धिश्न्यो हूँ। सुहृद्वर बाबू शिवपूजा सहाय, धर्मप प० जनार्दन झा, श्री जगदीश्वर झा, 'मैथिली'-सम्पादक बाबू उदितनारायणकालदास, मित्र रामनाथकाज 'सुमन' प्रिय 'विकल' आदि ने इस समूह को उपयोगी बनाने में मेरी सहायता की है, इनके प्रति मैं अपनी हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करता हूँ। सबसे अधिक धन्यवाद के पात्र हैं हिन्दी पुस्तक-भण्डार के प्राण बाबू रामलोकेश शरणजी, जिनके सत्साहदान से ही यह पुस्तक लिखी गई है और जिन्होंने इसे सुलभ और सुन्दर बनाने में कुछ भी ठठा नहीं रक्खा है।

—श्री वेनीपुरी

विमाता

लेखक—श्रीयुत अवधनारायण

बड़े हर्ष की बात है कि 'विमाता' हिन्दी-साहित्य के मौलिक उपन्यासों में स्थान पा गई। इसके ऐसा हृदयग्राही प्लॉट हिन्दी के बहुत ही कम उपन्यासों को नसीब हुआ है। हजारों कापियाँ थोड़े ही समय में बिक जाना इसकी उपयोगिता का सर्टिफिकेट है। 'सरस्वता' ने जब इसकी प्रशंसा की है, तब अधिक लिखना व्यर्थ है। लेखक ने समाज के चरित्रों का जीता जागता रूपाका सामने ला रखा है। पढ़ते जाइये और सामाजिक चरित्रों पर विचार कर देखिये कि सचमुच भारतवर्ष में यह यथार्थ घटता है कि नहीं। पुत्र के रहते हुए भी, केवल अपनी पाशविक तृष्णा को शांत करने के लिये दूसरी शादी करने से कैसे-कैसे अनर्थ होते हैं, किस प्रकार पुत्र का जीवन बर्बाद होता है और घर नरक कुंड बन जाता है, इसका कष्ट-रसात्मक वर्णन पढ़कर आँसु बहने लगते हैं।

सरल मुहावरेदार भाषा, पृष्ठ-संख्या ३०८, पको जिल्द २)

विषय-सूची

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
१ कवि-परिचय	१-४५	११ कौतुक	१३५
१ चन्दना	१	१२ अभिसार	१४५
२ धयःसन्धि	५	१३ छलना	१६६
३ नखशिख	१५	१४ मान	१७७
४ सद्यः स्नाता	३३	१५ मान-भग	२०६
५ प्रेम प्रसंग	३६	१६ विदग्ध विलास	२१६
६ दूती	६५	१७ वसत	२३१
७ नौकभौक	८३	१८ विरह	२४७
८ सखी शिक्षा	८६	१९ भावोत्साह	२८७
९ मिलन	१०१	२० प्रार्थना और नचारी	२६६
१० सखी सम्भाषण	१०१	२१ विविध	३१६

कामना

लेखक—श्रीयुत बाबू जयशंकर 'प्रसाद'

कानपुर का स्वनाम धन्य राष्ट्रीय साप्ताहिक 'प्रताप' लिखता है—
 "प्रस्तुत पुस्तक हिन्दी के एक लब्धप्रतिष्ठ लेखक की कृति—
 'नाटक' है। लेखक ने इस नाटक में एक शैली द्वारा, एक नये
 सार—टापू—की कायापलट का रोचक वर्णन किया है। 'कामना'
 'सन्तोष', 'दम्भ', 'लाजला' आदि मानव-हृदय के अछे और बुरे
 भाव नाटक के पात्र और पात्रियाँ हैं। और बतलाया गया है कि
 वर्तमान नवीन सभ्यता से एक विकृत अछूत, शान्त एवं सुखमय
 देश (टापू) किस प्रकार इस सभ्यता के सम्पर्क में आकर विप्रेता,
 सम्पत्तिवादी, क्रूर और स्वार्थरत हुआ समय हो जाता है, और वहाँ
 कैसा हाहाकार मच जाता है, तथा फिर उसका अन्त किस प्रकार
 होता है। पुस्तक की भाषा आकर्षक एवं सरल है। श्रीयुत जय
 शंकर प्रसादजी हिन्दी के नवयुग प्रवर्तकों में अग्रगण्य हैं। उनकी
 कलम में सोहुमार्य, ओज, मौलिकता और जादू है। 'कामना' शुद्ध
 कला का हृदयपाही एवं चातुर्यमण्डित प्रतियोग है। हम प्रत्येक
 साहित्यप्रेमी से इस नाटक के पढ़ने का अनुरोध करते हैं। जिवद
 और छपाई—मजबूत, साफ तथा सुन्दर।" हास्यरसप्रधान
 साप्ताहिक 'मनवाला' लिखता है—"हमने इसे खूब पसंद किया—
 'व्यपना, भाषा, भाव, और सुन्दर कविताएँ—सभी दृष्टियों से।
 'प्रसाद' जी युग से मात्र भाषा का भंडार सुन्दर-सुन्दर रत्नों से भर
 रहे हैं। सभी भाँप वालों की ठनपर आँख है। हमारी आन्तरिक
 कामना है कि प्रसादजी की 'कामना' लोगों के हृदय में स्थान पावे।"

सुनइले छापे की रगीन जिशद—मू० १।)

पुस्तक-भंडार—लहेरियासराय, पटना

विद्यापति का परिचय



विद्यापति का परिचय



भारतीय प्राचीन महापुरुषों का जीवन-वृत्त लिखना कठिन है। भारत में इतिहास या जीवनी लिखने की बेसी प्रथा नहीं थी। अतएव, अपने प्राचीन पुरुषों की जीवनी लिखने में हमें विशेषतः किंवदन्तियों या परम्परा से चली आती हुई जनश्रुतियों का आधार लेना पड़ता है। यदि किसी महापुरुषों की चर्चा प्रसंगपर किसी पुस्तक में आ गई हो, तो वह हमारे लिये एक बहुमूल्य ऐतिहासिक सामग्री हो जाती है। ताम्रपत्र या सिक्के भी इतिहास-सकलन में बहुत सहायता करते हैं। यहाँ एक बात और ध्यान में रखने की है। जो राजा हो गये हैं, जिन्होंने राजवंश में जन्म लिया था, या जिन्होंने किसी राजा का आश्रय लिया था, प्राचीन पुस्तकों में प्रायः उन्हींकी अधिक चर्चा है—सिक्के और ताम्रपत्र हमें उन्हींके इतिहास-सकलन में सहायक होते हैं। जिनका जन्म साधारण घराने में हुआ था, जिन्होंने किसी राजा का आश्रय नहीं लिया था, उनके जीवन-वृत्त लिखने में तो विशेषतः किंवदन्तियाँ ही सहायक होती हैं। सूर और तुलसी इतने बड़े कवि हो गये हैं, किन्तु इनके विषय में जो कुछ हम जानकारी रखते हैं, वह केवल किंवदन्तियों के ही आधार पर। जनश्रुति या किंवदन्ती सर्वथा अमूलक नहीं हुआ करती। उसमें बहुत कुछ ऐतिहासिक तथ्य रहते हैं—हाँ, हम यह स्वीकार करेंगे कि उसमें ऐतिहासिक तथ्यों पर बहुत-कुछ परदा पड़ा हुआ रहता है।

विद्यापति इस विषय में सूर या तुलसी से अधिक सौभाग्यशाली हैं। इनका जन्म सूर तुलसी के लगभग दो सौ वर्ष पूर्व होने

विद्यापति का निवास-स्थान

स्वस्ति श्रीगजरथपुरात् समस्त प्रक्रिया विराजमान श्रीमद्भास्-
 श्वरीवरजव्यवसाद् भवानीभवभक्तिभावनापरायण रूपनारायण महा-
 राजाधिराज श्रीमन्निवर्तिद् देवपादस्तमरविजयिनो जैरत्न सभायां
 पिसपी ग्राम वास्तव्य सकल लोकान् भूकर्मकारश्च समादिशन्ति ।
 ज्ञातुमस्तुभवताम् । ग्रामोऽयमस्मानि सप्रक्रियाभिनवजयदेव
 महाराजपठित ठरकुर श्रीविद्यापतिभ्यः शासनीकृत्य प्रदत्तोऽतोऽय-
 मेतेषां वचनकरी भूकर्मणादिधर्मकरिष्येति ॥ ज० स० २९३,
 भावण सुदि ७ गुरौ ।

विद्यापति के वंशधर बहुत दिनों तक इसी गाँव में बसते रहे । किन्तु अभी, चार पुरत पहले, ये इस गाँव को छोड़कर दूसी जिले के सौराठ नामक गाँव में बस गये हैं । अँगरेजी राज्य के पहले तक ये लोग इस गाँव का उपभोग साधिराज के रूप में करते थे । किन्तु अँगरेजी सरकार द्वारा सबेँ होने के समय इस गाँव का स्वयं हाके वंशधरों से छीन लिया गया । उस समय विद्यापति के वंशधरों ने अपना स्वतंत्र सिद्ध करने के लिये उपयुक्त ताम्रपत्र पेश किया था । इस ताम्रपत्र को लेकर कुछ दिनों तक रूढ़ विवाद चला । मित्रसैन साहय इसे जानी बताते रहे । किन्तु महामहोपाध्याय हरप्रसाद शास्त्री तथा अन्य योगीय अनुसन्धान कर्त्ताओं ने इस दान-पत्र को प्रामाणिक माना है । विसपी गाँव विद्यापति को शिवसिंह ने अर्पण दिया था । विद्यापति के प्रछिद विद्देपी पद्धित केशव मिश्र इसी दान की ओर लक्ष्य कर “अति पुण्य नगर-याचक” नाम से इनका उपश्रुति किया करते थे ।

इन्हें वगदेशीय सिद्ध करने के लिये जो कोशिश हुई थी उस विषय में भी कुछ गान लेना अप्राप्तिक न होगा । बात यों है, विद्यापति की अधिकांश रचनाएँ शृंगाररस से भरी-भरी हैं । भारतीय शृंगारी कवियों के प्रभाव उपास्यदेव हैं—राधाकृष्ण । संस्कृत और भाषा का शृंगार-पादित्य राधा-कृष्ण की केलि-क्रीड़ाओं से भरा पड़ा है । विद्यापति ने भी अपने पक्षों में राधा-कृष्ण की क्रीड़ाओं का वर्णन किया है और खूब किया है । इस विषय के ऐसे मधुर और कोमल पद भाषा साहित्य में कहीं अन्यत्र मिलना कठिन है । जिस समय बंगाल में चैतन्य महाप्रभु का आविर्भाव हुआ, उस समय इस कवि कोकिल की वाककी मिथिला की गली गली को रसप्लावित कर बंगाल के श्यामेन

विद्यापति का

६६६६६६६६

गुँजा रही थी। चैतन्यदेव के कानों में भी इसकी मधुर ध्वनि पड़ी। सुनते ही वे मग्नमुग्ध हो गये। वे ठूँढ़ ठूँढ़कर विद्यापति के पद गाने लगे। विद्यापति के अलौकिक पदों को गाते गाते, प्रेमावेश में, वे मूर्च्छित हो जाते थे। (चैतन्यदेव भारत के अवतारी पुरुषों में हैं—ऐसा सीमाश्रय प्राप्त करगा विद्यापति के लिये कितने गौरव की बात है!) भय क्या था, चैतन्यदेव की शिष्य-परम्परा में विद्यापति के पद गाने की प्रथा अनुदिन बढ़ती ही गई। यही नहीं, विद्यापति के ही अनुकरण पर कृष्णदास, नरोत्तमदास, गोविन्ददास, ज्ञानदास श्री निवास, नरहरिदास आदि वगीय कवियों ने कविताओं का पगाना आरम्भ किया। बाबू नगेन्द्रनाथ गुप्त लिखते हैं—“विद्यापतिर जे रूप अनुकरण दृष्टाछिल, सोध हय फोन देशे कोन कविर तद्रूप हय नाई।”... ताहँरई माया भाँगिया-चूरिया, गविया-गठिया, रूप रस, छन्दोबन्ध, भावभगी, लब्ध, उपमा, साँहारइ पदावली दइते लइया लोकमनो-मोहन वैष्णव काव्यसमूह सजित दइल।” त्रैलोक्यनाथ भट्टाचार्य एम० ए० बी० ए० एल० ने जो लिखा था उसका भाव देखिये—“विद्यापति और चण्डीदास की अनुत्तनीय प्रतिभा से समस्त यंग साहित्य उज्ज्वल और सजीव हुआ है। वैष्णव गोविन्ददास और ज्ञानदास से लेकर हिन्दू चंकिमचन्द्र और ब्राह्म स्वीन्द्रनाथ ठाकुर तक सब ही ठाकोगों की आभा से आलोकित है, और उनलोगों का अनुकरण करके कविता रचना में व्यस्त पाये जाते हैं।”

फल यह हुआ कि विद्यापति बंगालियों के रगरग में प्रवेश कर गये। सैकड़ों वर्षों तक लगातार बंगालियों द्वारा गाये जाने के कारण विद्यापति के बगदेशीय पदों का रूप भी ठेठ बंगला हो

५० कहा जाता है कि ये भी मैथिल ही थे।—लेखक।

गया। अब तो बंगाली लोग यह एक बार ही भूल गये कि विद्यापति बंगाली नहीं, मैथिल थे। बंगाली अपनी कुशाग्र-बुद्धि के लिये प्रसिद्ध हैं। उन लोगों ने विद्यापति का निवास स्थान भी बंगाल ही को ठुँद निकाला। यही नहीं, शिवसिंह नामक एक बंगाली राजा भी कहीं से टपक पड़े—राणी जस्मिना देवी भी गिर गई। यों सब प्रकार से सिद्ध हो गया कि विद्यापति ठेठ बंगाली थे। यही कारण है कि बंगाला १२८२ साल में स्वर्गीय राजकृष्ण मुजोपाध्याय ने जब पहले पद्वन 'वज्रदर्शन' नामक पत्र में यह प्रकाशित किया कि विद्यापति बंगाली नहीं मैथिल थे, और इसके प्रमाण में उन्होंने उपर्युक्त ताम्रपत्र आदि पेश किये, तब समूचे बंगाल में कोलाहल मच गया। विद्यापति पर ये लोग इतने क्रोध थे कि उन्हें अश्वदेसीय सिद्ध होना वे सुनना नहीं चाहते थे। उस समय एक प्रसिद्ध बंगाली लेखक ने यह आदेश लगाया था कि विद्यापति बंगाली ही थे। पहले बंगाली लोग मिथिला में विद्याध्वजन को जाते थे, सम्भव है, विद्यापति यहाँ से विद्याध्वजन को गये हों और यहाँ अपनी प्रतिमा में राजा शिवसिंह को प्रसन्न कर गाँव प्राप्त किया हो और चम गये हों। किंतु ये सब गोप-धार्जियाँ अब गलत साबित हो चुकी हैं। महासद्गोपाध्याय हरप्रसाद शास्त्री, जस्टिस सारदाचरण मित्र, बाबू नगेन्द्रनाथ गुप्त आदि सभी बंगाली विद्वानों ने यह कबूल कर लिया है कि ये मिथिला-निवासी थे और इन्होंने मैथिल भाषा में कविता की है। हमें धन्यवाद देना चाहिये श्रीयुक्त मित्रसंत साहय को, जिन्होंने सबसे पहले विद्यापति का पिहारी होना सिद्ध किया था।

विद्यापति का समय

प्राचीन कवियों की तरह विद्यापति के जन्म और मृत्यु के

[illegible]

पादू दमनन्दन सहाय ने 'मैथिल-कोकिल' विद्यापति' ग्रंथ में लिखा है कि बिसपाँ गाँव प्राप्त करने के समय विद्यापति की अवस्था केवल बीस बरस की थी। इसके पहले विद्यापति ने 'कीर्त्ति-लता' नाम की पुस्तक लिखी थी। सहायजी ने उसे १६ की अवस्था में लिखी हुई बताते हैं। सहायजी का यह कथन अनुमान-विरुद्ध तथा ऐतिहासिक प्रमाणों से असत्य सिद्ध होता है। सबसे प्रधान कारण तो यह है कि शिवसिद्ध गद्दी पर बैठने के तीन वर्ष के बाद ही मुसलमानों से युद्ध करते हुए पराजित होकर किसी अज्ञात स्थान में चले गये, जहाँ से वे पुन नदी लौटे—सम्भवत वे उसी युद्ध में मारे गये। इतिहास से यह सिद्ध है और स्वयं सहायजी ने भी इसे स्वीकार किया है। इससे तो यही सिद्ध होता है, कि कुछ तेईस वर्ष की अवस्था तक ही विद्यापति और

2

शिवसिंह की सगति रही। विद्यापति के अधिकार पदों में शिवसिंह का नाम है। यथा यद् कभी सम्भव हो सकता है कि केवल तीन-चार पपों के अन्दर ही इतने पद लिखे गये हों? अनुमान की बात जाने दीजिये। इतिहास भी इसके विरुद्ध है। स्वयं सहायजी ने अपनी पुस्तक में लिखा है कि विद्यापति बचपन में अपने पिता गणपति ठाकुर के साथ राजा गणेश्वर के दरबार में आते जाते थे। नैपाल-दरबार के पुस्तकालय में विद्यापति रचित 'कीर्ति-जता' की पूरी पुस्तक महामहोपाध्याय पं० हरमसाद शास्त्रीजी ने देखी थी और उसकी नकल भी इन्होंने करा ली थी। उस कीर्ति-जता में लिखा हुआ है कि १५२ लक्षमणाब्द में राजा गणेश्वर की मृत्यु हुई थी। अतः राजा गणेश्वर की मृत्यु के पहले तो विद्यापति का जन्म अवश्य हो गया होगा। वे ऐसी अवस्था के जूर रहें होंगे कि दरबार में अपने पिता के साथ जा सकें। २५२ लक्षमणाब्द में वे राजा गणेश्वर के दरबार में कैसे जा जा सकते थे—उस समय तो उनका जन्म भी न हुआ होगा!

बात यों है कि बाबू ब्रजानन्दनसहायजी को बाबू अयोध्या प्रसाद खत्री लिखित मिथिला राज्य की घशावली ने धोखा दिया है। बाबू अयोध्या प्रसाद खत्री के कथनानुसार शिवसिंह के पिता देवसिंह की मृत्यु १७४१ ईस्वी में हुई थी, जो लक्षमणाब्द २४७ होता है। सहायजी ने स्वयं इसका खटन किया है। क्योंकि

। # लक्षमणाब्द और ईस्वी सन् के तारतम्य में भिन्न भिन्न ऐतिहासिकों के भिन्न भिन्न मत हैं। सहायजी ने शिवसिंह के राज्यारोहण साल २६३ स० स० को १४०० ई० माना है, 'हिस्ट्री आफ़ तिरहुत' के रचयिता ने इसे १४१२ ई० लिखा है और मेरे हिसाब से यह १४०२ ई० पड़ता है।—लेखक।

विद्यापति के कथनानुसार लक्ष्मणाब्द २९३ में देवसिंह की मृत्यु हुई थी। यों भयोध्यागसाहजी ने सहायजी की गणनानुसार ४६ वर्ष की भूल की है। किन्तु एक जगह खत्रीजी के समय को गलत मान कर भी दूसरी जगह सहायजी ने उसे ही प्रामाणिक मान लिया है। दुर्गाभक्तितरंगिणी नामक पुस्तक विद्यापति ने राजा नरसिंहदेव के समय में लिखना शुरू किया था, और उनके बाद के राजा धीरसिंह के समय में समाप्त किया था। नरसिंह देव का समय खत्रीजी ने १४७० ई० लिखा है। सहायजी ने इस समय को प्रामाणिक मान लिया है। जब १४७० ई० के बाद तक विद्यापति के जीवित रहने की बात स्वीकार कर ली गई, तब उनके जन्म साल को आगे बढ़ाना सहायजी के लिये जरूरी था। किन्तु सोचना तो यह था कि जिस प्रकार देवसिंह की मृत्यु के विषय में खत्रीजी ने ४६ वर्ष की भूल की है, यही ४६ वर्ष की भूल यहाँ भी की होगी। खत्रीजी की यह भूल भी इतिहास सिद्ध है। स्वयं सहायजी ने अपनी पुस्तक के २० पृष्ठ में लिखा है कि नरसिंहदेव के पुत्र धीर सिंह के राज्याभिषेक में 'सेतुबध' नामक प्राकृत ग्रंथ की 'सेतुदर्पणी' नामक टीका लिखी गई थी। जिसके अनुसार ३२१ लक्ष्मणाब्द में धीरसिंह सिंहासन पर विराजमान यत्नलाये गये हैं। ३२१ लक्ष्मणाब्द १४२८ ई० में पड़ता है*। सोचने की बात है कि जब पुत्र १४२८ ई० में राजगद्दी पर बैठा था तो उसका पिता १४७० में कैसे राजा हुआ? यम साफ प्रकट है कि खत्रीजी ने यहाँ भी ४६ वर्ष की गलती की है। १४७० में ४६ घटा देने पर १४२४ ई० में नरसिंहदेव का राजा होना सिद्ध होता है। नरसिंहदेव ने, सहायजी के ही कथनानुसार,

* सहायजी की गणना के अनुसार—लेखक।

एक ही वर्ष तक राज किया था। सम्भव है १४२५ में वे मर गये हों और १४२८ में उनके पुत्र श्रीसिंह राजगद्दी पर विराजमान रहे हों। 'सेतुदर्शिणी' से भी यही पता चलता है। इसी ४१ वर्ष के कोर में पद्मर जहाँ सहायजी ने केवल २० वर्ष की अवस्था में शिवसिंह और विद्यापति की मंड कराकर तीनों ही वर्षों में उनका चिरविशेष कराया, वहाँ विद्यापति की शताधिक वर्ष की अवस्था का भी भ्रम उन्ह हो गया था—निश्चय श्रीचिरम प्रमाणित करने के लिये आपने जमीन भारमान पा कुलाबा मिलाया है, निजी और सार्वजनिक मन्त्र प्रमाणी को पेश किया है।

सहायजी को एक और सिद्धि ने भी घोसा दिया है। आगे २३ पृष्ठ में लिखा है कि ३४६ लक्ष्मणानन्द में इसके अपने हाथ से भागवत पोथी की नकल करना सिद्ध होता है। यह गलत है। नगेन्द्राथ गुप्त ने मैथिल कविवर पदा का के साथ स्वयं तरीनी जाकर उस पुस्तक को देखा था। उस पुस्तक के अन्त में लिखा है—“शुभमस्तु सर्वार्थगता ज० स० ३०६ आषाढ सुदि १५ कुजे रजावनीली ग्रामे श्री विद्यापतिलिपिरियमिति।” इस ३०६ को ही सहायजी ने भ्रमवश ३४९ मान लिया है।

अप यथार्थ बात सुनिये। यह इतिहास और जनश्रुति दोनों पर अवलम्बित है और आपको युक्तियुक्त भी मालूम पड़ेगी।

एशियाटिक सोसाइटी में एक प्राचीन हस्तलिखित पोथी है जो १३२२ सालान्द (= १६० छद्मणानन्द) की लिखी हुई है। यह पोथी शिवसिंह की राजधानी गजरथपुर में विद्यापति की प्रेरणा से लिखी गई थी। दो व्याख्याओं ने इसे लिखा था। उसमें विद्यापति को 'समस्तिय सद्गुणाध्याय उद्भूत श्री विद्यापति' ऐसा लिखा है और शिवसिंह का नाम महाराजा की उपाधि से युक्त है। इससे दो

विद्यापति का

६६६६६६६६६६

हरिसिंह देव के ७ राजमंत्री भी थे, "छान्दोग्य दशपद्धति" की रचना की थी। अभी तक इसी पुस्तक के अनुसार बिहार में दशकर्म किये जाते हैं। इसके सहोदर भाई धीरेश्वर, जो विद्यापति के निज प्रपितामह थे, "महावार्तिक नैबन्धिक" नाम से प्रख्यात थे। धीरेश्वर के पुत्र चण्डेश्वर ने 'कृत्य चिन्तामणि' तथा 'विवादात्मक' 'राजनीति-रत्नाकर' आदि सप्त रत्नाकरों की रचना की थी। राजनीति रत्नाकर एक बहुत ही बहुमूल्य ग्रन्थ है। प्राचीन भारतीय राजनीति पर हमसे बहुत-कुछ प्रकाश दिला जा सकता है। आप उपर्युक्त हरिसिंह देव के मंत्री एवं महामहत्तक सान्धिविप्रहीन थे। विद्यापति के पिता पण्डित गणपति ठाकुर भी राजमंत्री थे। आपने गंगाभक्तितरङ्गिणी नाम की एक पुस्तक की रचना की थी।

यों देखा जाता है कि विद्यापति का खानदान ही सरस्वती का अपूर्व कृपापत्र रहा है। जिस प्रकार उनके पूर्वजों ने राज्यकर्म में अपनी अपूर्व चातुरी दिखलाई थी, उसी प्रकार सरस्वती सेवा में भी वे लोग पीछे नहीं रहे हैं। ऐसे प्रतिभावान् कुल में उत्पन्न होकर विद्यापति ने जो कुछ काव्य कुशलता दिखलाई है, वह स्वाभाविक ही है।

विद्यापति का प्रारम्भिक जीवन

विद्यापति के पिता नाम था पण्डित गणपति ठाकुर। गणपति ठाकुर राजा गणेश्वर के सभापण्डित थे। इनकी माता का नाम था हौसिनी देवी। वह पिता धर्म्य है, जिन्हें ऐसा पुत्ररत्न

* हरिसिंहदेव शिवसिंह से बहुत पहले प्रसिद्ध सिमरौव गढ़ के अधिपति थे। इन्होंने नेपाल को जीता था।—लेखक।

प्राप्त हुआ था, वह माता भी धन्य है, जिन्होंने ऐसे पुरुषरत्न को अपने गर्भ में धारण किया था। विसपी गाँव की प्रत्येक घणा पुण्यमय और धन्य है, जहाँ ऐसे कविकोकिन्न ने अपना जीवन व्यतीत किया था। कहा जाता है, गणपति ठाकुर ने कपिलेश्वर महादेव की आराधना करके विद्यापति ऐसा पुत्र रत्न प्राप्त किया था।

विद्यापति ने सुप्रसिद्ध हरिमिश्र से विद्याध्ययन किया था और उनके भतीजे सुख्यात पक्षधर मिश्र इनके सहपाठी थे। विद्यापति अपने पिता के साथ राजा गणेश्वर के दरबार में बचपन से ही आया जाया करते थे। गणेश्वर के बाद कीर्तिसिंह राजा हुए। विद्यापति राजा कीर्तिसिंह के दरबार में आने जाने लगे। प्रारम्भ से ही इनमें प्रतिभा की झलक दीख पड़ती थी। राजा कीर्तिसिंह के दरबार में, मालूम होता है, ये कुछ अधिक फाज तक रहे होंगे। क्योंकि इन्हीं राजा कीर्तिसिंह के नाम पर इन्होंने अपना पहला ग्रन्थ 'कीर्तिलता' का निर्माण किया था। यह पूरी पुस्तक नपावत के राज-पुस्तकालय में है। मियिला में इस ग्रन्थ का केवल कुटकर अंश मिलता है। 'कीर्तिलता' कवि के तरुण वयस की रचना है। इस ग्रन्थ की भाषा संस्कृत, प्राकृत मिश्रित मैथिली है। कवि ने इस भाषा का नामकरण 'भवदट्ट' भाषा किया है। 'कीर्तिलता' के प्रथम पखवय में कवि ने रस्य कहा है-

देसिल यश्चना सब जन मिठा।

ते तेसन जम्पओ अवहट्टा॥

'देशी भाषा सभी को मीठी लगती है, यही जानकर अवहट्ट भाषा में इसकी मैंने रचना की है।' किंतु इस पुस्तक की रचना के समय, मालूम होता है, कवि अपनी काव्य-कुशलता के लिये

बहुत प्रसिद्ध हो गये थे। उनकी भाषा पर सभी मुग्ध थे। उनकी प्रतिद्वंद्वी उसी अवस्था में फोड़े नहीं था। वे अभिमान के साथ उस पुस्तक में लिखते हैं—

बालचन्द्र विज्जावह भाषा।

दुहु नहिं लग्गई दुज्जन हासा ॥

ओ परमेसर हर सिर सोहई।

इ निघय नायर मन मोहई ॥

—कीर्त्तिसिद्धता, प्रथम पदलव।

बालचन्द्रमा और विद्यापति की भाषा—इन दोनों पर दुष्टों की हँसी नहीं जा सकती। वह (बालचन्द्रमा) देवता के रूप में शिव के सिर पर सोहता है और यह (विद्यापति की भाषा) निश्चय पूर्वक नागरों का—सुचतुर भाषाविज्ञों का—मन मोहती है। इस पद के एक-एक शब्द से कवि का अभिमान टपकता है। जगदेव के समान इन्हें भी अपनी भाषा पर नाज थी। बात भी ठीक है। हम दावे के साथ कह सकते हैं कि भाषा की मिठाव और कोमलता की दृष्टि से तो इन कवि का कोई भी प्रतिद्वंद्वी हिन्दी-साहित्य में नहीं है।

कीर्त्तिसिद्ध के बाद शिवसिद्ध के पिता देवसिद्ध रागा हुए। देवसिद्ध के समय में राज्यशासन का भार शिवसिद्ध के ही हाथ में था। उसी अवसर पर विद्यापति और शिवसिद्ध में घनिष्ठता हुई। तब से विद्यापति शिवसिद्ध के अन्तिम समय तक उनकी पास रहे।

विद्वत्ता, संस्कृत-रचनाएँ

जैसा कि पहले लिखा जा चुका है, इन्होंने सुप्रसिद्ध विद्वान् हरिमिथ से विद्याभ्ययन किया था। इनका ज्ञानदान ही सरस्वती

का कृपापात्र रहा है। इनके पिता गणपति ठाकुर स्वयं कवि थे।
अतएव, इसमें सन्देह नहीं कि संस्कृत साहित्य का विद्यापति ने पूरी
तरह से अनुशीलन किया था। इसका प्रमाण इनकी लिखी हुई
संस्कृत की अनेकानेक पोथियाँ हैं। यहाँ पर यदि हम इनके लिखे
हुए संस्कृत ग्रन्थों का कुछ परिचय दे दें, तो भ्रातृसिद्धि नहीं
होगा। उनसे हम इनकी विद्वत्ता का कुछ अन्दाज़ जगा सकेंगे।
विद्यापति की प्रथम रचना कीर्त्ति-लता है। इसके विषय में
कुछ चर्चा हो चुकी है। दूसरी पोथी 'भू-परिक्रमा' है। यह पोथी
राजा देवमिह की आज्ञा से लिखी गई थी। इसमें नैतिक कदावियों
हैं। इसीका शृङ्खल रूप 'पुरुष परोक्षा' है। इनकी तीसरी पोथी है—
'पुरुष-परीक्षा'। यह पोथी, मालूम होता है, उस समय की रचना
है जब इनके मस्तिष्क का पूरा विकास हो चुका था। यह राजा
शिवसिंह की आज्ञा से उन्होंने राजसभकाल में लिखी गई थी।
इसमें कथाओं के ढंग से धार्मिक एवं राजनीतिक उपयोगी विषयों
का वर्णन है। राजनीतिक और धार्मिक विषयों में भी कवि ने
श्रावण रस का विस्मरण नहीं किया है। कवि ने श्रावण रस के परदे
की शिक्षा दी है। इस पुस्तक का बहुत
अनुवाद जहाँविधायक टर्नर के परामर्श से राजा काजीकृष्ण
ने किया था। फोर्ट विलियम कालेज में पहले यह पाठ्य
क की तरह पढ़ाई जाती थी। उक्त कालेज के प्रधानाचार्य के
पद पर सराव राय ने १८१५ ई० में इसका भाषानुवाद
की पोथी पुस्तक 'कीर्त्ति पताका' है। ६०३ ६६६

विद्यापति का

६६६६६६६६

भाषा में लिखी गई प्रेम-कविताएँ हैं। पाँचवीं 'लिखनावली' है, जिसमें संस्कृत में पद्यव्यवहार करने की रीति वर्णित है। लिखनावली राजाघनौली के अधिपति पुरादिष के लिये २९९ लघुमण्यब्द में लिखी गई थी। इसी राजाघनौली में विद्यापति ने ३०९ लघुमण्यब्द में अपने हाथ से भागवत लिखकर समाप्त किया था। छठी पुस्तक 'जैव सर्वस्व-सार' है। यह पुस्तक शिवसिंह की मृत्यु के बहुत दिनों के बाद रानी विश्वासदेवी के समय में लिखी गई थी। इस पुस्तक में भवसिंह से लेकर विश्वासदेवी तक के समय के राजाओं की कीर्ति पथा है, एवं शिव की पूजा की विधि लिखी हुई है। सातवीं पुस्तक 'गंगा-वाक्यावली' है, जो विश्वासदेवी के ही लिये लिखी गई थी। आठवीं पुस्तक है 'दान वाक्यावली'। यह राजा नरसिंह देव की स्त्री धीरमती को समर्पित की गई है। नववीं पुस्तक 'दुर्गाभक्ति तरंगिणी' दुर्गा-पूजा के प्रमाण और प्रयोग पर लिखी गई है। इसका निर्माण नरसिंह देव के कइने से हुआ था। धीरसिंह के समय में यह पूरी हुई थी। इसमें धीरसिंह के भाई भैरवसिंह और चन्द्रसिंह के भी नाम आये हैं। इसके अतिरिक्त विभाग सार (स्मृति प्रथ), वर्षकृत्य और गंगा-पञ्चदश नामक संस्कृत पुस्तकें भी भाषा की ही लिखी हैं। अब तक मिथिला में खोज का काम कुछ नहीं हुआ है। सम्भव है, इनकी लिखी और भी संस्कृत पुस्तकें हों, जो अभी तक छिपी पड़ी होंगी, क्योंकि विद्यापति दीर्घजीवी पुरुष थे। किन्तु, केवल इन्हीं पुस्तकों के देखने से विद्यापति के प्रगाढ़ पश्चिमाका परिचय मिलता है। हिन्दी के लिये तो यह नितान्त गौरव की बात है कि उसका एक प्रथम ध्रेणी का कवि संस्कृत-साहित्य में भी अपना खान स्थान रखता है।

विद्यापति की उपाधियाँ

हिन्दी में आजकल यह प्रथा विशेष रूप से पाई जाती है कि गायक कवि अपना एक-एक उपनाम रखता है। हिन्दी भाषा में यह प्रथा विशेषतः उर्दू भाषा से ली है, ऐसा कहा जाता है। किन्तु प्राचीन हिन्दी कवियों के भी उपनाम देखे जाते हैं। डॉ. आनन्द के उपनामों और उस समय के उपनामों में एक गहरा नेत्र है। किसी राजा या प्रसिद्ध व्यक्ति द्वारा, वाही काव्य कृपा देकर उसीके अनुसार प्रदान की हुई उपाधियाँ ही, उस समय कवियों के उपनाम होती थीं। आजकल जिनके जी जो भाता है, अपना उपनाम घर लेता है। प्राचीन कवियों में 'विहारी, भूषण' आदि उपनाम जो देखे जाते हैं, वे सब राज प्रदत्त उपाधियाँ हैं।

विद्यापति को भी कई उपाधियाँ प्राप्त हुई थीं। 'प्रभिनव जयदेव' की उपाधि तो सर्वप्रसिद्ध है। बिसफी गौर का जो साम्रपन्न है, उसमें भी विद्यापति को 'प्रभिनव जयदेव' कहा है। मालूम होता है यह उपाधि स्वयं शिवमिह ने दी थी। विद्यापति इस उपाधि के सर्वथा योग्य भी थे। जिस प्रकार संस्कृत साहित्य में मधुर शृङ्गार वर्णन में जयदेव का जोड़ नहीं है, वही प्रकार, इस विषय में विद्यापति भी भाषा साहित्य में अपना जोड़ नहीं रखते? इस उपनाम से उन्होंने कुछ कविताएँ भी की हैं। एक पद यों है—

सुकवि नय जयदेव भनिअ रे ।
देवसिंह नरेन्द नन्दन
सेतु नरपद कुलनिकन्दन

सिंह सम सिवसिंह राया

सकलं गुणक निधान गनिश्र रे ॥

इनकी दूसरी उपाधि 'कविशेखर' है। कविशेखर नाम से भी इनकी बहुत-सी रचनाएँ हैं। न मालूम यह उपाधि किसने दी थी। विस्पी ग्राम के दानपत्र में यह उपाधि नहीं है। कविकठदार, कविरजन इन दो नामों से भी अधिक कविताएँ हैं। दशाय-धान और पधानन की उपाधियाँ भी इनकी रही जाती हैं। कुछ कविताएँ चम्पति या विद्यापति चम्पई नाम से भी हैं। 'दशायधान' नाम से कुछ कविताएँ भी हैं। यह उपाधि, कहा जाता है, दिल्ली-स्थर ने दी थी।

विद्यापति का सम्प्रदाय

अभी तक यह विषय भी संदेहमय रहा है। इनकी कविताएँ विशेषतः राधाकृष्ण विषयक हैं। अतः लोगों की धारणा है कि ये वैष्णव रहे होंगे। बंगाल में भी पहले यही धारणा थी। बाबू ब्रजवन्दन सहाय ने अपने समर्पण पत्र में इन्हें 'वैष्णव कवि चूड़ामणि' लिखा है। किन्तु जनश्रुति और प्रमाण इसके विरुद्ध हैं। बात यों है कि विद्यापति शृङ्गारिक कवि थे। शृङ्गार के आराध्य देव श्रीकृष्णजी ठहरे। अतः शृङ्गारिक वर्णन में राधाकृष्ण के विलास ही वर्णन किये जाते हैं—सभी भारतीय शृङ्गारिक कवियों ने इसी युगल मूर्ति को लक्ष्य कर शृङ्गारिक रचनाएँ की हैं। किन्तु इसीसे किसी कवि को वैष्णव मान लेना ठीक नहीं। विद्यापति के पिता गणपति ठाकुर शैव थे। आपने शिव की उपासना के बाद ही यह पुनरन्तर्गमन प्राप्त किया था। ऐसी अवस्था में विद्यापति का शैव होना बहुत सम्भव है। जनश्रुति भी ऐसी ही है। यही नहीं, विद्यापति का एक पद यों है—

कहा जाता है कि एक समय हरिसिंह देव ने एक बृहत् यज्ञ-
शुशान किया था। किन्तु अन्य राजाओं द्वारा यज्ञभ्रष्ट कर दिया
गया, जिससे विरक्त होकर वे जगत् में चले गये। इसी समय
सुश्रवणर पाकर दिल्ली के बादशाह ने मिथिला पर चढ़ाई की।
मिथिला में उस समय अराजकता फैल रही थी। दिल्लीश्वर का
चिरमनोरथ पूरा हुआ—मिथिला का शासन-सूत्र मुसलमानों के हाथ
में आया। इस अवसर पर राजपंडित कामेश्वर ठाकुर ने बादशाह से
मैट की। बादशाह उनके गुण से अत्यन्त संतुष्ट हुए। उनके अस्वी-
कार करने पर भी उन्होंने मिथिला-प्रदेश का शासक नियुक्त
किया। तभी से मिथिला का शासन बाघणों के हाथ में आया।

कामेश्वर ठाकुर भोयनवार बाघण थे। उनके पूर्वपुरुष पं० श्रोयन
ठाकुर ने किसी राना से (सम्भवतः नायदेव से) 'भोयनी' नामक
गाँव उपहार में पाया था। 'श्रोयनी' गाँव दरभंगा जिले में पूसा
रोड स्टेशन के निकट है। 'भोयनी' गाँव में घसने के कारण इस
घस को 'श्रोयनवार' घस कहते हैं।

श्रोयनवार घस के सप्तमे प्रथम राजा यही पं० कामेश्वर हुए।
कामेश्वर के बाद उनके पुत्र भोगेश्वर और उनके बाद उनके पुत्र
गणेश्वर राजा हुए। गणेश्वर के दो बेटे थे—श्रीसिंह देव और कीर्त्ति
सिंह। इनकी कीर्त्तिसिंह के दरबार में विद्यापति ने कीर्त्तितता का
निर्माण किया था। कीर्त्तिसिंह और उनके भाई श्रीसिंह नि सत्ता
मरे तब भोगेश्वर के भाई भर्गसिंह के बेटे देवसिंह राजा हुए।

राजा शिवसिंह महाराज देवसिंह के पुत्र थे। इनकी राजधानी

उस समय गंगाप्रदेश का राजा था—श्री ७७

विद्यापति का

समय १७७७

गजरथपुर नामक नगर में यागमती के किनारे थी। विद्यापति के गुरुदेवदाता राजा शिवसिंह की राजधानी भी गजरथपुर में ही थी।

यह गजरथपुर कहाँ है ? दूरभगे से ४—५ मील पूर्व-द्विष्य कोने पर 'विवर्द्धसिंहपुर' नामक एक गाँव है, लोगों का कहना है, उसीका दूसरा नाम गजाधपुर था। वहाँ जाकर ता लगाने पर एक वृद्ध ब्राह्मण से मालूम हुआ कि यहीं शिवसिंह की राजधानी थी। वृद्ध ने यतजाया कि इधर भी उस गढ़ को गोदने से कभी कभी सोना चाँदी आदि द्रव्य मिलते थे। किन्तु अब यह का कहीं पता नहीं है—जहाँ पहले गढ़ था, वहाँ खेत लहरा रहे हैं। शिवसिंह के प्रति विद्यारति की इतनी श्रुति देखकर, तातूम होता है, ये भड़े ही रसिक और काव्यमर्मज्ञ^५ पुरुष थे। विद्यापति के पदा में इनके नाम के साथ साथ इनकी माणप्रिया लक्ष्मिमा देवी का भी नाम है। इस प्रकार रानी का नाम पदों में होने से लोगों ने उलटा-सीधा बहुत कुछ अनुमान किया है। किन्तु यथावत् बात तो यों है कि विद्यापति ने वहाँ कहीं किसी राजा का नाम दिया है, वहाँ साथ ही साथ साधारण-तया उसकी स्त्री का भी नाम दिया है।

शिवसिंह और लक्ष्मिमा देवी के नाम पदों में होने के

५. विद्यापति के दो सप्ताह अथ कितने, कवि भी शिवसिंह के दरबार में थे। जहाँ में से एक ये समापति, जो 'पारिजातहरण' और 'रत्निलयी परिणय' नामक भाषा-नाटकों के रचयिता कहे जाते हैं। होंगे पहले इन दोनों नाटकों के रचयिता विद्यापति को मानते थे।

—लेखक

विषय में मिथिला में एक मवाद है। यह यह है कि विद्यापति जिन पदों की रचना करते थे, वे सब राजा के अन्तःपुर में गाये जाते थे। राजा रानी दोनों अन्तःपुर में एकत्र बैठते, उनके चारों ओर स्त्रियाँ या चैतन्य। उस समय छेटी (चेरी) नाम की गायिकाओं की श्रेणी शिवसिंह और ललिता देवी की भणिता युक्त विद्यापति के पद गाने लगतीं। 'छेटी' स्त्रियाँ गानविद्या में निपुण होती थीं। वे महल में इसी काम के लिये नियुक्त की जातीं। विद्यापति के पदों में ललिता के अतिरिक्त शिवसिंह की अन्य रानियों के भी गान आये हैं। सम्भवतः ललितादेवी ही पटरानी रही हों, या इन्हींमें राजा की अधिक आसक्ति रही हो।

शिवसिंह जिस प्रकार कलाविद् थे, वही प्रकार वीर योद्धा भी थे। उनको यह बात बहुत अस्वस्थ रही कि यवनों के वे अधीन हैं। पिता के जीवन में ही एक बार उन्होंने द्वाित्री कर भेजा नन्द पर दिया, जिसपर सुनलनामी कौन मिथिला आई। देव दुर्विपाक से शिवसिंह कैद फरके दिशती पहुँचाये गये। देव सिंह ने शचीनला स्वीकार कर अपना राज्य तो प्राप्त कर लिया, जिन्नु पुत्रशोक से पीड़ित रहने लगे। दूधर विद्यापति को भी शिवसिंह के पिता चैन कहाँ? ललिता की दशा का क्या पूछना? विद्यापति अपनी जान पर खेलकर शिवसिंह का बन्धन हरने का प्रयत्न गये। कविनी दिवली पहुँचे। वहाँ जाकर अपना परिचय दिया। सुनलना ने हुक्म दिया कि अगर बायर हो तो कुछ करामात दिखाओ। विद्यापति ने कहा कि मैं भट्ट का दूत बन कर सकता हूँ। सुनलना ने एक सय स्नाता सुन्दरी का ध्यान करने को कहा। विद्यापति गाने लगे—

विद्यापति का

दूओ दलटि मनोरथ पुरओ, गरुश्र दाप सिवसिध करु ॥
 सुरतरु कुसुम घालि दिसि पूरिओ, दुन्दुभि सुन्दरसाद धरु ।
 वीर छत्त देरान को कारन सुरगन सते गगन भरु ।
 आरम्भिए अन्तेट्टि महामख राजसूअ असमेध जहाँ ।
 पडित घर अचार वर वानिज जाचक काँ घर दान कहाँ ॥
 बिज्जावह ऋविधग यहु गावए मानव मन आनन्द भओ ।
 सिहासन सिवसिह बइठओ, उच्छ्रवै बेरस बिसरि गओ ॥

शिवसिंह ने राजगद्दी पर बैठते ही विद्यापति को पिसली गाँव उपहार में दे दिया। राजमारोहण के तीन ही वर्ष बाद पुन यवन-सेना मिथिला पर आ चढ़ी। पहली बार पराजित होने के कारण स्वभावतः ही यादशाह ने यही तैयारी की थी। शिवसिंह दूरदर्शी थे, भविष्य समझ गये। किन्तु तो भी अधीनता स्वीकार करना उन्हें नापसन्द हुआ। आपने अपनी स्त्रियों को विद्यापति के साथ अपने मित्र राजा पुरादित्य के पास रक्षापत्नी की (सैवाल तराई) भेज दिया। राजा शिवसिंह के मित्र राजा पुनदित्य के विषय में भी कुछ विशेष बातें मालूम हुई हैं। आप द्रोणवार कुल के प्राज्ञ थे। आप यही प्रतापशाली थे और अपने बाहुबल से ससरी पर गंगा जौतार उसमें अपना राज्य स्थापित किया था। विद्यापति अपनी 'लिंगनावली' में लिखते हैं—

जित्वा शत्रुकुलं नदीयं वसुभिर्येनार्थिजस्तपिता
दोर्दर्पाजितं सप्तरीं जनपदे राज्यं स्थितिं कारिता ।
सन्नामेऽर्जुनं भूपतिं निहतो यन्वो नृशलायित ।
तेनैव जित्वा नाघलीं नृपपुत्रादित्येन निर्मापिता ॥

शिवसिंह सेना के साथ बादशाह से जा भिड़े। ये शाही सेना वा थूह भेदकर बादशाह के निपट पहुँच गये और अपनी रजदार से उसका शिरच्छाण उड़ाते हुए फिर बाहर निपन्न भागे। इनकी धीरता पर बादशाह मुग्ध हो गया। यद्यपि सेना टाके पीछे बीड़ी, तो उसने मना कर दिया। शिवसिंह यहाँ से नंगल की ओर जगज्ज में चले गये और पुनः अपने राज्य में लौटते। कोई कोई कहते हैं, वे मारे गये।

शिवसिंह की मृत्यु (अथवा पलायन) के बाद मालूम होता है, विद्यापति बहुत दिनों तक कलिया देवी के साथ राजावनीला में ही रहे। क्योंकि यही पर २९९ जयमयाब्द में यहाँ के राजा पुरादित्य के लिये आपने 'लिपिनामनी' लिखी। यही नहीं, ३०६ जयमयाब्द में आपने रचलित भागवत की पोथी भी यहीं समाप्त की। 'लिपिनामनी' के बाद आपने शिवसिंह के भाई परमसिंह की स्त्री विश्वासदेवी के लिये दो ग्रन्थ लिखे। इन दोनों ग्रन्थों में समय नहीं दिये गये हैं। परमसिंह के उत्तराधिकारी हरिसिंह के लिये आपने 'विभागसागर' की रचना की थी। उनकी स्त्री धीरमती के लिये 'दानवाक्यावली' लिखी गई थी। जैसा कि पहले लिखा जा चुका है, इनकी अन्तिम रचना दुर्गा भक्ति तरंगिणी है। यह २२

॥ कलिया देवी की विद्वत्ता, चतुरता और प्रशस्तिमानिता की अनेक जनश्रुतियाँ मिथिला में प्रचलित हैं। किन्तु किसी ऐतिहासिक क मत से इन्होंने शिवसिंह के बाद २ वर्ष तक राज्य भी किया था। किन्तु स्वयं विद्यापति ने कहीं भी इसकी ओर इशारा नहीं किया है। अतः यह बात आप्रमाणिक मालूम होती है—लेखक।

मायङ्ग, हम परिनाम निरासा

तुहु जगतारन दीन दयामय अतए तोहर त्रिसयासा ।
आध जनम हम नौंद गमायनु जरा सिसु कत दिन गेला ॥
निधुवन रमनि रमसरंग मातनु तोहँ भजय कओन बेला ॥

प्रापने अपनी कविता रचना द्वारा प्रचुर सम्पत्ति प्राप्त की थी । वृन्दावस्था में आप इस धन को देन-देनकर कहते हैं—

जतन जतेक जन पापे बटोरल मिलि मिलि परिजन राए ।
मरनह वेरि हरि कोई न पूछए करम लग चलि जाए ॥

ए हरि चन्दों तुअ पद नाय

तुअ पद परिहरि पाप पयोनिधि पारक कओन उपाय ॥
जावत जनम नहिं तुअ पद मेविनु जुवती मतिमय मेलि ।
अमृत तजि किए हलाहल पीअनु सम्पद अपदहिं मेलि ॥

विद्यापति अपनी ठमर की ओर लक्ष्य कर कहते हैं—

वयस, कतह चल गेला ।

तोहँ सेवइत जनम बहल, तइओ न अपन भेला ॥

बपस, तुम कहाँ चले गये ? तुम्हें सेवते हुए अपना जन्म बिता दिया, किन्तु तुम अपने न हुए ।

कहा जाता है, धनरा सृष्टि समय निकट आया जा । विद्यापति अपने घर के लोगों से बिदा लेकर गंगा सेवन की चले । गंगा सेवन की प्रथा मिथिला में अद्यावधि प्रचुर रूप से प्रचलित है । गंगा-यात्रा के अवसर पर आपने अपने पुत्र को बहुत कुछ उपदेश दिया । उससे कहा—पेटा, प्रजारजन करना, अतिथि सत्कार में कभी नहीं चूकना, दूसरे की स्त्री को माता के

तुल्य जाना। परचात् विद्यापति अपनी कुल-देवी विश्वेश्वरी के निकट गये। देवी से आपने जाने की अनुमति माँगी—वहा, माँ, अब गंगा जा रहा हूँ। जन्म-भर शिव की धाराधना की। अब विदा दो। घर पर सभी को सतोष दे पालकी पर चढ़कर गंगा की ओर चले। राह में जब गंगा से कुछ दूर पर ही थे, तब आपने अपनी पालकी रखवा दी। एक अमिमानी भक्त की तरह कहा—मैं इतनी दूर से मेरा के निकट आया, क्या मेरा मेरे लिये दो कोस आगे नहीं बढ़ आवेगी? रात बीती। दूसरे ही दिन लोग दृश्य देखकर अत्राक् रह गये। गंगा अपनी धारा छोड़, दो कोस की दूरी पर पहुँच गई थी। अभी तक उस स्थान पर गंगा की धारा टेढ़ी नजर आती है। उस स्थान का नाम 'मऊ-वाजितपुर' है। यह मुजफ्फरपुर जिले में है। वहीं विद्यापति की मृत्यु हुई। इनकी चिता पर एक शिव मन्दिर की स्थापना की गई। यह शिव-मन्दिर अभी तक विद्यमान है। विद्यापति की मृत्यु-तिथि के विषय में एक पद प्रचलित है—

विद्यापतिक आयु अयसान ॥

कातिक धवल त्रयोदसि जान ॥

इसके अनुसार विद्यापति की मृत्यु कातिक शुक्ल त्रयोदशी को हुई। यह तिथि प्रामाणिक समझ पड़ती है। कातिक महीने में गंगासेवन करने का हिन्दू-शास्त्र के अनुसार बड़ा महत्व है। विद्यापति की मृत्यु गंगा तट पर हुई थी—अब कि वे गंगा सेवा करने गये थे। अतः, इस तिथि को प्रामाणिक मानने का कोई कारण नहीं। तुलसीदास के विषय में भी ऐसा ही एक दोहा

प्रसिद्ध है। जब वह दोहा प्रामाणिक माना जाता है, तब कोई कारण नहीं, कि यह पद प्रामाणिक न माना जाय।

विद्यापति का हस्ताक्षर

हिन्दी में ऐसे बहुत ही कम सौभाग्यशाली प्राचीन कवि हैं, जिनकी हस्तलिपि प्राप्त होती है। विशेषतः विद्यापति ऐसे प्राचीन कवि की—जो चन्द को छोड़कर सभी प्रसिद्ध हिन्दी कवियों से पहले हुए थे—हस्तलिपि प्राप्त होना, तो हमजोगों के लिये बड़े ही सौभाग्य का विषय है। विद्यापति के हाथ से लिखी हुई उनकी निम्न रचना, पदावली या संस्कृत पोथियाँ, नहीं पाई जाती। हाँ, एक सटीक भागवत की पोथी विद्यापति के हाथ की लिखी हुई अवश्य पाई जाती है। यह पुस्तक दरभंगा से चारह कोस 'तरोनी' नामक गाँव में जयनारायण का की विधवा पत्नी के पास सुरक्षित है। दरभंगा जिले की पाण्डितमंडली या पूरा विख्यात है, और जनश्रुति से भी यह सिद्ध है कि यह पुस्तक विद्यापति के हाथ से लिखी गई थी। यह पुस्तक ताल-पत्र पर लिखी हुई है। प्रत्येक पत्र की लम्बाई दो फीट और ढेढ़ इंच तथा चौड़ाई सवा दो इंच के लगभग है। पत्र की संख्या ५७१ है। पत्र के दोनों ओर लिखावट है। प्रत्येक पृष्ठ में छ. पंक्तियाँ हैं। लिपि स्पष्ट, अक्षर की आकृति बड़ी, प्रत्येक अक्षर अलग अलग और स्पष्ट, विराम और विभाग का चिह्न सर्वत्र विद्यमान। लिखावट सुन्दर, कहीं भी एक अशुद्धि यथवा लिपि-दोष नहीं। रोशनाई प्रायः सर्वत्र स्पष्ट। अन्तिम पत्र

घाट के घेद्यन के यर्पण और पन्था के कारण जीर्ण हो गया है और निष्पाट भी अस्पष्ट हो गई है। ग्रन्थ के शेष में लिखा है—

“शुभमस्तु सर्वार्थगता संख्या ल० स० ३०६ श्रावणशुक्ल
१५ शुक्ले रजानौली ग्रामे श्री विद्यापतिलिपिरियमिति।”

अन्तिम दो अक्षर ‘मिति’ पत्राक्ष से द्रिस्त हो गया है। ‘रजानौली’ गाँव दरभंगे से प्रायः १५ कोस उत्तर है। शिवसिंह १९३ लक्ष्मणाच्य में राज्यासन पर बँडे थे। उनकी मृत्यु उसके तीसरे साल हुई थी। इस तरह उनकी मृत्यु के तेरह साल बाद की यह पोथी है। मालूम होता है, शिवसिंह की मृत्यु के बाद विद्यापति का जो सांसारिक कार्यों से उचट गया था—कम-से कम श्रद्धारिक रचानाओं की ओर से। मिश्र-विशोग पर ऐसा होना सम्भव भी है। उसी शोकावस्था में अपने चित्त की शांति के लिये विद्यापति ने यह कष्टकर कार्य प्रारम्भ किया हो।

विद्यापति का परिवार

विद्यापति के बेटे का नाम हरिपति था—विद्यापति रचित एक पद में इनका नाम आया है। विद्यापति के एक कन्या भी थी। मिथिला में यह प्रवाद है कि इनकी लवकी का नाम दुलही था। विद्यापति ने कितने पद ऐसे बनाये हैं, जिनमें पति गृह गमन के समय कन्या को उपदेश दिया गया है। उन पदों में दुलही शब्द आया है। कहते हैं, ये पद विद्यापति ने अपनी पुत्री को ही सम्बोधित कर लिखे थे। दुलही का अर्थ नववधू भी होता है। न मालूम क्या रहस्य है? मिथिला के एक वृद्ध ब्राह्मण के घर में एक पद

22

श्यामा सुवेषा त्रिवलिरेषा जघन भार विलम्बिते ।
मत्त गज-कर जघन युगवर गमन गति घरटा-जिते ॥

सुललित मन्द गमन फरई ।

जनि पति संग वरटा भमई ॥

अति रूप यौवन प्रथम सम्भव किं वृथा कथया प्रिये ।
तेजह रूप विमोह परिहर शोक चिन्तित चिन्तये ॥
उपयात मदन-व्याधि दुसह दहए पावक से घनम् ।
पवन दिसे दिसे दहए पावक युग्मदारज सम्बरम् ॥

श्यामा सवन्दिते ।

अति समय गीत सुशोभिते ॥

आत्मदान समान सुन्दरि धार वर्षति सिञ्चये ।

सिञ्चह सुन्दरि मम हृदयम् ।

अधर सुधा मधु पानमियम् ॥

चन्द्र कवि जयदेव मुद्रित मान तेज तोह रात्रिके ।

वचन मम धर कृष्णमनुसर किन्तु काम कला शुभे ॥

चन्द्रकला हे वचन फरसी ।

मानिन माधयमनुसरसी ॥

विद्यापति और पक्षधर मिश्र

पक्षधर मिश्र मिथिला के प्रकाण्ड विद्वान् हो गये हैं । आ-
विद्यापति के सहपाठी थे । विद्यापति ने बिसरी गाँव में एक भतिथि
शाळा निर्माण कर रखी थी । प्रतिदिन भोजन के पश्चात् स्वयं
विद्यापति भतिथिशाला में जाते और भतिथियों से वार्त्तालाप करते ।

विद्यापति का

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

प्रवाद है कि एक दिन जब विद्यापति अतिथिशाला में गये तब सभी अतिथि इनकी अभ्यर्थना में खड़े हो गये । देवज कोने में एक आसन्न कृश पुरुष बैठा ही रहा । विद्यापति के पूछताछ करने पर मालूम हुआ कि इन्होंने भोजन नहीं किया है । उस पुरुष की दुर्बलता और कृशता पर इनके सुख से सहसा निकल गया—

“प्राघ्नो घुणत् कोणे सूक्ष्मत्वान्नोपलक्षित ।”

‘घर के कोने में सूक्ष्म कीट (घुन) वत् अतिथि सूक्ष्मता-वशत नहीं दीख पड़े ।’

बैठे हुए पुरुष ने तुरत उसे श्लोक की पूर्ति करते हुए उत्तर दिया—

“नहि स्थूलधिय पुस सूक्ष्मे दृष्टि प्रयायते ॥”

‘स्थूलबुद्धि पुरुष को सूक्ष्म पदार्थ नहीं दीख पड़ता ।’ विद्यापति योखी सुनते ही अपने सहपाठी को पहचान गये । उन्हें आदर पूर्वक अपने घर में ले गये । पक्षधर मिश्र सम्भवतः विद्यापति से कुछ छोटे थे । उनके स्वहस्तलिखित एक विष्णुपुराण में ३५४ अक्षमणान्द लिखा हुआ है ।

विद्यापति के प्रति विद्वेष

यह लोगों के प्रति ठाके आरोस पदोस चाते सदा द्वेष भाव रखते हैं, यह बात स्वयंसिद्ध है । विद्यापति के भी कुछ लोग विद्वेपी थे । विद्यापति निवभक्त थे । शिव की पूजा करते समय, भावावेश में, निज प्रणीत नचारी गाते-गाते, वे नाचने तक लगते थे । इसी कारण कुछ लोग उन्हें ‘नर्तक’ नाम से चिढ़ाते थे । ऐसा प्रवाद है कि विद्यापति के एक और प्रसिद्ध विद्वेपी हो गये हैं ।

इनका नाम है केशव मिश्र । इनका समय ४७३ ख्रिस्तपूब्द है, यद्यपि विद्यापति के लगभग सो वर्ष पश्चात् । ये प्रसिद्ध शाक्त थे । 'द्वैत परिशिष्ट' नामक स्वरचित ग्रन्थ में इन्होंने देवीभागवत को प्रामाणिक ग्रन्थ प्रतिपादित किया है । विद्यापति ने अपने हाथ से श्रीमद्भागवत लिखा था, इसलिये ये उनसे बिड़ से गये थे । केशव मिश्र विद्यापति को 'शक्तिगुग्ध नगरयाचक' नाम से उपहाम करते थे । विद्यापति ने बिसफी गाँव उपहार रूप में ग्रहण किया था— इसीलिये ये 'नगरयाचक' थे । द्वेप का कोई ठिकाना है ! ये महा-शय शिवविह के कुल की दौहित्र-सतान थे । राजकुटुम्ब के पुरुष थे । अतएव ऐसी उद्दण्डता स्वाभाविक भी है ।

—४—

पदावली

अथपि विद्यापति ने लगभग एक दर्जन संस्कृत ग्रंथों का निर्माण किया था, तथापि उनकी प्रसिद्धि का खास कारण उनकी पदावली । गाने योग्य छन्द 'पद' कहे जाते हैं । विद्यापति ने जितने छन्द बनाये, सभी सगीत के सुर-जय से बँधे हुए हैं । विद्यापति ने कविता में अपना आदर्श जयदेव को माना है—जो हम उन्हें 'अभिनय जयदेव' कहते भी थे । अतः, जयदेव के ही समान वे सगीत-पूर्ण कोमल फान्त पदावली में शृङ्गारिक रचना करते थे जैसा कि पहले लिखा जा चुका है, दरमंगे के वर्तमान अधिपति के पूर्वपुरुष नरपति ठाकुर के समय में 'बोचन' नामक एक कवि हो गये हैं । उन्होंने अपनी 'रागतरंगिणी' नामक पुस्तक में लिखा है कि सुमति नामक एक कलाविदु फारस्य फरफक के लड़के जयत को राजा शिवसिंह ने विद्यापति के निष्कट रूप दिया था । विद्यापति पद तैयार करते थे, जयत उसका 'सुर' ठीक करता था—

सुमति सुतोदय जन्मा जयत. शिवसिंहदेवेन ।

पंडितवर कविशेखर विद्यापतये तु सन्यस्त ॥

बिना सगीत का भर्म जाने सगीत की रचना नहीं की जा सकती । मालूम होता है, विद्यापति स्वयं भी गान विद्या में पारंगत थे । विद्यापति के पदों में कहीं कहीं छन्दोभंग से दीए पढ़ते हैं । सूरदास के पदों में यही बात पाई जाती है । किन्तु यथार्थतः ऐसी बात नहीं है । सगीत के सुर-जय के अनुसार जो पद बनाये जाते हैं, उनमें 'ध्वनि' का ही विचार किया जाता है, अक्षर और मात्रा का नहीं । इसीसे सगीत से अपरिचित व्यक्तियों को पदों में छन्दोभंग का आभास मिल जाता है ।

पदावली का रूप

विद्यापति ने कितने पद बनाये थे, इसका भी अभी तक पूरा पता नहीं चलता है। श्री गणेशनाथ गुप्त ने १४५ पदों का समग्र प्रकाशित किया था। यशोवन्तसहायजी का समग्र इससे बहुत छोटा है, तथापि उसमें कुछ ऐसे पद हैं, जो गणेशनाथ गुप्त वाले संस्करण में नहीं हैं। सहायजी के नये पदों में नचारियों की ही प्रधानता है। किन्तु अभी तक विद्यापति के बहुत से अनूठे पद प्रकाशित ही हैं। मिथिला की छिपीं जिन पदों का विवाद के अन्तर पर गाती हैं जनता, तथा बहुत सी नचारियों का, अभी संकलन नहीं हुआ है।

पदावली के प्राचीन संस्करणों का देखने से पता चलता है, कि विद्यापति ने नये पदों की रचना विषय विभाग के अनुसार नहीं की थी। बिहारी के ही समान विद्यापति भी, कथ वमग में आते थे, रचना कर ढालते थे। पीछे लोगों ने उन्हें अलग अलग विभाग कर सजा लिया।

पदावली की हस्तलिखित पोथियाँ

यों तो विद्यापति के अधिकांश पद लोगों को बरस्य ही हैं और उन्होंने समग्र 'पद्मपत्र' आदि रंगना के प्राचीन समग्र प्रयोगों में हैं, किन्तु हाल में तीन प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथ मिले हैं, जिन से विद्यापति के कितने नवीन पद प्राप्त हुए हैं, एवं पदावली की प्रामाणिकता का पूरा पता चलता है।

उन ग्रन्थों में सबसे प्राचीन और प्रामाणिक तालपत्र पर लिखी हुई एक पोथी है। यह पोथी भी विद्यापति लिखित 'भागवत' के साथ 'तरौनी' ग्राम के स्वर्गीय पंडित लोकनाथ झा के घर में सुरक्षित

विद्यापति की पदावली

(सटिप्पण)



वन्दना

(१)

नन्द क नन्दन कदम्ब क तरु-तर

धिरे धिरे मुरलि बजाय ।

समय सँकेत-निकेतन बइसल ~~बैठल~~

बेरि बेरि बोलि पठाव ॥२॥

सामरि, तोग लागि

प्रतिष्ठा अनुखन विफल मुरारि ॥३॥

१—नन्द क नन्दन = नन्द के बेटे, श्रीकृष्ण । तर = तले, नीचे ।

२—सँकेत-निकेतन = मिलने का निर्दिष्ट स्थान । बइसल = बैठे हुए ।

बेरि बेरि = बार बार । (सँकेत स्थान में बैठकर मिलन का समय आया जान) बार बार मुला रहे बै (बरसों में पुनः रहे हैं)—“नामसमेतम्

कुलसंकेतम् वादयते मृदुवेणुम्”—भीतगोविंद । ३—सामरि = रसामा,

सुन्दरी,—“शीते मुखोष्णसर्वांगो, धोभे च सुखशीतला । तप्तकाष्ठेन वर्षाया

सा को रसामेति कथ्यते ॥ ” तोरा लागि = तुम्हारे वासने । अनुखन = प्रतिघप ।

जमुना क तिर उपवन उदवेगल
 फिरि फिरि ततहि निहारि ।
 गोरस बैचण श्रवइत जाइत
 जनि जनि पुछ वनमारि ॥५॥
 तौहे मतिमान, सुमति, मधुसूदन
 वचन सुनह किहु मोरा ।
 भनइ विद्यापति सुन वरजौवति
 वन्दह नन्द-किसोरा ॥७॥

४-५ तिर = तट । उदवेगल = उद्विग्न हुआ, व्याकुल । ततहि =
 उसी तरफ । जनि जनि = प्रत्येक स्त्री से (पुल्लिंग जन, स्त्री० जनि)
 यमुना के किनारे उपवन में (भ्रमण करते हुए) व्याकुल होकर पुन
 पुन उसी ओर (तुम्हारे आगमन पथ को ओर) देखते हैं, और दूध-दही
 बेचने को आने जानेवाली प्रत्येक रमणी से वनमाली श्रोत्रिण (तुम्हारे
 विषय में) पूछते हैं । ६—मतिमान = अनुरक्त । हे सुमति । मेरी कुछ
 बातें सुनो, मधुसूदन तुमपर अनुरक्त है । ७—भनइ = कहते हैं । जौवति
 = युवती । वन्दह = वन्दना करो ।

“ते सुकवी रस सिद्ध कवि, वदनीय जग माँहि ।
 जिनके सुजस-सरीर कहैं, जरा मरन भय नाँहि ॥”

(२)

(राधा की वन्दना)

देख देख राधा रूप अपार ।

अपुन के बिहि आनि मिलाओल
खिति तल लावनि-सार ॥२॥

अगहि अंग अन्नंग मुरछायत
देवर हेरए पडए अधीर ।

मनमथ कोटि-मथन कर जे जन
से हेरि महि-मधि गीर ॥४॥

कत कत लखिमी चरन-तल नेओछए
रगिनि हेरि बिभोरि ।

कर अभिलाख मनहि पदपंकज
अहोनिस्ति कोर अगोरि ॥६॥

- २—अपुन = अपूर्व । बिहि = बिधि, मया । आनि मिलाओल = ला मिलाया, रच दिखाया । खिति = बिलि, पृथ्वी । लावनि = लावय ।
३—अन्नंग = कामदेव । हेरए = देखकर । अधीर = मसियर, चंचल ।
४—मनमथ = कामदेव । मधि = में । जो करोड़ों कामदेवों का (अपने सौंदर्य से) मयन करते हैं, (वह भीरुप्य भी) जिसे देखकर (मूर्च्छित हो) पृथ्वी पर गिर पड़ते हैं । ५—लखिमी = लक्ष्मी । नेओछए = न्यौछावर करते हैं । रगिनी = झररी । बिभोरि = बेसुप होकर । ६—अहोनिमि = अहर्निश, दिन रात । कोर = गोद । अगोरि = (मैथिली) यत् पूज्य रखना । १—मा में अभिलाषा होती है कि इस पद कमल को रात दिन गोदी में 'अगोर कर' रखें ।

(३)
(देवी-वंदना) ✓

जय जय भैरवि असुर-भयाउनि
पसुपति-भामिनि माया ।

सहज सुमति घर दिअओ गोसाउनि
१ अनुगति गति तुअ पाया ॥२॥

बासर-रैनि सबासन सोमित
चरन, चन्द्रमनि चूडा ।

कतओक देत्य मारि मुँह मेँलल,
कतओ उगिल केल कूडा ॥४॥

सामर घरन, नयन अनुरजित,
जलद-जोग फुल कोका ।

कट कट विकट ओठ-पुट पाँडरि
लिधुरे-फेन उठ फोको ॥६॥

घन घन घनए घुघुर कत बाजए,
हन हन कर तुअ काता ।

विद्यापति कवि तुअ पद सेबक,
पुत्र विसरु जनि माता ॥८॥

२—दिअओ=दो । गोसाउनि=गोस्वामिनी, भगवती । पाया=पैर ।

३—बासर=दिन । रैनि=रात । सबासन=शबासन=मुँह पर आसन ।

चन्द्रमनि=चन्द्रकान्तमणि । चूडा=सिर । ४—कतओक=कितना ही ।

मेँलल=रक्खा । कूडा फेन=चूर-चूर कर दिया । अनुरजित=रंगा हुआ,

झलल । जलद जोग फुल कोका=शदल में कमल फूले दो । पाँडरि=एक

लाल फूल । फोका=मुँह । ७—काता=कत्ता, कटार ।

(४)

सैसव जौवन दुहु मिलि गेल ।

स्त्रन क पथ दुहु लोचन लेल ॥२॥

वचन क चातुरि लहु-लहु हौंस ।

धरनिये चाँद कपल परगास ॥४॥

मुकुर लई अर करई सिंगार ।

सखि पूछइ कहिसे सुरत-विहार ॥६॥

निरजन उरज हेरइ फत वेरि ।

हसइ से अपन पयोधर हेरि ॥८॥

पहिल बदरि-सम पुन नवरग ।

दिन-दिन अनंग अगोरल अग ॥१०॥

माधव पेखल अपुरुष राला ।

सैसव जौवन दुहु एक भेला ॥१२॥

(विद्यापति कह तुहु अगेआनि ।

दुहु एक जोग हइ के कह सयानि ॥१४॥

— सैसव = शिशुता, बचपन । जौवन = जवानी । २—दोनों

बानों की राह पकड़ी = कटाव करना प्रारम्भ किया । ३—लहु =

। हास = हँसी । ४—परगास = प्रकाश । ५—मुकुर = भाईना ।

वहार = काम कीड़ा । ७—निरजन = एकान्त में । उरज =

। ८—हे । “रिमत किंचिद्वक्त सरसतरलो

मवि नवविलासोकिसरस । गतीना

। स्पृहान्वितास्य किमिह न हि

का पल । नवरग = नारंगी, नींबू ।

(५)

सैख जौवन दरसन भेल ।

दुहु दल-चले दन्द परि गेल ॥२॥

कबहु बाँधय कच कबहु विधारि ।

कबहु भाँपय अँग कबहु उधारि ॥४॥

अति थिर नयन अथिर किछु भेल ।

उरज-उदय-थल लालिम देल ॥६॥ १५११

चचल चरन, चित चचल भान ।

जागल मनसिज मुदित नयान ॥८॥

विद्यापति कह सुनु वर कान ।

धैरज धरह मिलायव आन ॥१०॥

कुच, पहले वैर के समाप्त छोटे थे, पुन नारंगी से हुए । १०—अनंग = कामदेव । सुगौरल = पहरा दिया । ११—पेखल = देखा । अपुरुष = अपूर्व । १२—भेला = भया, हुआ । १४—के कह = कौन कहता है ।

२—दन्द = दन्द = युद्ध । परिगेल = पड़ गया, शुरू हो गया, ठन गया । दोनों (रौतव और यौवन) के सैखल में दन्द युद्ध छिड़ गया । ३—कच = केश । विधारि = खोल देना । ४—अँग = देह, (यहाँ छाती) । ५—अथिर = चचल । ६—उरज = कुच । उदय-थल = उगने का स्थान । देल = दिया । कुचों के उत्पन्न होने के स्थान में लालिमा छा गई । ७—भान = मालूम होना । पैर चचल थे ही, अब चित भी चचल मालूम होता है । ८—मुदित = बँद । नयान = आँखें । काम देव जाग तो गया, पर उसकी आँखें बंद ही हैं, नहीं खुलवा । ९—कान = काह, कृष्ण । १०—आन = लाकर ।

(६)

सैख जीवन दरसन भेल ।

दुहु पथ हेरइत मनसिज गेल ॥२॥

मदन क भाव पहिल परचार ।

भिन जन डेल भिन्न अधिकार ॥४॥

कटि क गौरव पाओल नितम्ब ।

एक क रीन अओक अवलम्ब ॥६॥

प्रगट हान्न अत्र गोपत भेल ।

उरज प्रगट शय तन्हिक लेल ॥८॥

चरन चपल गति लोचन पाव ।

लोचन क धैरज पदतल जाव ॥१०॥

नव कविसेखर कि कहइत पार ।

भिन भिन राज भिन्न वेवहार ॥१२॥

२—मनसिज=काम । दोनों को राह में देखते हुए कामरेव ने (बाला के शरीर में) गमन किया । ३—पहिल परचार=प्रथम प्रचारित हुआ । ४—कटि क=कमर का । गौरव=गुणता । नितम्ब=चूतङ्ग । ६—रीन=चीण, पतला । अओक=अत्र का=दूसरे का । ७, ८—गोपत=गुप्त । तन्हिक=उसका । प्रगट हँसी अत्र गुप्त हुई और उसकी प्रकटता अब कुंहीं ने ले ली । १०—धैरज=धीरता । 'काव्यप्रकाश' में कहा है—श्रीश्रीधरस्यजति तनुतां सेवते मध्यमाग । पदभ्यां मुकारत रलगतय सभितालोचनाभ्याम् ॥ वच प्राप्त कुच सचिवतामद्वितीयतु वक्ष्य । तदुगाश्रया गुणविनिमय कल्पितो यौवनेन । ११—नव कविसेखर=विष्णुपति का उपनाम ।

(७)

किहु किहु उतपति अंकुर भेल । ✓

चरन-चपल-गति लोचन लेल ॥२॥

अब सब खन रह आंचर हात ।

लाजे सखिगन न पुछ्य वात ॥४॥

कि कह्य माधव धयस क सधि ।

हेरइत मनसिज मन रहु बधि ॥६॥

तइअश्रो फाम हृदय अनुपाम ।

रोपल घट ऊचल कए ठाम ॥८॥

सुनइत रस-कथा थापय चीत ।

जइसे कुरगिनी सुनए संगीत ॥१०॥

सैसव जीवन उपजल बाद ।

केश्रो न मानए जय-अवसाद ॥१२॥

विद्यापति कौतुक चलिहारि ।

सैसव से तनु छोडनहि पारि ॥१४॥

१ अंकुर = कुचों के अंकुरे । ३-खन = क्षण । हात = हाथ ।

५ ६, माधव । धय सधि (की माते) क्या कहूँ, देखते ही कामदेव का मन भी दँध गया । ७ = तथापि (बन्दी होने पर भी) काम ने उसके अनुपम हृदय पर घट स्थापित कर उस स्थान को ऊँचा कर दिया ।

८—थापय = स्थापित करती है । १०—कुरगिनी = हरिणी । ११—

उपजल बाद = होइ मची । १२—केश्रो = कोरे । अवसाद = पराजय ।

१४—रीसव को उसका शरीर छोड़ना ही पड़ेगा ।

(८)

पहिल बदरि कुच पुन नरग ।

दिन दिन बाढ़य पिड़प अनग ॥२॥

से पुन भए गेल बीजरूपोर ।

अब कुच बाढ़ल सिरिफल जोर ॥४॥

माधव पेखल रमनि सधान ।

घाटहि भेटल करत सिनान ॥६॥

तनसुक सुनसन हिरदय लागि ।

जे पुरुष देखव तेकर भागि ॥८॥

उर हिल्लोलित चाँचर फेस ।

चामर भाँपल कनक-महेस ॥१०॥

भनइ बिद्यापति सुनह मुरारि ।

सुपुरुष बिलसए से बरनारि ॥१२॥

१-बदरि = पैर (फल) । नरग = नार गी । २-पिड़प = पीड़ा देता है ।

३-बीजरूपोर = बीजपूर, वहाँ (यम) नीरू, बैसे, बीज क्रमशः बढ़ते बढ़ते
पोर (वृक्ष की मुट्ठी और गोंठ) बनता है वही तरह कुच भी दूर और मोटे
हो चले । ४-सिरिफल = गीफल, बेल । १-४, एक संस्कृत श्लोक है—

वदुर्भेद प्रतिपद्यकबदरीभाव समेता क्रमात् । पुनागवृत्तिमाप्य पूगपदवीमा-
शकिल्वभियम् ॥ लब्धा तालपलोपमां च सलितामासाध भूयोधुना । चचव
कांचाकुम्भजम्भनमिमावस्या रतनौ विभ्रन ॥ ५-पेखल = देखा । सिनान
= रनान । तनसुक = एक प्रकार का महीन कपड़ा । हिल्लोलित = झूलता
हुआ । चाँचर = चचल । ६ १०-हृदय पर आँकरी से बने हुए बाण
खोल रहे हैं, मानो सोने के महादेव को चँवर से ढक दिया हो । १२-
बिलसए = विलास करे ।

(६) ६

खने खन नयन कोन अनुसरई ।

खने खन वसन धूलि तनु भरई ॥२॥

खने खन दसन-छटा छुटहास ।

खने खन अधर आगे गहु वास ॥४॥

चउँकि चलण खने खन चलु मन्द ।

मनमथ-पाठ पहिल अनुबन्ध ॥६॥

हिरदय-मुकुल हेरि हेरि थोर ।

खने आँचर दण खने होय भोर ॥८॥

वाला सैसव तारुन भेट ।

लखण न पारिअ जेठ कनेठ ॥१०॥

विद्यापति कह सुन वर कान ।

तरुनिम सैसव चिन्हइ न जान ॥१२॥

१—खने खन = घण घण । घण घण में आँखें कोण का
नुसरण करती हैं—कटाव करती हैं । २—घण घण में अस्तव्यस्त
त्र (अचल धूलि में गिरकर) शरीर को धूलि से भरते हैं ।
—दसन = दाँत । हास = हँसी । ४—मयर = दौंठ । वास = बस ।
—अनुबन्ध = भूमिका । ७—हिरदय मुकुल = हृदय की कली,
च । ८—भोर = भूल जाना । ९-१०—तारुन = तरुनाई, जवानी ।
नेठ = कनिष्ठ = छोटा । बला के शरीर में बचपन और जवानी
। भेट हुई है—मुकाबला हुआ है । इन दोनों में कौन बड़ा और
। न छोटा (कौन निर्बल और कौन सरल) है, यह जान नहीं पड़ता ।
१—कान = कान्ह, कृष्ण । १२—तरुनिम = जवानी ।

(१०)

पीन पयोधर दूबरि गता । ✓

मेरु उपजल कनक-लता ॥२॥

ए कान्हु ए कान्हु तोरि दोहाई ।

अति अपूरन देखलि साई ॥४॥

मुल मनोहर अधर रंगे ।

फूललि मधुरी कमल सगे ॥६॥

लोचन-जुगल भृग अकारे ।

मधु क मातल उडण न पारे ॥८॥

भउंह क कथा पूत्रह जनू ।

मदन जोडल फाजर धनू ॥१०॥

भन विद्यापति दूति बचने ।

एत सुनि कान्हु कपल गमने ॥१२॥

१-२, पीन = पुष्ट । पयोधर = कुच । गता = गात, शरीर । मेरु = सुमेरु पर्वत । दुबली (तवी) के शरीर में पुष्ट कुच है, मानों सोने की लता (देह) में सुमेरु पर्वत (कुच) उत्पन्न हुआ हो । ४-अपूरन = अपूर्व । साई = वसे । ५-६, अधर = ओष्ठ । रंगे = रंगे हुए, लाल । मधुरी = एक तरफ का सुन्दर लाल फूल जो भिखिया में विरोध होता है । सुन्दर मुख पर रंगीन (लाल) अधर है, मानों कमल के फूल के साथ मधुरी फूलों हो । ७-८-भृग = मीठा । मधु क मातल = मधु पीकर मस्त बना । (उम मुख कमल में) दोनों लोचन मीरे के समान हैं जो (मुख-कपल का) मधु पीकर मस्त होनेसे वह नहीं सकते ।



(१०)

पीन पयोधर दूबरि गता । ✓

मेरु उपजल कनक-लता ॥२॥

ए कान्हू ए कान्हू तोरि दोहाई ।

अति अपूरुख देखलि साई ॥४॥ !

मुख मनोहर अधर रगे ।

फूललि मधुरी कमल सगे ॥६॥

लोचन-जुगल भृग प्रकारे ।

मधु क मातल उडए न पारे ॥८॥

भउह क कथा पूछह जनू ।

मदन जोडल काजर-धनू ॥१०॥

भन विद्यापति दूति बचने ।

एन सुनि कान्हू कपल गमने ॥१२॥

१-२, पीन = पुष्ट । पयोधर = कुच । गता = गत, शरीर । मेरु = सुमेरु पर्वत । दुबली (तवी) के शरीर में पुष्ट कुच है, मानों सोने की ला (देह) में सुमेरु पर्वत (कुच) उरपन्न हुआ हो । ४-अपूरुख = अपूर्व । साई = वसे । ५-६, अधर = ओष्ठ । रगे = रंगे हुए, लाल मधुरी = एक तरह का सुन्दर लाल फूल जो भिषिका में विशेष होता है । सुंदर मुख पर रंगीन (लाल) अधर है, मानों कमल के पत्र के साथ मधुरी फूली हो । ७-८-भृग = भौटा । मधु क मातल = म पीकर मस्त बना । (वस मुख कमल में) दोनों लोचन भौटे के साथ है जो (मुख-कपल का) मधु पीकर मस्त होनेसे वह नहीं सकते ।

(१२)

माधव, की कहव सुन्दरि रूपे । ✓

कतेक जतन बिहि आनि समारल

देखल नयन सरूपे ॥२॥ मेरु

पल्लव राज चरन-जुग सोभित

गति गजराज क भाने ।

कनक-कदलि पर सिंह समारल

तापर मेरु समाने ॥३॥

मेरु उपर दुइ कमल फुलायल

नाल बिना रुचि पाई । शोभा

मनि-मय हार धार बहु सुरसरि

तओ नहि कमल सुखाई ॥४॥

(नोट—“मदुमुद एक अनूपम बाग” शीर्षक सूरदास क एक प्रसिद्ध पद्य है । साहित्य सत्सार में उसकी बड़ी प्रशंसा होती है । सूरदास से डेढ़ सौ वर्ष पहले रची गई यह कविता पढ़कर, पाठक, विद्यापति की प्रतिभा का अन्दाजा लगावें !)

१—की = क्या । २—बिहि = बिधि, मन्त्र । सरूपे = सत्य, प्रत्यक्ष ।

३—पल्लवराज = कमल । ४—कनक-कदलि = सोने के केले का थम्भ (जाँच की उपमा) । सिंह = (कटि की उपमा) । मेरु = पहाड़ (उसकी शिखरें छावें) । ५—दुइ कमल = दो कमल (दोनों कुच) । नाल = डटी । रुचि = शोभा । ६—(कुचों पर) मणि माला रूपी गंगा की धारा बह रही है, इसीसे—उसके स्रोत में—(बिना नाल के भी दोनों कुच रूपी) कमल नहीं मुरभाते ।

अधर बिम्ब सन, दसन दाहिम गिजु
 रवि ससि उगथिक पासे ।
 राहु' दूर वस नियरो न आचयि
 ते नहि करथि गरासे ॥८॥
 सारंग नयन वयन पुनि सारंग
 सारंग तसु समधाने ।
 सारंग उपर उगल दस सारंग
 केलि करथि मधुपाने ॥१०॥
 भनइ विधापति मुन वर जीवति
 एहन जगत नहि आने ।
 राजा सिवसिध रूपनरायन—
 लखिमा देइ पति भाने ॥१२॥

७—अधर = ओष्ठ । बिम्बफल । सन = ऐसा । दसन = दाँत । दाहिम =
 अन्तार । गिजु = गीज, दाता । रवि ससि उगथिक पासे = सूर्य चन्द्र एक
 साथ उगे हैं (चन्द्रमा ऐसे मुख में बाल सूर्य सा लाल सिंदूर है) । ८—
 राहु = (केस की अपमा) । नियरो = निकट । ९—सारंग = (१)
 हरिण । माग = (२) कीयल । सारंग = (३) कामदेव । सारंग तसु
 समधाने = उसके सपान में — कटाक्ष में — काम (वसता, दे । १०—सारंग =
 (४) कपल (सलाट) । दस = (यहाँ बहुवाची) । सारंग = (५)
 भीरा (केसों के लटके हुए गुच्छे) । मधुपाने = रस पीकर । (मुखरूपी)
 कमल पर भीरे (रुबी लटके लटकी) है, जो मधुपान कर केलि कर
 रहे है । एहन = ऐसा । भाने = दूसरा ।

(१३)

जुगल सैल-सिम हिमकर देखल

एक कमल दुइ जोति रे ॥ १ ॥

फुललि मयुरि फुल सिंदुर लोटाएल

पाँति बइसलि गज-मोति रे ।

आज देखल जत के पतिआएत

अपुरुष विहि निरमान रे ॥ ३ ॥

× × × ×

विपरित कनक-कदलि-तर सोभित

थल पकज के रूप रे ।

तथहु मनोहर बाजन बाजए

जनि जागे मनसिज भूप रे ॥ ५ ॥

भनइ विद्यापति पूरव पुन तह

ऐसनि भजए रसमन्त रे ।

बुभल सकल रस नृप सिवसिध

लखिमा देइ कर कन्त रे ॥ ७ ॥

१ — जुगल सैल = दो पहाड़ (कुर्चों की उपमा) । सिम = सीमा में, निकट । हिमकर = चन्द्रमा (मुख की उपमा) । कमल = (मुख की उपमा) । दुइ जोति = दो ज्योतियाँ (दो भाँखें) । २ — मयुरि फुल = एक तरह का लाल फूल । फुली हुइ मयुरी (फूल) सिंदुर पर लोटती है । और, दात बया है, गजमुक्ताओं की पक्ति वैसी है । ४ — विपरित = उलटा । कनक कदलि = (जोड़ की उपमा) । थल पकज = स्थल कमल (पैर की उपमा) । ५ — तथहु = वहाँ भी । मनसिज = कामदेव । ६ — पुन = पुनः । ऐसनि = ऐसा । रसमन्त = रसवती, सुरसिका ।

(१४)

चाँद-सार लप मुख-घटना फर
लोचन चकित चकोरे ।

श्रमिय धोय आँचर धनि पोछलि
दह दिसि भेल उँजोरे ॥ २ ॥

कामिनि कोन गढली ।
रूप सरूप मोयँ कहइत असंभव
लोचन लागि रहली ॥ ४ ॥

गुरु नितम्ब भरे चलण न पारण
माम्म-खानि खीनि निमाई ।

भागि जाइत मनसिज धरि राखलि
त्रिबलि लता अरुमाई ॥ ६ ॥

भनइ बिद्यापति अदुभुत कौतुक
ई सब बचन सरूपे ।

रूपनरायन ई रस जानथि
सिखसिख मिथिला भूपे ॥ ८ ॥

१—२, चन्द्रमा का मार भाग लेर (विधाता ने राधा के) मुख
की रचना की, (जिसे देखते ही) चकोर की भाँखें चकित हुईं । बाला ने
(अपने मुख चन्द्र को) बनल से घोंदकर जो अमृत धो दद्याया, वही
(चाँदनी के रूप में) दसो दिशाओं में प्रवर्धित हुआ । ३—कोने—किन्ने ।
गढली = गढ़ा, रचा । ४—भरे = मार से । माम्म खानि = मध्य माग में
(कटि) । खीनि = छीन, पतली । निमाई = निर्माण की । ६—त्रिबलि
लता = त्रिबली = पेट में पड़ी तीन रेखाएँ ।

(१५)

सुधामुखि के बिहि निरमिल चाला । ✓

अपरुष रूप मनोभव-मगल

त्रिभुवन विजयी माला ॥ २ ॥

सुन्दर बदन चारु अरु लोचन

काजर-रजित भेला ।

कनक-कमल माभ काल-भुजगिनी

स्त्रीयुत, खजन खेला ॥ ४ ॥

नाभि-बिवर सयँ लोम-लतावलि

भुजगि निसास-पियासा ।

नासा-खगपति-चचु भरम-भय

कुच-गिरि-सधि निवासा ॥ ६ ॥

१—के बिहि=किस विधाता ने । निरमिल=निर्माण किया ।

२—मनोभव मगल=काम्येव का शुभ स्वरूप—“मनोभव मगल कलस सद्गोदरे”—गीतगोविन्द । त्रिभुवन विजयी माला=तीनों भुवनों को पराजित करनेवाली माला के समान । ३—४ बदन=मुखड़ा । भेला=हुआ ।

माभ=मध्य में । स्त्रीयुत=सुन्दर । सुन्दर मुख में सुन्दर काजल लगी जाखें हैं, मानों सोने के कमल (मुख) में काल-सर्पिणी (भजन) कीड़ा कर रही हो । भयवा मानों काल भुजगिनी रूपी आँखें कनक कमलरूपी मुख के बीच सुन्दर (स्त्रीयुत) खजन की तरह खेल रही हों । ५—६, बिवर=दिल, छेद । सयँ=से । लोम लतावली=बाल-रूपी लताएँ, पंक्तिबद्ध बाल । भुजगि=सर्पिणी । निसास=सौंन । खगपति=गरुड । चंचु=चोंच । नामी रूपी दिल से पंक्तिबद्ध बाल रूपी सर्पिणी (नायिका

तिन बान मदन तेजल तिन भुवने
 अग्रधि रहल दओ बाने ।
 विधि बड दारुन बधए रसिकजन
 सोपल तोहर नयाने ॥ ८ ॥
 भनइ विद्यापति सुन बर जौबति
 इह रस केओ पए जाने ।
 राजा सिर्वासिघ रूपनरायन
 लखिमा देइ रमाने ॥ १० ॥

की सुगधित) साँतों की प्यास में (आगे बढ़ो), किन्तु नुकीली नाक को
 गरुड़ की चोंच समझकर, हर से कुछ स्त्री (दो) पर्वतों के बीच के
 (सजीव) मिलन स्थान में आ बसी । ७—८ तिन = तीन । तेजल =
 छोटा । अवधि = अवशिष्ट, बाकी । रहल = रहा । दओ = दो । बधए =
 बधने की, हराया करने की । तोहर = तुम्हारे । नयान = आँखों । (कामदेव
 की पंचबाण कहते हैं, सो) मदन ने अपने (पाँच बाणों में से) तीन बाण
 तो तीन लोकों में छोड़े, शेष उसके दो बाण रह गये । मझा बड़ा ही निष्ठुर
 है, (उन बचे हुए दो बाणों को) रसिकों की हराया करने के लिये तुम्हारे
 नयनों को सोप दिया । ९—इह रस केओ पए जाने = यह रस कोइ-कोई
 ही जानता है । १०—देइ—देवी । रमाने = रमण, पति ।

“हृदय सिंधु मति सीप समाना । स्वाती सारद कहहि सुबाना ।
 जो बरसे बर बारि बिचारु । होहि ‘कवित’ बितामनि चारु ॥”

(१६)

जाइत देखलि पथ नागरि सजनि गे
 आगरि सुबुधि सेयानि ।
 कनक-लता सनि सुन्दरि सजनि गे
 बिहि निरमाओल आनि ॥ २ ॥
 हस्ति-गमन जकाँ चलइत सजनि गे
 देखइत राज-कुमारि ।
 जिनकर पहनि सोहागिनि सजनि गे
 पाओल पदारथ चारि ॥ ४ ॥
 नील वसन तन घेरल सजनि गे
 सिर लेल चिकुर सँभारि ।
 तापर भमरा पिबए रस सजनि गे
 बइसल पाँखि पसारि ॥ ६ ॥
 केहरि सम कटि-गुन अछि सजनि गे
 लोचन अम्बुज धारि ।
 विद्यापति कवि गाओल सजनि गे
 गुन पाओल अवधारि ॥ ८ ॥

१—नागरि = नगर निवासिनी, सुबहुरा । आगरि = अग्रगण्या ।

२—सनि = समान । निरमाओल आनि = लाकर बनाया । ३—जकाँ =
 ऐसा । ४—जिनकर = जिसकी । पहनि = ऐसी । ५—चिकुर = केश । ६—
 तापर = उसपर । भमरा = भौरा । ७—केहरि = सिंह । अछि = (भरित)
 है । अम्बुज = कमल । धारि = धारण करो, समझो । ८—अवधारि = निश्चय

(१७)

चिकुर-निकर तम-सम
 पुनु आनन पुनिम ससी ।
 नयन-पकज के पतिआओत
 एक ठाम रहु वसी ॥ २ ॥
 आज मोयँ देखलि बारा ।
 लुध मानस, चालक मयन
 कुर की परकारा ॥ ४ ॥
 सहज सुन्दर गोर कलेबर
 पीन पयोधर सिरी ।
 फनफ लता अति बिपरित
 फरल जुगल गिरी ॥ ६ ॥
 भन बिद्यापति बिहि क घटन
 के न अदभुद जान ।
 राय सिवसिंघ रुपनरायन
 लखिमा देइ रमान ॥ ८ ॥

१—२—चिकुर निकर = केश समूह । पुनिम = पूर्णिमा का ।
 ठाम = स्थान । केश समूह भक्षकार के समान है, फिर, मुख पूर्णिमा के
 चन्द्र के समान और नयन कमल के (समान)—कौन विश्वास करेगा
 (कि ये सब परस्पर विरोधी पदार्थ) एक स्थान पर बसते हैं । मोद =
 मैने । बारा = बाला । ४—लुध = लुब्ध, अनुरक्त । चालक = संचालन
 करनेवाला । मयन = काम । की परकारा = किस प्रकार । ५—सिरी =
 श्री, शोभायुक्त । ६—फरल = पला । ७—घटन = सृष्टि ।

(१८)

सजनी, अपरुप पेखल रामा ।

कनक-लता अवलम्बन ऊअल

हरिन-हीन हिमधामा ॥ २ ॥

नयन-नलिनि दओ अजन रजइ

भौंह बिभग-विलासा ।

चकित चकोर-जोर विधि बाँधल

केवल काजर पासा ॥ ४ ॥

गिरिवर-गरुअ पयोधर-परसित

गिम गज-मोति क हारा ।

काम कम्बु भरि कनक-सम्भु परि

ढारत सुरसरि-धारा ॥ ६ ॥

पणसि पयाग जाग सत जागइ

सोइ पावण बहुभागी ।

विद्यापति कह गोकुल-नायक

गोपी जन अनुरागी ॥ ८ ॥

१—अपरुप = अपूर्व । पेखल = देखा । रामा = सुन्दरी । २—कनक लता = सोने की लता (देह) । कमल = वदय हुआ । हरिन हीन हिमधामा = निष्कलक चन्द्र (मुख) । ३—नलिनी = कमलिनी । दओ = दो । भौंह-बिभग विलासा = कुटिल कटीली भौंहें—भवों—में भाव भगी । ४—जोर = जोषा । बाँधल = बाँधा है । पास = पास में, रस्ती में । ५—६ गिरिवर गरुअ = पहाड़ के पेने भारी । पयोधर = कुच । गिम = मीठा, कण्ठ । गजमोतिक = गजमुक्ता की । कम्बु = राक्ष । कनक = सोना । पहाड़

(१६)

कनक-लता अरविन्दा ।

दमना माँझ उगल जनि चन्दा ॥ २ ॥

केहु कहे सेवल छपला ।

केहु बोले नहि नहि मेवे भूपला ॥ ४ ॥

केहु कहे भमए भमरा !

केहु बोले नहि नहि चरए चकोरा ॥ ६ ॥

ससय परल सब देखी ।

केहु बोलए ताहि जुगुति बिसेखी ॥ ८ ॥

भनइ विद्यापति गाये ।

वड पुन गुनमति पुनमत पावे ॥ १० ॥

ऐसे छत्तु ग कुचों को सरां करती हुई गले में गजमुक्तमों की माला दे, मानों,
कामदेव राख (कपठ) में भरकर, सोने के महादेव (कुचों) पर, गंगा की
धारा (माला) ढार रहा हो । ७—पयसि = पैठकर, जाकर । प्रयाग =
प्रयाग में । जाग = बस । सत = रात, सौ । (बो) प्रयाग में जाकर सैकड़ों
बस करे, वही बहुभाग्यशाली (हम रमणी को) प्राप्त करे ।

१—२, दमना = द्रोणलता । माँझ = में । उगल = उदय हुआ ।
जनि = माता । सोने की लता पर कमल खिला है या द्रोण लता पर चन्द्रमा
उगा है । ३—केहु = कोई । कहे = कहता है । सेवल = शैवाल, सेंवार ।
छपला = क्षिपा हुआ । ४—४, भूपला = डूँपा हुआ । ५—भमए भमरा
= भौंरा भ्रमण कर रहा है । ६—चरए = चर रहा है, दाता जुग रहा
है । ७—परल = पड़ गया । १०—पुन = पुनः से । पुनमत = पुनःपवत ।

(२२)

सहज प्रसन मुख दरस हृदय सुख
लोचन तरल तरङ्ग ।
अकास पताल बस सेओ कइसे भेल अस
चाँद सरोरह संग ॥२॥
बिहि निरमलि रामा दोसरि लछि समा
भल तुलाएल निरमान ॥३॥
कुच-मडल सिरि हेरि कनक-गिरि
लाजे दिगन्तर गेल ।
केओ अइसन कह सेओ न जुगुति सह
अचल सचल कइसे भेल ॥५॥
माझ-खीनि तनु भरे भाँगि जाए जनु
विधि अनुसए भेल साजि ।
नील पटोर आनि अति से सुदढ़ जानि
जतन सिरिजु रोमराजि ॥७॥
भन कवि विद्यापति काम-रमनि रति
कौतुक बुझ रसमन्त ।
सिर सिवसिंघ राउ पुरख सुकृत पाउ
लखिमा देइ रानि कन्त ॥८॥

३—लछि = लक्ष्मी । तुलाएल = तुल्य हुआ, समान हुआ । ४—
सिरि = श्री, शोभा । ५—माझ खीनि = बीच में पतली (कटि) । भरे =
बोझ से । भाँगि जाए = टूटि जाये । अनुसए = आशका । ७—पटोर =
रेशम । सिरिजु = बनाया । रामराजि = केश समूह ।

(२५)

जाइत पेसल नहायलि गोरी ।

कति सयँ रूप धनि आनलि चोरी ॥ २ ॥

केस निगारइत यह जल-धारा ।

चमर गरए जनि मोतिम हारा ॥ ४ ॥

अलकहि तीतल तैं अति सोमा ।

अलिकुल कमल बेदल मधुलोभा ॥ ६ ॥

नीर निरजन लोचन राता ।

सिंदुर मंडित जनि पंकज-पाता ॥ ८ ॥

सजल चीर रह पयोधर सीमा ।

कनकचेल जनि पडि गेल हीमा ॥ १० ॥

आओ नुकि करतहि चाहि किए देहा ।

अवहि छोडय मोहि तेजय नेहा ॥ १२ ॥

ऐसन रस नहि पाओय आरा ।

इथे लागि रोइ गरए जलधारा ॥ १४ ॥

विद्यापति कह सुनह मुरारि ।

यसन लागल भाय रूप निहारि ॥ १६ ॥

२-कति सयँ = कहाँ से । आनलि चोरी = चुरा लाई । ३-निगार

इत = गारते समय, पानी निबोड़ते समय । ४-चमर = चँवर से ।

५-अलक = फेरा । तीतल = भीगा हुआ । तैं = इससे

कुल = झर गण । बेदल = घेर लिया । ७-पानी

कारण भाँखें भजन दीन मोर साल हो गई है ।

८-पयोधर सीमा = कुचों पर ।

(२६)

नहाइ उठल तीर राइ कमलमुखि ✓
 समुख हेरल वर कान ।
 गुरुजन सग लाज धनि नत-मुखि
 कइसन हेर्य वयान ॥ २ ॥ ७
 सखि हे, अपरुव चातुरि गोरि ।
 सब जन तेजि कए अगुसरि सचरि
 आड बटन तँहि फेरि ॥ ४ ॥
 तँहि पुन मोति-हार तोरि फँकल
 कहइत हार दुटि गेल ।
 सब जन एक-एक चुनि सचरु
 स्याम-दरस धनि लेल ॥ ६ ॥
 'नयन-चकोर कान्हू-मुख ससि-वर
 कएल अमिय-रस-पान ।
 दुहु दुहु दरसन रसहु पसारल
 फचि विद्यापति भान ॥ ८ ॥

बिल्व फल । पड़ि गेल = पड़ गया । हीमा = बर्फ । ११-ओ =
 (वस्त्र) । चुकि करतदि चादि = छिपाना चाहता है । किए = क्यों
 १३-ऐसन = ऐसा । आरा = अ-पण । १४-इये = इस लिये ।

१-राइ = राधा । हेरल = देखा । कान = कृष्ण । २-नत = नीचे
 वयान = बदन, मुख । ४-अगुसरि = अगसर, आगे । सचरि = जाकर
 आइ = आया । ५-गोरि फँकल = तोड़ कर फँक दिया । दुटि गेल =
 गया । ६-लेल = लिया । ७-कएल = किया । अमिय = अमृत

श्राकृष्ण का प्रेम

(२७)

पथ-गति नयन मिलल राधा कान ।

दुहु मन मनसिज पूरल सधान ॥ २ ॥

दुहु मुख हेरइत दुहु भेल भोर ।

समय न ब्रूअए अचतुर चोर ॥ ४ ॥

विदगधि सगिनी सव रस जान ।

कुटिल नयन कएलहि समधान ॥ ६ ॥

चलल राज-पथ दुहु उरभाई ।

कह कवि सेखर दुहु चतुराई ॥ ८ ॥

१—२, पथगति = राह में जाते हुए । कान = कृष्ण । २—मन-सिज = कामदेव । पूरल = पूरा किया । सधान = बाण का संचालन । पथ में जाते हुए राधा कृष्ण दोनों आँखों से मिले—एक दूसरे को देखा । दोनों के मन में कामदेव ने अपने बाण का संचालन किया—दोनों के हृदय में काम का संचार हुआ । ३—हेरइत = देखते ही । भेल भोर = भेंट हुआ । ४—समय न ब्रूअए = अवसर नहीं समझता । ५—विदगधि—विदग्ध, शरसिका । ६—कुटिल नयन = देदी चितवन से—इशारे से । कएलहि = कर दिया । समधान = सावधान । ७—उरभाई = उलझकर ।

“चरन धरत बिता करत, चाहत न नेकहु सोर ।

दंडत है सुवरन सदा, कवि भ्यभिचारी चोर ॥”

(२८)

सजनी, भल कए पेखल न भेल ।

मेघ-माल सयँ तडित-लता जनि

। हिरदय सेल दई गेल ॥ २ ॥

आध आँचर ससि आध वदन हसि

आधहि नयन-तरङ्ग ।

आध उरज हेरि आध आँचर भरि

तवधरि दगधे अनङ्ग ॥ ४ ॥

एके तनु गोरा कनक कटोरा

अतुन काचला उपाम ।

हार हारल मन जनि वृष्णि ऐसन

फाँस पसारल काम ॥ ६ ॥

दसन मुकुता-पाँति अधर मिलायल

मृदु मृदु कहतहि भासा ।

विद्यापति कह अतए से दुख रह

हेरि हेरि न पुरल आसा ॥ ८ ॥

१-भल कए=अच्छी तरह । पेखल न भेल=देख न सका ।

२-सयँ=सग में, साथ में । तडित लता=बिजली । जनि=मानों ।

३-नयन-तरंग=कटाव । ४-उरज=कुच । तवधरि=तब से ।

दगधे=जलाता है । अनग=काम । ५-कनक कटोरा=सोने का कटोरा

(कुच) । अतनु=कामदेव । एक तो शरीर गौरवर्ण है और

छसपर से (कुच) मानों मदन (अतनु) सोने के कटोरे में कौंच

(बलपूर्वक भर) दिया गया है, ऐसा प्रतीत होता है । ६-जनि वृष्णि

ऐसन=ऐसा समझ पड़ता है मानों । ७-दसन=दाँत । अधर=

झोठ । भासा=भाषा, वचन । ८-अतए=इतना ही तो ।

(२६)

१५५५ ससन-परस खसु अम्वर रे

देखल धनि देह ।

नय जलधर-तर संचर रे

जनि विजुरी-रेह ॥ २ ॥

आज देखल धनि जाइत रे

मोहि उपजल रङ्ग ।

कनक-लता जनि संचर रे

महि निर अवलम्ब ॥ ४ ॥

ता पुन अपस्य देखल रे

कुच-जुग अरविन्द ।

विगसित नहि किहु कारन रे

सोझा मुप-चन्द ॥ ६ ॥

विद्यापति कवि गाओल रे

रस वृक्ष रसमन्त ।

देवसिंह नृप नागर रे

हासिनि देइ कन्त ॥ ८ ॥

१-ससन = शसन, पवन । परस = स्पर्श से । खसु = गिर पड़ा ।

अम्वर = काड़ा, अवल । देख = देखा । धनि = बाला । २-जलधर =

बादल । तर = तले, नीचे । जनि = मानों । रेह = रेखा । ३-कारत =

जाती हुई । रग = प्रेम । ४-संचर = जा रही है । निर अवलम्ब = बिना

अवलम्ब का । ५-सोझा = उत्तर भी । पुन = पुन । जुग = दो ।

अरविन्द = कमल । ६-विगसित = खिला हुआ । सोझा = सम्मुख ।

(३०)

अलखित हमे हेरि बिहुसलि थोर ।

जनि रयनी भेल चाँद ईजोर ॥ २ ॥

कुटिल कटाख लाट पडि गेल ।

मधुकर-डम्बर अम्बर लेल ॥ ४ ॥

काहिक सुन्दरि के ताहि जान ।

आकुल कए गेल हमर परान ॥ ६ ॥

लीला कमल भमर धरु बारि ।

चमकि चललि गोरि चकित निहारि ॥ ८ ॥

तैं भेल बेकत पयोधर सोभ ।

कनक-कमल हेरि काहि न लोभ ॥ १० ॥

आध नुकाएल आध उदास ।

कुच कुम्मे कहि गेल अप्पन आस ॥ १२ ॥

से अव अमिल निधि दए गेल सँदेस ।

किछु नहि रखलन्हि रस परिसेस ॥ १४ ॥

भनइ विद्यापति दुहु मन जागु ।

विसम कुसुम सर काहु जनु लागु ॥ १६ ॥

१-अलखित = अलक्ष्य रूप से—बिना दूसरे के देखे । हेरि = देख

कर । बिहुसलि = मुसकुराई । २-रयनी = रजनी, रात । ईजोर = उजाला ।

५-काहिक = किमकी । के = कौन । ६-वह बारि = निवारण कर—

कौतुक से भमर को कमल से निवारण कर । ८-तैं = इससे । बेकत = व्यक्त,

प्रकट । ११-१२, नुकाएल = छिपा हुआ । उदास = प्रकट । कुम्मे =

घड़ा । आधा छिपा और आधा प्रकट कुच कुम्मे (दिखाकर) वह अपनी

(३१)

अम्बर विघट्ट अकामिक कामिनि
 कर कुच माँपु सुन्दर ।
 कनकसम्भु सम अनुपम सुन्दर
 दुइ पंकज दस चन्दा ॥ २ ॥
 कत रूप कहव दुभाई ।
 मन मोर चंचल लोचन विकल भेल
 ओ नहिं अनइत जाई ॥ ४ ॥
 आउ बदन कण मधुर हास दण
 सुन्दरि रहु सिर नाई ।
 अओंधा कमल कान्ति नहिं पूरण
 हेरइत जुग बहि जाई ॥ ६ ॥
 भनइ विद्यापति सुनु घर जीवति
 पुहुची नय पैचराने ।
 राजा सिरसिध रूपनरायन
 तखिमा देइ रमाने ॥ ८ ॥

आशा कह गई (कि मिलूँगी) ११-अमिल = अमाप्य । निधि = खजाना ।

१४-परिसेस = परिशेष, बाकी । १६-विसम = विषम, कठोर । कुसुम
 सर = कमलदेव का शर ।

१ अम्बर = वस्त्र, अचल । विघट्ट = टूट गया । अकामिक =
 अकरमाव । कर = हाथ । माँपु = दक लिया । सुन्दर = सुन्दर ।
 अकस्मात् अचल टूट गया, (तब) कामिनी ने अपने दोनों हाथों
 से सुन्दर कुचों को दक लिया । २-कनक सम्भु = सोने के महादेव

गेलि कामिनि गजहु गामिनि
बिहसि पलटि निहारि ।

इन्द्रजालक कुसुम-सायक
कुहकि भेल बर नारि ॥ २ ॥

जोरि भुज जुग मोरि वेइल
ततहि बदन सुछुन्द । १/०१/

दाम-चम्पक काम पूजल
जइसे सारद चन्द ॥ ४ ॥

(कुच) । हुइ पकज = दो कमल (दोनों हाथ) । दस चदा = दस चन्द्रमा (दस अंगुलियाँ) । ३-कत = कितना । ४-अनइत = भयत्र, दूसरी जगह । ५-आइ = ओट । ६-अप्रोधा = उलटकर रखवा हुआ । जुग बहि जाई = जुग धीन जाते हैं । ७-पुइयो = पृथ्वी । नष = नवीन । पचबाने = कामदेव । ८-रमाने = रमण, पति ।

१-गेलि = गई । गजहु गामिनि = हाथी के समान मस्तानी चाल वाली । बिहसि = मुस्कराकर । निहारि = देखकर । २-इन्द्रजालक = ऐन्द्रजालिक, जादू भरा । कुसुमसायक = कामदेव । कुहुकि = मायाविनी नटी । गेलि = हुई । मानों वह ऐछ नारी क्रम ऐन्द्रजालिक की मायाविनी नटी । हो । अर्थात् उसकी हँसी ने अहमृत चमत्कार का अनुभव कराया । ३-४, मोरि = मोड़कर । वेइल = घेरा । ततहि = वहीं । बदन = मुख । दाम = रस्ती (माला) । चम्पक = चम्पे की । जइसे = जैसे । सुछुन्द = सुन्दर । दोनों हाथों को जोड़कर उनसे अपना सुन्दर मुख लपेट लिया, मानों, कामदेव ने चम्पे की माला (हाथ) से शरद चन्द (मुख) की पूजा की हो ।

- उरहि अचल भाँपि चचल
 आध पयोधर हेरु ।
 पौन परामव सरद घन जनि
 वेकत कएल सुमेर ॥ ६ ॥
 पुनहि दरमन जीव जुडाएव
 डुटत बिरह क ओर ।
 चरन जाबक हृदय पावक
 दहइ सब अंग मोर ॥ ८ ॥
 भन बिद्यापति सुनह जहुपति
 चित्त थिर नहि होय ।
 से जे रमनि परम गुनमनि
 पुनु कए मिलव तोय ॥ १० ॥

४-५-उरहि = वध, स्थल को । भाँपि = ढँककर । पयोधर = स्तन, कुच । हेरु = देखती है । पौन = पवन, वायु । परामव = हारकर । जनि = मानों । वेकत = व्यक्त, प्रकट । कएल = किया । सुमेर = पर्वत वध स्थल को चचल अचल से ढँककर भाँपे कुच को देखती है, मानों, पवन से हारकर शरद के मेघ (अचल) ने सुमेर को (वुच) प्रकट किया हो—जिस प्रकार पवन के झोंके से मेघ हट जाने पर सुमेर देल पड़ता है वसी प्रकार, । ७-जीव = प्राण । जुडाएव = शीतल होंगे । ओर = सीमा । ८-जाबक = महावर । पावक = भाग । दहइ = जलता है । उसके पैर के महावर (मेरे) हृदय में भाग (लगा रहा) है जिससे मेरे सब अंग जल रहे हैं । १०-से = वह । पुनु = पुन । मिलव = मिलेगी । तोय = तुम्हें ।

(३३)

सहजहि आनन सुन्दर रे
 भौंह सुरेखलि आँखि ।
 पकज मधु-पिबि मधुकर रे
 उड़प पसारल पाँखि ॥ २ ॥
 ततहि धाओल दुहु लोचन रे
 जतहि गेलि घर नारि ।
 आसा-लुबुधल न तेजप रे
 रूपन क पाछु भिसारि ॥ ४ ॥
 इगित नयन तरगित रे
 वाम भँओह भेल भग ।
 तखन न जानल तेसर रे
 गुपुत मनोभव रग ॥ ६ ॥

१-आनन = मुख । भौंह सुरेखलि = भौंहों द्वारा अच्छी तरह चित्रित की गई, सुन्दर बनाई गई । २-पकज = कमल (मुख) । मधु = पुष्परस । पिबि = पीकर । मधुकर = मीठा (नयन) । उड़प = उड़ने की । पसारल = पसार दिया, फैला दिया । पाँखि = पख, पर, (भौंह) । ततहि = वहाँ । धाओल = दौड़ गया । जतहि = जहाँ । गेलि = गई । ४-आसा लुबुधल = आशा में लुब्ध हुआ, चूर हुआ । आशा में चूर भिखारी जिस प्रकार रूप (सूत्र) का पीछा भी नहीं छोड़ता । ५-इगित = इशारे युक्त । तरगित = चंचल । वाम = बाईं । भँओह भेल भग = भौंह भग हुई—मूर्खों की । ६-तखन = उस समय । तेसर = तीसरा व्यक्ति । मनोभव = काम-

चन्दन चरचु पयोधर रे
 प्रिम गज मुकुताहार ।
 भसम भरल जनि सकर रे
 सिर सुरसरि जलधार ॥८॥
 घाम चरन श्रगुसारल रे
 दाहिन तेजइत लाज ।
 तरन मदन सर पुरल रे
 गति गंजुष गजराज ॥९॥
 आज जाइत पथ देखलि रे
 रूप रहल मन लागि ।
 तेहि खन सयँ गुन गौरव रे
 धैरज गेल भागि ॥१०॥

देव । ७-चरचु = चर्चित किया । पयोधर = कुच, स्तन । प्रिम = गले में । भरल = भरा हुआ । सुरसरि = गंगा । कुच चन्दन से चर्चित है, जिनपर गजमुक्ताओं की माला (भूल रही) है, मानों मरम का सेव किये हुए महादेव के सिर पर गंगा की धारा (बह रही) हो । ८- श्रगुसारल = श्रमसर किया आगे किया । दाहिन तेजइत लाज = दाहिने पैर को आगे रखते लज्जा होती है । ९- तरन = उस समय । मदन = कामदेव । गति = चाल । गंजुष = पराजित करती है । गजराज = हाथी । १०- रूप रहल मन लागि = रूप मन से लग रहा है - सौंदर्य दृश्य में बैठ गया । खन = चण । सयँ = से । गेल = गये ।

(३३)

सहजहि आनन सुन्दर रे
 भौंह सुरेखलि आंखि ।
 पकज मधु-पिवि मधुकर रे
 उडए पसारल पांखि ॥ २ ॥
 ततहि धाओल दुहु लोचन रे
 जतहि गेलि चर नारि ।
 आसा-लुबुधल न तेजए रे
 कृपन क पाछु भिखारि ॥ ४ ॥
 इगित नयन तरगित रे
 वाम भँओह भेल भग ।
 तखन न जानल तेसर रे
 गुप्त मनोभव रग ॥ ६ ॥

१-आनन = मुख । भौंह सुरेखलि = भौंहों द्वारा अच्छी तरह चित्रित की गई, सुन्दर बनाई गई । २-पकज = कमल (मुख) । मधु = पुष्परस । पिवि = पीकर । मधुकर = भौंटा (नयन) । उडए = उड़ने की । पसारल = पसार दिया, फैला दिया । पांखि = पख, पर, (भौंह) । ततहि = वहाँ । धाओल = दौड़ गया । जतहि = जहाँ । गेलि = गई । ४-आसा लुबुधल = आशा में लुब्ध हुआ, चूर हुआ । आशा में चूर भिखारी जिस प्रकार कृपण (सूखे) का पीछा भी नहीं छोड़ता । ५-इगित = इशारे युक्त । तरगित = चंचल । वाम = बाईं । भँओह भेल भग = भौंह भग हुई—मूर्खों की । ६-तखन = उस समय । तेसर = तीसरा व्यक्ति । मनोभव = काम-

चन्दन चरु पयोधर रे
 प्रिम गज मुकुताहार ।
 मसम भरल जनि सकर रे
 सिर सुरसरि जलधार ॥२॥
 वाम चरन अगुसारल रे
 दाहिन तेजइत लाज ।
 तखन मदन सर पूरल रे
 गति गंजुण गजराज ॥१०॥
 आज जाइत पथ देखलि रे
 रूप रहल मन लागि ।
 तेहि खन सयँ गुन गौरव रे
 धरज गेता भागि ॥१२॥

देव । ७-चरु = चर्चित किया । पयोधर = डूंग, शिर । प्रिम =
 गले में । भरल = मरा हुआ । सुरसरि = गंगा । डूंग वन से चर्चित
 है, जिनपर गजमुक्ताओं को भाग्य (मूल रही) है, मानों मरप का हो
 किये हुए महादेव के सिर पर गंगा की पत्ता (रह रही) हो । १-
 अगुसारल = अपसर किया, भागे दिया । दाहिन तेजइत लाज = दाहिने
 पैर को भागे रखते लज्जा होती है । १०-तखन = तब समय ।
 मदन = कामदेव । गति = जात । गंजुण = परचित्त काती है । गजराज =
 हाथी । १०-रूप रहल मन लागि = रूप मन से लग रहा है-धीरे
 धीरे में बैठ गया । खन = कब । सयँ = से । गज = गये ।

कर-जुग पिहित पयोधर-अचल
 चचल देपि चित भेला ।
 हेम कमलन जनि अरुनित चचल
 मिहिर-तरे निन्द गेला ॥ ८ ॥
 भनइ विद्यापति सुनह मधुरपति
 इह रस केह पप बाधा ।
 हास दरस रस सयहु बुझापल
 नाल कमल दुइ आधा ॥ १० ॥

गरासल = ग्रस लिया । ७-८-—पिहित = भावित, ढँपा । पयोधर =
 स्तर । अचल = विभाग, तट । हेम = सोना । जनि = मानो । अरुनित =
 लालिमा युक्त । तरे = नीचे । मिहिर = सूर्य । निन्द गेला = सो रहा ।
 दोनों हाथों से ढके हुए स्तनों के तट भाग देखकर चित्त चचल हो
 गया, मानो, सोने के कमल (दोनों कुच) लालिमा युक्त चचल
 सूर्य (लाल हथेली) के नीचे सो रहे हों । ९-१० सुनइ = सुनो ।
 मधुरपति = मधुरा पति । इह = यह । केह = कौन । हास = हँसी ।
 दरस = दर्शन । बुझापल = बूझ पड़ा, मालूम हुआ । नाल = (कमल
 को) डटी । हे मधुरापति श्रीकृष्ण, (तुम्हारे) इस रस में कौन बाधा
 देगा ? तुम्हारे पारस्परिक हँसी और दर्शन के रस से ही सबको मालूम
 हो गया कि मृणाल और कमल (तुम्हारे हाथ रूपी मृणाल और उसके
 कुच रूपी कमल) ये दोनों (एक ही पदार्थ) के दो भाग हैं—अर्थात्
 उसके कुच के लिये तुम्हारे हाथ ही उपयुक्त हैं ।

(३५)

जहाँ-जहाँ पग-जुग धरई । तहिं-तहिं सरोरुह भरई ॥२॥
जहाँ-जहाँ भलकत अग । तहिं तहिं बिजुरि तरग ॥ ४ ॥
कि हेरल अपरव गोरी । पइठल हिय मधि मोरि ॥ ६ ॥
जहाँ जहाँ नयन रिकास । तहिं-तहिं कमल प्रकास ॥ ८ ॥
जहाँ लहु हास संचार । तहिं तहिं अमिय-विकार ॥१०॥
जहाँ जहाँ कुटिल कटाख । ततहिं मदन-सर लाख ॥१२॥
हेरहत से धनि थोर । अरु तिन भुवन अगोर ॥१४॥
पुनु किए दरसन पाव । अरु मोटे इत दुख जाव ॥१६॥
विद्यापति कह जानि । तुअ गुन देख्य आनि ॥१८॥

१-२-पग जुग=दोनों पैर । धरई=धरती है, रखती है ।

तहिं=वहाँ । सरोरुह=कमल । भरई=भरते है । ३-४-भल

कत=भलपते है—चमकते है । अग-रागीर । बिजुरि-तरंग=विजली

का चञ्चल प्रकाश । ५-६-कि=क्या । हेरल=देखा । गोरी=गौर-

वदनी, सुन्दरी । पइठल=पैठ गई, घुस गई । हिय-मधि=हृदय में ।

गोरी=मेरे । ६-१०-लहु=लघु मद । हास=हँसी । अमिय=अमृत

११-१२-कुटिल=टेंडे । कटाख=कटाघ । ततहिं=वहाँ ही ।

मदन=कामदेव । सर=वाण । १३-१४-हेरहत=देखते ही । से=

वह । धनि=बाला, सुन्दरी । अगोर=प्रतीक्षा करना । १५-१६-

पुनु=पुन । किए=क्या । १६-अरु मैं इसी दुख से मरूँगा ।

१८-तुम=तुम्हारे । देख्य आनि=ला दूँगा ।

राधा का प्रेम

(३६)

ए सखि पेखलि एक अपरूप ।

सुनइत मानवि सपन-सरूप ॥ २ ॥

कमल जुगल पर चाँद क माला ।

तापर उपजल तरुन तमाला ॥ ४ ॥

तापर वेढ़लि बिजुरी-लता ।

कालिन्दी तट धीरे चलि जाता ॥ ६ ॥

साखा सिखर सुधाकर पाँति ।

ताहि नव पल्लव अश्नक भाँति ॥ ८ ॥

विमल विम्बफल जुगल बिकास ।

तापर कीर थीर करु वास ॥ १० ॥

तापर चचल खजन जोर ।

तापर साँपनि भाँपल मोर ॥ १२ ॥

ए सखि-रगिनि कहल निसान ।

हेरइत पुनि मोर हरल गिश्रान ॥ १४ ॥

कवि विद्यापति यह रस भान ।

सुपुरुष मरम तुहू भल जान ॥ १६ ॥

३—कमल-जुगल = दो पैर । चाँद क माला = नखों की पंक्ति । ४—
तरुन तमाल = काला शरीर । ५—वेढ़लि = लिपटी हुई । बिजुरी
लता = पीताम्बर । ७—साखा-सिखर = तमाल रूपी शरीर की
साखा रूपी बाहुओं के अग्र भाग में । सुधाकर पाँति = नखों की
पंक्ति । ८—नव पल्लव = हरेली । अश्नक भाँति = लाल ।

(३७)

की लागि कौतुक देखलौं सखि
निमिष लोचन आध ।
मोर मन मृग मरम वेधल
विषम यान वैआध ॥ २ ॥
गोरस विरस वासी विसेखल
छिक्हु छाडल गेह ।
मुरलि धुनि सुनि मो मन मोहल
विक्हु भेल सन्देह ॥ ४ ॥
तीर तरगिनि कदम्ब-कानन
निकट जमुना घाट ।
उलटि हेरइत उलटि परलओ
चरन चीरल काँट ॥ ६ ॥
सुकुति सुफल सुनह सुन्दरि
विद्यापति भन सार ।
कसदलन गुपाल सुन्दर
मिलल नन्दकुमार ॥ ८ ॥

१—विन्दफल = मोड़ । १०—तीर = तट । ११—मृगन मोर =
आखों का जोड़ा । निमिष = केरा । मोर = मोर-मुकुट ।

१—की लागि = किसलिये । निमिष = एक क्षण । लोचन आध =
आधी आँखों से, कनखियों से । २—मरम = हृदय का भीतरी भाग ।
विषम = कठोर । ३—विरस = रसहीन । वासी विसेखल = विरोध
वासी । छिक्हु = छींकने पर भी । ५—तरगिनी = नदी ।

(३८)

अवनत आनन कप हम रहलिहुँ

धारल लोचन-चोर ।

पिया मुख-रुचि पियप धाओल

जनि से चाँद चकोर ॥२॥

ततहु सयँ हठ हटि मो आनल

धएल चरनन राखि ।

मधुप मातल उडए न पारए

तइअओ पसारए पाँखि ॥४॥

१-२ अवनत = नीचे । आनन = मुख । धारल = निवारण किया रोक रक्खा । मुख रुचि = मुख की रोमा । पियप = पीने के लिये । धाओल = दौड़ पड़ा । जनि = मानों । से = धइ । मैंने अपने मुख को नीचे कर लिया और मनन रूपी चोरों को (उनकी ओर जाने से) रोक दिया । किन्तु प्रीतम के मुख की रोमा को पान करने के लिये वे दौड़ पड़े, जिस प्रकार चाँद की ओर चकोर दौड़ते हैं । ३ ४ ततहु = वहाँ । सयँ = से । हटि = हटाकर । मो = मैं । आनल = लाया । धएल राखि = धर रक्खा । मधुप = भौंरा । मातल = मत्त बना, पागल । उडए न पारए = उड़ नहीं सकता । तइअओ = तो भी । पसारए = पसारता है । वहाँ से—मुख की ओर से—मैं (आँखों को) हठ पूर्वक रोककर हटा लाई और अपने चरणों पर धर रक्खा—नीचे की ओर देखने लगी । (किन्तु जिस प्रकार) मधु पीकर मरत बना भौंरा उड़ नहीं सकता

माधव बोलल मधुर बानी
 से सुनि मुँड मोयँ कान ।
 ताहि श्रवसर टाम घाम भेल
 धरि धनू पंचरान ॥ ६ ॥
 तनु पसेर पसाहनि भासलि
 पुलक तइसन जागु ।
 चूनि चूनि भए काँचुअ फाटलि
 घाहु बलआ भाँगु ॥ ७ ॥
 भन प्रियापति कम्पित कर हो
 बोलल बोल न जाय ।
 राजा सिरसिंघ रुपनरायन
 साम सुन्दर काय ॥ १० ॥

सोमी पत्र पसारवा है । उसी तरह मेरी श्रोत्रे बराबर उस ओर जाने लगी । ५-मुँड=मूँद लिया । टाम=नगर । घाम=मेत्र=विषद हुआ, वैरी हुआ । पंचरान=कामदेव । ६-उसी समय, उसी जगह कामदेव धनुष धारण कर मेरा वैरी हुआ—मुझपर बाण की बौद्धार करने लगा । ७-पसेर=पसीना । पसाहनि=प्रसाधनी, सलाट पर की मज्जाक, भंगरान । भासलि=दह गया, धो गया । पुलक=रोमांच । तरमन=उसी प्रकार । ८-चूनि चूनि भए=खरबट-खरबट होकर, चिपड़े चिपड़े होकर । काँचुअ=कचुकी, खोनी । बलआ=चूरी । भाँगु=फूट गई । [प्रेमातिरेक से शरीर फूट उठा जिस कारण चाली फट गई और चूकिवाँ फूट गई ।] ९-कम्पित कर हो=हाथ काँप रहे है । बोलल बोल न जाय=बोली बोली नहीं जाती ।

कृष्ण की दूती

(४५)

धनि धनि रमनि जनम धनि तोर ।

सब जन कान्हु कान्हु करि भूष

से तुअ भाव बिभोर ॥ २ ॥

चातक चाहि तिआसल अम्बुद

चमोर चाहि रहु चन्दा ।

तर लतिका अजलमन करि

मभुमन लागल धन्दा ॥ ४ ॥

केस पसारि जरे तुहुँ राखलि

उर पर अम्बर आधा ।

१-धनि=धन । रमनि=रमणी, रमि । तोर=तुम्हारा । २-जन=आदमी । कान्हु=कृष्ण । भूष=जलने, व्याकुल होते । मे=वह । तुम=तुम्हारे । बिभोर=बेसुख । ३-४-चातक=पपीड़ा । चाहि=देखना । तिआसल=तृपित, प्यासा । अम्बुद=बादल । तब=वृक्ष । लतिका=लता । करि=कर रहा है । मभु=मेरे । लागल=लगा । धन्दा=संदेश । (वैसी विचित्रता है !) तृपित मेव आज पपीड़े की ओर देख रहा है, चन्द्रमा चमोर को देखता है और वृक्ष लतिका का अवलम्बन कर रहा है (इन विरोधी बातों को देख) मेरे मन में सहाय हो रहा है । [कवि का तापस्य यह है कि वैसी व्याकुलता आज तुममें होनी चाहिये थी, वह श्रीकृष्ण में है ।] ५-पसारि=पसारकर, खोलकर । राखलि=रखता ।

से सब सुमिरि कान्हु भेल आकुल
 कह धनि इथे कि समाधा ॥ ६ ॥
 हँसइत कय तुहु दसन देखाएलि
 करे कर जोरहि मोर ।
 अलखित दिठि कय हृदय पसारलि
 पुनु हेरि सखि कर कोर ॥ ८ ॥
 एतहु निदेस कहल तोहे सुन्दरि
 जानि तोहे करह विधान ।
 हृदय-पुतलि तुहु से सून कलेवर
 कवि विद्यापति भान ॥ १० ॥

उर = छाती, वच स्थल । अम्बर = वस्त्र, अचल । ६-से = वह । भेल-हुआ ।
 इथे = इसका । धनि = वाले । समाधा = निवारण । ७-८ दसन = दाँत ।
 करे कर जोरहि मोर = हाथ से हाथ जोड़ कर मुड़ती हुई । अलखिते =
 अलक्ष्य रूप से, बिना देखे । पुनु = पुन । हेरि = देखकर । कर कोर =
 कोर कर = कोड़ में करना-रखना, आलिंगन करना । हाथ से हाथ जोड़
 कर (अँगुलियाँ लेती हुई) कय तुमने पीछे की ओर मुड़कर, हँसती हुई,
 अपने दाँतों की छटा दिखाई, एवम् अलक्ष्य दृष्टि से कय उनके हृदय को
 प्रसारित कर, पुन उनकी ओर देखकर, सखी का आलिंगन किया । ९-
 एतहु = इतना । निदेस = इशारा । कहल = (मैंने) कहा । तोहे = तुम्हें ।
 जानि = जानकर । करह = करो । विधान = उपचार । १०-हृदय पुतलि =
 हृदय की पुतली, प्राण । से = वह (कृष्ण) । सून = शून्य । कलेवर =
 । भान = कहा है ।

(४६)

सुन सुन ए सखि कहए न होए ।

राहि राहि कए तन मन खोए ॥ २ ॥

कहइत नाम पेम भए भोर ।

पुलक कम्प तनु घरमहि नोर ॥ ४ ॥

गद गद भाखि कहए वर-कान ।

राहि दरस बिनु निकल परान ॥ ६ ॥

जब नहि हेरव तकर से मुख ।

तब जिउ-भार धरव कोन सुख ॥ ८ ॥

तुहु बिनु आन नहि इथे कोइ ।

| विसरए चाह विसर नहि होइ ॥ १० ॥

भनइ बिद्यापति नाहि बिबाद ।

पूरव तोहर सख मन साध ॥ १२ ॥

१-कहए न होए = कहा नहीं जाता । २-राहि = राधा । कर = करके, कहकर । खोए = खोना, भुला देना । ३-पेम = प्रेम । भोर = बेसुष । ४-पुलक = रोमांच । घरमहि = पसीना भी । नोर = आँसू । शरीर रोमांच होकर काँपने लगता है, पसीना होता है और आँसू प्रवाहित होने लगने हैं । ५-गदगद = रेंधे हुए कंठ से । भाखि = कहाँ । कान - कृष्ण । ६-निकसे = निकलता है । ७-तकर = उसका । से = सह । ८-परव = धरेंगा । ९-आन = दूसरा । इथे = यहाँ, तुम्हारे सिवा यहाँ दूसरा कोई नहीं — तुम्हें छोड़कर कृष्ण अन्य किसी को प्यार नहीं करते । १०-विसरए = विस्मरण होना भूल जाना । ११-बिबाद = बलह । १२-पूरव = पूरी होगी । मन साध = मन कामना ।

(४७)

कटक माझ कुसुम परगास ।

भमर विकल नहि पावण पास ॥ २ ॥

भमरा भेल घुरए सवे ठाम ।

तोहे विनु मालति नहि बिसराम ॥ ४ ॥

रसमति मालति पुनु पुनु देखि ।

पिबए चाह मधु जीव उपेसि ॥ ६ ॥

उ मधुजीवी तौंजे मधुरासि ।

साँचि धरसि मधु मने न लजासि ॥ ८ ॥

अपनेहु मने गुनि बुझ अवगाहि ।

तसु दूपन बध लागत काहि ॥ १० ॥

भनहि विद्यापति तौं पय जीव ।

अधर सुधारस जौ पय पीव ॥ १२ ॥

१-परगास = प्रकाश । २-पावण = पाना है, जा सकता है । ३-भमरा (माधव) ४-मालति (राधा) ५-जीव उपेसि-जीवन की उपेक्षा करके अर्थात् मरेंगे या जीवेंगे ? इसका कुछ भी ख्याल न करके । ६-साँचि धरसि-सचित्त करके रखता है । ७-अवगाहि = इदकर अर्थात् रस बात को अपने मन में भली भाँति सोनो समझो । ८-तौं पय जीव = तब जी सकता है । ९-जौ पय पाव = यदि वह भी सके ।

(४८) ✓

आजु हम पेखल कालिन्दी झूले ।

तुअ विनु माधव विलुठप धूले ॥ २ ॥

कत सत रमनि मनहि नहि आने ।

किप विप दाह-समय जल दाने ॥ ४ ॥

मदन भुजंगम दसल कान ।

विनहि अमिय-रस कि करव आन ॥ ६ ॥

कुलवति धरम काँच समतुल ।

मदन दलाल भेल अनुकूल ॥ ८ ॥

आनल बेचि नीलमनि हार ।

से तुहु पहिरवि करि अभिसार ॥ १० ॥

नील निचोल भाँपवि निज देह ।

जनि घन भीतर दामिनि रेह ॥ १२ ॥

चौदिक चतुर सखी चलु सग ।

आजु निकुज करह रस-रग ॥ १४ ॥

१-पेखल = देखा । कालिन्दी = यमुना । झूले = किनारे में । २-विलुठप = लोट रहे हैं । ३-कत = कितने । सत = सौ । आने = लाता है । ४-विप की ज्वाला के समय जल के दान से क्या—विप की ज्वाला कहीं पानी से शांत होती है ? ५-भुजंगम = सर्प । दसल = काया । कान = कृष्ण । ६-अमिय = अमृत । कि करव = क्या करेगा । आन = अन्ध । = समतुल = समान । १०-से = वह । अभिसार = गुप्त मिलन, प्रियतम के पास गमन । ११-निचोल = चोरी । १२ घन = मेघ । दामिनि = बिगली । रेह-रेखा । चौदिक = चारो ओर ।

(४६)

आज पेखल नन्द-किसोर ।
 केलि विलास सबहु अरु तेजल
 अह निसि रहत बिभोर ॥ २ ॥
 , जब धरि चकित विलोकि विपिन-तट
 पलटि आओलि मुख मोरि ।
 तबधरि मदन मोहन तरु कानन
 लुटइ धीरज पुनि छोरि ॥ ४ ॥
 पुनु फिरि सोइ नयन जदि हेरवि
 पाओव चेतन नाह ।
 भुजगिनि दसि पुनहि जदि दसए
 तबहि समय विष जाह ॥ ६ ॥
 अरु सुभ खन धनि मनिमय भूपन
 भूषित तनु अनुपाम ।
 अभिसरु घटलभ हृदय बिराजहु
 जुनि मनि काचन-दाम ॥ ८ ॥

२-अह निसि=दिन-रात । बिभोरि=बेसुष । २-जब धरि=जबसे ।
 ४-तब धरि=तबसे । लुटइ=लोटे है । ४-पाओव चेतन=चेतना
 पायेंगे, मुख में आयेंगे । नाह=नाथ (कृष्ण) । ६-भुजगिनी=साँपिनी ।
 =काटकर । तबहि समय=उसी समय—उसी हालत में । जाह=
 है । ८-अभिसरु=अभिसार करो—गुप्त मिलन स्थान में जा गिलो ।
 प्यारा, विद्यापति का उपनाम । जुनि मनि काचन-दाम=जैसे सोने
 में मणियों की माला पिरोई गई हो ।

(५०)

प्रथम सिरिफल गरय गमओलह

जौं गुन गाहक आवे ।

गेल जीवन पुनु पलटि न आवए

केवल रह पछतावे ॥ २ ॥

सुन्दरि, घचन करह समधाने ।

तोह सनि नारि दिघस दस अछलिहुं -

ऐसन उपजु मोहि भाने ॥ ४ ॥

जीवन रूप तावेधरि छाजत

जावे मदन अधिकारी ।

दिन दस गेले सखि सेहओ परापत

सकल जगत परचारी ॥ ६ ॥

विद्यापति कह जुवति लाख लह

पडल पयोधर-तूले ।

दिन दिन आगे सखि ऐसनि होपवह

घोसिनि घोर क मूले ॥ ८ ॥

१- सिरिफल = शोफल, बेन (कुच) । गमओलह = गँवा दिया, खो

दिया । २-जौं = जबनक । आवे = आता है । ३-करह समधाने = समाधान

करो, विचार करो । ४-सनि = समान । अछलिहुं = मैं भी थी । भाने =

अनुमान । ५-छाजत = शोभता है । ६-गेले = जाने पर । सेहओ = वह

भी । परापत = भागेगा । ७-पयोधर-तूले = कुच तराजू पर है । ८-आगे

सखि = भरी सखि । होपवह = हो जाओगी । घोसिनि = ग्यालिन की । घोर क-

मूला । मूले = मुख्य की ।

(५१)

ए घनि कमलिनि सुन हित वानि ।

प्रेम करवि जब सुपुरुष जानि ॥ २ ॥

सुजन क प्रेम हेम समतूल ।

दहइत कनक दिगुन होय मूल ॥ ४ ॥

दूटइत नहि टुट प्रेम अदभूत ।

जइसन बढ़ए मृणाल, क सूत ॥ ६ ॥

सबहु मर्तगज मोति नहि मानि ।

सकल कठ नहि कोइल वानि ॥ ८ ॥

सकल समय नहि रीतु वसन्त ।

सकल पुरुष नारि नहि गुनैवन्त ॥ १० ॥

भनइ विद्यापति सुन बर नारि ।

प्रेम क रीत अब बुझहु विचारि ॥ १२ ॥

१-घनि = घाला । कमलिनी = पद्मिनी जाति की स्त्री । वानि = वाणी
बात । २-जब प्रेम करो तो सुपात्र ही जान कर । ३-सुजन क = सज्जन
का । हेम = सोना । समतूल = समान । ४-दहइत = जलने पर । कनक =
सोना । दिगुन = दो गुणा । मूल = मूल्य । ६ - जइसन = जिस प्रकार ।
बढ़ए = बढ़ता है । मृणाल क = मृणाल का, कमल की डटी का । सूत =
सूत्र, धागा, भीतर का रेशा । ७-मर्तगज = हाथी । मोति = मुक्ता ।
८-कोइल वानि = कोयल की काकरी । १०-सभी स्त्रियाँ और पुरुष गुणवन्त
ही नहीं होते । 'घाव' की एक कहावत इसी भाव की है—

सदा न वाणी मुलहुल बोलै, सदा न वाग बहारा ।

सदा न ज्वानी रहती पारो, सदा न सोइवत पारा ॥

राधा की दूती

(५२)

सुख मनमोहन कि कह्य तोय ।

मुगुधिनि रमनी तुअ लागि रोय ॥२॥

निसि दिन जागि जपय तुअ नाम ।

थर थर काँपि पडय सोइ ठाम ॥४॥

जामिनि आध अधिक जय होइ ।

विगलित लाज उठय तव रोइ ॥६॥

सखिगन जत परबोधय जाय ।

तापिनि ताप ततहि तत ताय ॥८॥

कह फनि सेखर ताक उपाय ।

रचइत तबहि रयनि बहि जाय ॥१०॥

१-कि=क्या । कहर=कहूँ । तोय=तुझे । २-मुगुधिनि=मुग्धा, प्रेमासक्ता । रमनी=रमणी, स्त्री । तुअलागि=तेरे लिये । रोय=रोती है । ४-पडय=(गिर) पड़ती है । ठाम=जगह । ५-ज्वरान आधी से अधिक बीत जाती है । ६-विगलित लाज=लान से रदित होकर । उठय तव रोइ=तब रो उठती है । ७-जत=जितनी । परबोधय=प्रबोध करती है, समझाती है । ८-तापिनि=ज्वाला से जली हुई । ताप=ज्वाला से । ततहि तत=उतना ही-उतना । ताय=जलती है । (वह बिना ज्वाला से) जली हुई बाला ज्वाला से और भी अधिकाधिक जलती है । ९-ताक=उसका । १०-बहि जाय=बह जाती है, बीत जाती है ।

(५३) -

माधव ! कि कह्य स्रे विपरीत ।
तनु भेल जरजर भामिनी अन्तर
चित यादल तसु प्रीत ॥ २ ॥
निरस कमलमुख कर अवलम्बइ
सखि माझ बइसलि गोइ ।
नयन क नीर थीर नहि बाँधइ
। पक कयल महि रोइ ॥ ४ ॥
मरम क बोल, वयन नहि चोलए
तनु भेल कुहु-ससि खीना ।
। श्रवनि उपर धनि उठए न पारइ
धएलि भुजा धरि दीना ॥ ६ ॥
तपत कनक जनि काजर भेल तनु
श्रति भेल विरह हुतासे ।
कवि विद्यापति मन अभिलासत
कान्हु चलह तसु पासे ॥ ८ ॥

२-जरजर = जजर, अत्यंत क्षीण । भामिनी = स्त्री । अन्तर = भीतर ।

बादल = बढ़ गया । तसु = वसी प्रकार । ३-निरस = रसहीन, उदास ।

कर = हाथ । अवलम्बइ = अवलम्बन करके । माझ = मध्य । बइसलि =

बैठी । थीर = छिपाकर । ४-नयन क नीर = आँसू । थीर = स्थिरता ।

५-मरम क बोल = मर्म कथा हृदय के भाव । कुहु ससि = अमावास्या का

चन्द्र । ६-उठए न पारइ = उठ नहीं सकती । पृथ्वी पर बह बाला स्वयं उठ

नहीं सकती, (सखियों) उस दीना को भुजा पकड़कर (धरती पर से)

(५४)

लोटर धरनि, धरनि धरि सोइ ।

खने खन साँस खने खन रोइ ॥ २ ॥

खने खन मुरझइ कठ परान ।

इधि पर की गति दैव से जान ॥ ४ ॥

हे हरि पेखलों से घर नारि ।

न जीवइ बिनु कर परस तोहारि ॥ ६ ॥

केओ केओ जपय वेद दिठि जानि ।

केओ नव ग्रह पुज जोतिअ आनि ॥ ८ ॥

केओ केओ कर धरि धातु बिचारि ।

विरह विखिन कोइ लखण न पारि ॥ १० ॥

उगती है । ७—तपत = तप्त, तपाये हुए । कनक = सोना । जनि = समान । हुतासे = अग्नि । ८—तप्त = उसके ।

१-लोटर = लोटती है । धरनि = पृथ्वी । सोइ = वह । २-खने-खन = क्षण क्षण में । साँस = उमास लेती है । रोइ = रोती है । ३-क्षण क्षण में वह मूर्च्छित हो जाती है और प्राण कण्ठ तक चले आते हैं (मृत प्राण हो जाती है) । ४-इधि = इसके । पर = बाद । की = क्या । से = वह । ५-पेखलों = (मैंने) देखा । ६-जीवइ = जीवेगी । करपरस = हाथ का स्पर्श । ७-केओ = कोई । दिठि = नजर लगाना । ८-पुज = पूजना है । जोतिअ = ज्योतिषी । आनि = ले आकर, सुनाकर । ९-धातु = नाश । १०-विरह विखिन = विरह विधीन, विरह में क्षीण हुई । लखण न पारि = लख नहीं सकता ।

(५५)

अबिरल नयन गरप जल-धार ।

। नव-जल बिंदु सहष के पार ॥ २ ॥

कि कहब सजनी तकर कहिनी ।

कहए न पारिअ देगलि जहिनी ॥ ४ ॥

। कुच-जुग ऊपर आनन हेरु ।

। चाँद राहु डर चढ़ल सुमेरु ॥ ६ ॥

अनिल अनल बम मलयज वीख ।

जेहु छल सीतल सेहु भेल तीख ॥ ८ ॥

चाँद सतायए सविता हु जीनि ।

नहि जीवन एकमत भेल तीनि ॥ १० ॥

किछु उपचार मान नहि आनु ।

ताहि वैआधि भेषज पँचवान ॥ १२ ॥

तुअ दरसन बिनु तिलओ न जीव ।

जइओ कलामति पीउख पीव ॥ १४ ॥

१-अबिरल = लगातार । गरप - गिरता है । २-नव जल बिन्दु =

नवीन जल के कण, भाँतू । ३-तकर = उसका । कहिनी = कहानी ।

४-जहिनी = जैसी । ५-आनन = मुख । ६-अनिल = वायु । अनल =

आग । बम = बमन करता है, उगलता है । मलयज = चढ़न । वीख =

विष । ८-छल = था । तीख = तीव्र । ९-सविताहु = सूर्य । जीनि =

जैसे, जीतकर, बढ़कर । १०-एकमत भेल तीनि = तीनों (वायु, चन्द्र,

चन्द्र) एकमत हुए । ११-उपचार = औषधादि । १२ भेषज = दवा ।

पँचवान = कामदेव । १३-तिलओ = तिलमात्र भी, एक छण भी ।

(५६)

लाये तरुश्रर कोटिहि लता

जुगति कत न लेख ।

सब फूलमधु मधुर नही

फूलहु फूल प्रिसेख ॥२॥

जे फूल भमर निन्दहु सुमर

वासि न विसरए पार ।

जाहि मधुकर उड़ि उड़ि पड

सेहे ससार क सार ॥४॥

सुन्दरि, श्रवहु वचन सुन ।

सबे परिहरि तोहि इछ हरि

आपु सराहहि पुन ॥६॥

जीव = जीवेगी । १४-पीउख = पीपूष = मयूत ।

१-१-तरुश्रर = तरुश्रर, वृक्षश्रेष्ठ । कत = कितना । न लेख = सरसा नहीं, मसरय । मधु = पुष्परस । मधुर = मीठा । लाखों पेड़ हैं, करोड़ों लताएँ हैं, (यों ही) कितनी युवतियाँ हैं (जिनकी) गिनती नहीं । किन्तु सभी फूलों का रस मीठा नहीं होता—फूलों में भी कोई विशेष फल होते हैं । जे = जिस । भमर = भौरा । निन्दहु = निन्द में भी । सुमर = स्मरण करता है । वासि = गध । न विसरए पार = नहीं विसरण कर सकता, नहीं भूल सकता । ४-मधुकर = भौरा । पड = पड़ना, बैठना । से हे = वही । विसपर भौरा उड़-उड़ कर बैठे, वही (फूल) ससार का सार है—ससार में खिलना वसी का साथक है ।

तोहरे चिन्ता तोहरे कथा
 सेजहु तोहरे चाब ।
 सपनहु हरि पुनु पुनु कए
 लए उठए तोर नाब ॥८॥
 आलिंगन दए पाछु निहारए
 तोहि बिनु सुन कोर ।
 अकथ कथा आपु अवथा
 नयन तेजए नोर ॥१०॥
 राहि राही जाहि मुँह सुनि
 ततहि अप्पए कान ।
 सिरि सिब सिघ इ रस जानए
 कवि विद्यापति भान ॥१२॥

५- सुन = सुनो । ६- सवे = सबको । परिहरि = छोड़कर । इछ =
 इच्छा कारता है । आप = अपना । सराइहि = सराहना करो । पुन =
 पुनः । ७- तोहरे = तुम्हारा । सेजहु = शय्या पर भी । चाब = चादना ।
 ८- सपनहु = सपने में भी । पुन पुन कए = बारम्बार । एउ उठए = ले
 उठते हैं । नाब = नाम । दए = देते हैं । पाछु = पीछे । निहारए =
 देखते हैं । सुन = श्रव्य, खाली । कोर = गोद । १०- अकथ = न कहने
 योग्य । आपु = अपनी । अवथा = अवस्था । नोर = नाँव । ११-
 राहि = राधा । अप्पए = गपेंग करने हैं । १२- भान = कहते हैं ।

“A poet is a painter of soul ”

(५७)

✓ आसायें मन्दिर निसि गमावण
सुख न सूत सँयान ।

जखन जतण जाहि निहारण
ताहि ताहि तोहि भान् ॥ २ ॥

मालति ! सफल जीवन तोर ।
तोर बिरहे भुअन भम्मण
भेल मधुकर भोर ॥ ४ ॥

जातकि केतकि कत न अछण
सवहि रस समान ।

सपनहू नहि ताहि निहारण
मधू कि करत पान ॥ ६ ॥

वन उपवन कुज कुटीरहि
सवहि तोहि निरूप ।

१-आसायें = आशा में । गमावण = बिताया है । सूत = सोता है ।

सँयान = शयन पर विद्यावन पर । २-जखन = जब । जतण = जहाँ ।

जाहि = जिसे । निहारण = देखता है । जब जहाँ जिसे देखता है,

उसे उसे ही तुम्हें मान करता है—अवश्या सभी को तुम्हें ही समझता

है । ४-भुअन = भुवन, समार । भम्मण = भ्रमण करते । मधुकर =

मोरा । भोर = बिमोर व्याकुल, या प्रातः काल । ५-जातकि = पारिजात ।

कत = कितना । अ-ए = हैं । ६-स्वप्न में भी उन्हें देखता वह नहीं,

किर उनका मधु क्यों पान करने चला । ७-सवहि = सभी स्थानों में ।

निरूप = निरूपण करता है ।

तोहरे चिन्ता तोहरे कथा
 सेजहु तोहरे चाव ।
 सपनहु हरि पुनु पुनु कए
 लए उठए तोर नाव ॥८॥
 आलिगन दए पाछु निहारए
 तोहि विनु सुन कोर ।
 अकथ कथा आपु अवथा
 नयन तेजए नोर ॥१०॥
 राहि राही जाहि मुँह सुनि
 ततहि अण्ण कान ।
 सिरि सिध सिध ह रस जानए
 कवि विद्यापति भान ॥१२॥

५- सुन = सुनो । ६- सवे = सबको । परिहरि = छोड़कर । इछ =
 इच्छा करता है । आप = अपना । सराहहि = सराहना करो । पुन =
 पुनः । ७- तोहरे = तुम्हारा । सेजहु = शय्या पर भी । चाव = चाहना ।
 ८- सपनहु = सपने में भी । पुन पुन कए = बारम्बार । लए उठए = ले
 उठने है । नाव = नाम । दए = देते हैं । पाछु = पीछे । निहारए =
 देखते हैं । सुन = शून्य, खाली । कोर = गोद । १०- अकथ = न कहने
 योग्य । आपु = अपनी । अवथा = अवस्था । नोर = नाँसू । ११-
 राहि = राधा । अण्ण = अर्पण करते हैं । १२- भान = कहते हैं ।

“A poet is a painter of soul ”

(५८)

कर धरु कर मोदे पारे
देव म अषय हारे, कन्हैया ॥ २ ॥
सपि सच तेजि चलि गली ।
न जानू कान पय भेली, कन्हैया ॥ ४ ॥
हम न जापय तुअ पासे ।
जापय औघट घाटे, कन्हैया ॥ ६ ॥
विद्यापति पदो भाने ।
गूजरि भजु भगवाने, कन्हैया ॥ ८ ॥

१—कर=हाथ । धर=धार । कर=करो पारे=उस पार
२—देव=देवी । मे=मै । हारे=माला । ३—तेजि=छोड़कर ।
चलि गेली=चली गई । ४—न जानू=न मानू । कान पय भेली=
किम सारन गई । ५—जापय=जाऊंगी । तुअ=तेरे । पासे=निबट ।
६—औघट घाटे=जिस घाट से कोई आता जाता न हो । ७—पदो=पद ।
भाने=कहते हैं । ८—गूजरि=बाला ।

इस पद में प्रेमिका क हृदय का खासा चित्र विद्यमान है । जहाँ एक
ओर कहती है—‘हम न जापय तुअ पासे’, तो दूसरी ओर मुह से निकलता
है—‘जापय औघट घाटे’—याने आ रही हूँ निश्चित स्थान में ही—अथावा
चलो, उस एका त स्थान में कलि-प्रीति करें । यों ही इसके अन्य पदों में
भी अपूर्व बारीक भाव विद्यमान है । रसिक पाठक गौर करें ।

Poetry has something devine in it —Bacon.

(५८)

✓ कर धरु कर मोहे पारे
देव में अपरु हारे, कन्हैया ॥ २ ॥
सखि सब तेजि चलि गेली ।
न जानू कोन पथ भेली, कन्हैया ॥ ४ ॥
हम न जाएव तुअ पासे ।
जाएव औघट घाटे, कन्हैया ॥ ६ ॥
विद्यापति एहो भाने ।
गूजरि भजु भगवाने, कन्हैया ॥ ८ ॥

१—कर=हाथ । धर=धरकर । कर=करो । पारे=उस पार
२—देव=दुँगी । में=मैं । हारे=माला । ३—तेजि=छोड़कर ।
चलि गेली=चली गई । ४—न जानू=न मालूम । कोन पथ भेली=
किम् रास्ते गई । ५—जाएव=जाऊँगी । तुअ=तेरे । पासे=निकट ।
६—औघट घाटे=जिस घाट से कोई आता जाता न हो । ७—एहो=यह ।
भाने=कहते हैं । ८—गूजरि=बाला ।

इस पद में प्रेमिका के हृदय का खासा चित्र विद्यमान है । जहाँ एक
ओर कहती है—‘हम न जाएव तुअ पासे’, तो दूसरी ओर मुँह से निकलता
है—‘जाएव औघट घाटे’—याने जा रही हूँ निश्चिन्त स्थान में ही—अर्थात्
चलो, उस एका त स्थान में केलि मीठा करें । यों ही इसके अन्य पदों में
भी अपूर्व बारीक भाव विद्यमान है । रसिक पाठक गौर करें ।

Poetry has something devine in it —Bacon

(५६)

कुज-भवन सयँ निकसलि रे
रोकल गिरिधारी ।

एकहि नगर बस माधव हे
जनि कर बटमारी ॥ २ ॥

छाडु कन्हैया मोर आँचर रे
फाटत नव-सारी ।

अपजस होएत जगत भरि हे
जनि करिअ उधारी ॥ ४ ॥

संग क सखि अगुआइलि रे
हम एकसरि नारी ।

दामिनि आप तुलाएल हे
एक रात आँधारी ॥ ६ ॥

भनहि विद्यापति गाओल रे
सुनु गुनमति नारी ।

हरि क संग किछु डर नहि हे
तौह परम गमारी ॥ ८ ॥

१—सयँ = से । निकसलि = निकली । रोकल = रोक दिया । २—
बस = रहते हो । जनि = मत । बटमारी = बकौती, राइजनी । ३—
नव सारी = नवीन साड़ी । उधारि = जग्न । ४—संग क = साथ की ।
अगुआइलि = आगे गई । एकसरि = अकेली । ६—दामिनि आप तुला
एल = विजली भी चमकते लगी — मेघ छा गया । आँधारी = भीषेरी, कृष्ण-
पक्ष की । ८—हरि क = श्रीकृष्ण के । गमारी = गँवारी, बेवकूफ ।

(६०)

तुम्ह गुन गौरव सीन सोभाय ।

तुनि कए नदतिहुँ तोहरि माय ॥२॥

तउ न पमिअ कान्हू पार मोहि पार ।

मय महँ नद धिक पर-उपवास ॥३॥

अद्विज सनि मय साथ दमार ।

मे मय मेनि निवहि विधि पार ॥४॥

मम मेनि कान्हू तोहरोअ आन ।

ज ओगतिअ, ता न होइअ उदास ॥५॥

मल मय जानि पमिअ परिनाम ।

जस अपजरा दुर रान प टाम ॥६॥

तम अपजरा कन कदम अनक ।

आइति पदमे नृमिअ विधुका ॥७॥

तोहँ पर नागर हम पर सारि ।

काँप हृदय तुम्ह प्रहृति विचारि ॥८॥

मनह विद्यापति माथ ।

राजा सिवसिंघ रूपनरायण द रान मयजत ने पाये ॥९॥

१—गुणवत् = गुनकर । २—मय महँ = मयने । विधि = ३ ।

४—मेनि = मेरी । निवहि विधि = मयनी विधि । ५—ने = जो तुम्ह ।

मेनिविज = मगीकार करना । ६—तम = तुम्ह । ७—मयजत = मयजत ।

होना, मुकरना । ८—काँप = कान्पना । ९—मयजत = मयजत ।

पर ही, अवसर आने पर ही । १०—विधि विचार = विधान की बात ।

११—पर नागर = मय पर । १२—प्रहृति = प्रहृति ।

(६१)

नाव डोलाव अहीरे
जिवइत न पाओव तीरे
खर नीरे लो ।

खेवा न लेअए मोले
हँसि हँसि की दहु बोले
जिव डोले लो ॥ २ ॥

किए बिके ऐलिहु आपे
वेढ़लिहु मोहि बड सापे
मोरे पापे लो ।

करितहुँ पर-उपहासे
परिलिहुँ तन्हि बिधि-फाँसे
नहि आसे लो ॥ ४ ॥

न ब्रूमसि अब्रूम गोआरी
भजि रहु देव मुरारी
नहि गारी लो ।

कवि विद्यापति भाने
नृप सियसिंघ रस जाने
नव कान्हे लो ॥ ६ ॥

१-जिवइत = धीपी दुई । खर नीरे = तीक्ष्ण धारा । २-मोले =
गूह्य में, रुपये पैसा में । की दहु = न जाने क्या ? ३-किए = क्यों ।
ऐलिहु = मैं आई । वेढ़लिहु = भा घेरा । ४-तन्हि = उसी से । ५-
गोआरी = ग्वालिन । गारी = गाली । ६-नव = नवीन, युवक ।

राधा को शिक्षा

(६२)

प्रथमहि अलक तिलक लेव साजि ।

चचल लोचन काजर आँजि ॥ २ ॥

जापव घसन आँग लेव गोप ।

दूरहि रहव तें अरथित होप ॥ ४ ॥

मोरि धोलव सखि रहव लजाप ।

कुटिल नयन देव मदन जगाप ॥ ६ ॥

भाँपव कुच दरसाओव आध ।

एन खन सुद्ध करव निवि-बाँध ॥ ८ ॥

मान करप किछु दरसव भाव ।

रस राखन तें पुनु पुनु आव ॥ १० ॥

हम कि सिखाओवि अओ रस रग ।

अपनहि गुरु भए कहत अनग ॥ १२ ॥

भनइ विद्यापति इ रस गाव ।

नागरि कामिनि भाव बुझाव ॥ १४ ॥

१-अलक = केश । तिलक = टीका, बँदी । लेव = लेना । २-आँजि = लगा देना । ३-घसन = कण्ठा । आँग = अंग । लेव गोप = छिपा लेना । ४-तें = इसने । अरथित = अर्थिन नाहक । ५-मुख मोड़कर बातें करना और बार बार लज्जित होना । ६-कुटिल = टेढ़े । भाँपव = ढँकना । निवि-बाँध = नीची का बन्धन । ८-मान करने के कुछ भाव प्रकट करना । ११ अओ = और । १२-अनग = कामदेव । १४-नागरि कामिनि = मुचतुरा स्त्री ।

(६३)

प्रथमहि सुन्दरि कुटिल कटाख ।

जिय जोखे नागर दे दस लाख ॥ २ ॥

केओ दे हास सुधा सम नीक ।

जइसन परहोंक तइसन बीक ॥ ४ ॥

सुनु सुन्दरि नव मदन-पसार ।

जनि गोपह आओव बनिजार ॥ ६ ॥

रोस दरस रस राखव गोप ।

धपले रतन अधिक मूल होप ॥

भिलहि न हृदय बुझाओव नाह ।

आरति गाहक महंग बेसाह ॥ १० ॥

भनइ विद्यापति सुनहु सयानि ।

सुहित वचन राखव हिय आनि ॥ १२ ॥

१-२ जोखे = तौलकर । पहले, हे सुन्दरि, कुटिल कटाख करना जिसके (मुख्य रूप में) नागर दस लाख प्राण तौलकर देगा । ३—केओ = कोई । हास = हँसी । नीक = अच्छा । ४—परहोंक = बोझनी । बीक = बिक्री होती है । ५—मदन पसार = कामदेव की दुकान । ६—गोपह = छिपाओ । बनिजार = व्यापारी । ७—८ रोप मकटकर प्रेम छिपाकर रखना, क्योंकि धरे हुए रत्न की कीमत अधिक होती है । ९—भलहि = अच्छी तरह । १०—आरति = आर्चन, आग्रहपूर्ण । महंग = महंगा । बेसाह = खरीद करता है । १२—सुहित = सुहृद्, मित्र । हिय = हृदय ।

(६४)

सुख सुख प सखि वचन विसेस ।

आजु हम देव तोहे उपदेस ॥२॥

पहिलहि बैठवि सयनक-सीम ।

हेरइत पिया मुख मोडवि गीम ॥३॥

परसइत दुहु कर वारवि पानि ।

मौन रहवि पहु करइत वानि ॥६॥

जब हम सोंपव करे कर आपि ।

साधस धरवि उलटि मोहे काँपि ॥८॥

विद्यापति कत इह रस ठाठ ।

भए गुरु काम सिखाओव पाठ ॥१०॥

३—सयनक सीम = शय्या की एक ओर । ४—गीम = गीवा, गार-
दन । जब प्रीतम मुख देखने लगे तो अपनी गारदन (दूसरी ओर) मोड़
लेना । ५—परसइत = स्पर्श करते । कर = हाथ । वारवि = वारण
करना, मना करना । पानि = हाथ । जब वे अग स्पर्श करने लगे तो
दोनों हाथों से उनके हाथ को रोकना । ६—पहु = प्रभु, प्रीतम । करइत
पानि = बाँधतीत करते समय । ७—८—करे = हाथ में । कर = हाथ ।
आपि = अर्पण कर । साधस = समय । जब मैं उनके हाथ में तुम्हारा हाथ
अर्पण कर तुम्हें सौंपूँगी, तो तुम सभ्रम उलटकर काँपते हुए मुझे पकड़ना ।
९—रस ठाठ = रस की रीति । १०—भए = होकर ।

“रसारमक वाक्य काव्यम्” — साहित्यदर्पण

(६५)

परिहर, ए सखी, तोहे परनाम ।

हम नह जाणव से पिआ-ठाम ॥२॥

यचन चातुरि हम किछु नहि जान ।

इगित न वूझिण न जानिण मान ॥४॥

सहचरि मिली बनावण भेस ।

बांधण न जानिण अप्पन केस ॥६॥

कभु नहि सुनिण सुरत क बात ।

कइसे मिलव हम माधव साथ ॥८॥

से घर नागर रसिक सुजान ।

हम अवला अति अलप गेश्रान ॥१०॥

विद्यापति कह कि बोलव तोए ।

आजुक मीलल समुचित होए ॥१२॥

१—ए सखि, (इन बातों को) छोड़ो मैं तुम्हें प्रणाम करती हूँ ।

२—ठाम=स्थान । ४—इगित=इशारा । न मैं इशारा समझती हूँ ।

और न मान करना जानती हूँ । ५—सहचरि=सखियों । बनावण

भेस=भेष बनाती है—मेरा शृंगार कर देती है । ६—अप्पन=अपना ।

७—सुरत क बात=काम प्रीति की बातें । ८—कइसे=किस प्रकार ।

९—नागर=चतुर । १०—अलप=अल्प, थोड़ा । ११—तोए=तुम्हें ।

१२—आजुक=आज का । मीलल=मिलना ।

रोर दर भस्म है बही 'हसरत',

धुनते ही दिल में जो उठर जाये ।

(६६)

काहे डरसि सखि चलु हम सग ।

माधव नहिं परसव तुअ अग ॥ २ ॥

इह रजनी फुल-कानन माभ ।

के एक फिरत साजि बहु साज ॥ ४ ॥

कुसुम क धोर धनुष धरि पानि ।

मारत सर वाला जन जानि ॥ ६ ॥

अतए चलह सखि भीतर कुज ।

जहाँ रह हरी महाबल पुज ॥ ८ ॥

एत कहि आनल धनि हरि पास ।

पूरल बल्लभ सुर अमिलास ॥ १० ॥

- १—काहे = किसलिये । डरसि = डरती है । २—परसव = स्पर्श करेंगे । ३-६—रजनी = रात । फुल कानन = पुष्प-वन । माभ = मैं । के = कौन । एक = अकेले । कुसुम क = फूलों का । धनुष = धनुष । पानि = हाथ । इस रात में, पुष्प वन में यों नाना प्रकार-रङ्गार करके कौन अकेली घूमती है ? (चरी, क्या तुम्हें मालूम नहीं कि) फूलों का कठोर धनुष हाथ में धरकर (कामदेव रूपी तीर-राज) बासा कियों को खोज खोजकर बाण मारता है । ७—अतए = अतएव, इसलिये । ८—हरी = श्रीकृष्ण । महाबलपुज = बड़े बलशाली । 'महाबल पुज' कहकर सखी प्रिय देती है कि श्रीकृष्ण तुम्हें काम के बाण की चोट से बचावेंगे । ९—एत = इतना । अनल = लार । धनि = बाला । पास = निकट । १०—पूरल = पूरा हुआ । बल्लभ = विद्यापति का उपनाम ।

(६७)

परिहर मन किछु न कर तरास ।

साधुस नहिं कर चल पिय पास ॥ २ ॥

दुर कर दुरमति कहलम तोष ।

बिनु दुख सूख कबहु नहि होष ॥ ४ ॥

तिल आध दुख जनम भरि सूख ।

इथे लागि धनि किए होइ विमूख ॥ ६ ॥

तिला एक मूनि रहु दु नयान ।

रोगि करष जइसे श्रीपध पान ॥ ८ ॥

चल चल सुन्दरि करह सिगार ।

विद्यापति कह एहि से विचार ॥ १० ॥

१ परिहर = छोड़ो । तरास = आस, डर । २—साधुस = गय
३—दुर कर = दूर करो । दुरमति = दुर्बुद्धि । कहलम = मैं कहती हूँ
तोष = तुम्हें । ४—तिल आध = (मैथिली प्रयोग) एक छण के लिये ।
६—इथे = इसलिये । किए = क्यों । होइ = होती हो । विमूख = विमुख,
विपक्ष । ७—मूनि रहु = मूँद रखो । दु = दो । नयान = आँखें । ८—
जइसे = जिस प्रकार । पान = पीना । ९—करह = करो । १०—एहि
से = यह ही ।

A poet is not only a dreamer of dreams his heart is the mirror of the world's emotions, his songs of gladness are the echoes of the world's laughter, his songs of sorrow reflect the tears of humanity—Sarojini

श्रीकृष्ण की शिक्षा

(६८)

हमे दरसइत कतहुँ बेस कर
हमे हेरइत तनु भाँप ।
सुरत सिंगारि आज धनि आओलि
परसइत थर थर काँप ॥२॥
सुनु हे कान्हु कहिये अग्रधारि ।
सफल काज हम बुझल बुझाएल
न बुझल अन्तर नाहि ॥४॥
अभिनव काम नाम पुनु सुनइत
रोखत गुन दरसाइ ।
अरि सम गजए मन पुनु रजए
अपन मनोरथ साइ ॥६॥
अन्तर जीउ अधिक करि मानए
चाहर न गन तरासे ।
कह कवि-सेखर सहज विषय-रत
विदग्धि केलि विलासे ॥ ८ ॥

१—दरसइत = दिखा करके । कतहुँ = कितना ही । बेस कर =
श्रृंगार करना । हेरइत = देखते । भाँप = ढोंप लेना । २—सुरत = काम-
कीड़ा । ३—अग्रधारि = निश्चय करके । ४—बुझल-बुझाएल = समझा
बुझा दिया है । अन्तर = हृदय । ५—अभिनव = नवीन । रोखत = रोक
प्रकट करती है । गुन दरसाइ = गुण दिखाकर, कला प्रकट करके । चूँकि

(७१)

बुझव छयलपन आज ।
 राहि मनि रतने आनलि अति जतने
 बचि सय रमनि-समाज ॥२॥
 सिरिस-कुसुम जनि अति सुकुमार धनि
 आलिगव दृढ अनुरागे ।
 निर्भय करव केलि केह नहि बूझे गेलि
 भौर भरे माँजरि न भाँगे ॥४॥
 पिरीतिक बोलि नियरे बइसाओव
 नख हनि, आनव कोल ।
 नहि नहि कर धनि कूपट भुलव जनु
 यदि कह कातर बोल ॥६॥

३—एक बार छोड़कर पुन घसकर दोबारा भागे बढ़कर उसकी बाँह
 त पकड़ना । १४—गिलप = निगल जाना । १६—जिस प्रकार भौर बड़े
 गोराल से सिरिस के फूल का रस चूसता है, उसी प्रकार ।

१—छयलपन = रसिकता । २—राहि = राधा । मनि रतने =
 कों में मणि । आनलि = लाई । बचि = छल करके । ३ = बनि =
 बना । आलिगव = आलिंगन करना, छापी लगाना । ४—निर्भय होकर
 केलि करना, यह किसे नहीं मालूम है कि भौर के शरीर के भार से कोमल
 मजरी नहीं टूटती । ५—नियरे = निकट । नख हनि आनव कोले = नख
 में हनन कर = नख से कुचों को दूत विद्यत कर—उसे गोदी में बैठा लेना ।
 ६—नहि नहि कर धनि = बड़ बाला यदि नहीं नहीं करे । कातर बोल =
 दीन वचा ।

(७४)

अहे सखि अहे सखि लपजनि जाह ।

हम अति बालिक आकुल नाह ॥ २ ॥

गोट गोट सखि सब गेलि बहराय ।

बजर किवाड पहु देलहि लगाय ॥ ४ ॥

तेहि अवसर पहु जागल कन्त ।

चोर संभारलि जिउ भेल अन्त ॥ ६ ॥

नहि नहि करप नयन ढर नोर ।

काँच कमल भमरा भिकभोर ॥ ८ ॥

जइसे डगमग नलनि क नीर ।

तइसे डगमग धनि क सरीर ॥ १० ॥

भन विद्यापति सुनु कविराज ।

आगि जारि पुनि आगि क काज ॥ १२ ॥

१—एष जाह = ले जाओ । जनि = मत, नहीं । २ = बालिक = बालिका । आकुल = घबराया हुआ । ३ = नाह = नाथ, प्रीतम । ३—गोट गोट = एक-एक कर । गेलि = गई । बहराय = बाहर होना । ४—बजर = बज्र तुल्य । पहु = प्रभु, प्रीतम । देलहि = दिया । ५—पहु = प्रीतम (यहाँ कामदेव से तात्पर्य है) । ६—बजर हथाने का वक्त्र करते ही, मालूम हुआ, मेरे प्राण निकल गये । ७—नोर = भाँसू । ८—काँच कमल = अपखिला कमल । भमरा = मीरा । ९—डगमग = दिलाता-डुलता । नल-निक नोर = कमल के (पत्ते पर का) पानी । १०—धनि क = धनि के, बापा के । १२—आग जलाई जानी है, सौमी तो फिर आग की आवश्यकता होती है ।

(८३)

निबिन्धन हरि किए कर दूर ।

पहो पप तोहर मनोरथ पूर ॥ २ ॥

हेरने कथोन सुख न घुम्न बिचारि ।

बड लुहु ढीठ घुम्नल बनमारि ॥ ४ ॥

हमर सपथ जाँ हेरह मुरारि ।

लहु लहु तब हम पारब गारि ॥ ६ ॥

बिहार से रहसि हेरने कौन काम ।

से नहि सहबहि हमर परान ॥ ८ ॥

कहाँ नहि सुनिप पहन परकार ।

करप बिलास दीप लप जार ॥ १० ॥

परिजन सुनि सुनि तेजय निसास ।

लहु लहु रमह सखीजन पास ॥ १२ ॥

भक्तइ विद्यापति पहो रस जान ।

नृप सियसिंघ लखिमा प्रिरमान ॥ १४ ॥

१—निबि बधन = कोंचे का बधन । किए = क्यों । २—पहो पप =
 रससे भी । ३—हेरने = देखने से । ४—घुम्नल = मैं समझ गई । ५—
 हेरह—देखो । ६—लहु लहु = धीरे धीरे । पारब गारि = गाली दूँगी । ७—
 खुश होकर बिहार करो, [बिहार से रहसि] मला देखने से क्या प्रयो
 जन । ८—पहन परकार = ऐसा ढग । १०—काम-झीड़ा के समय
 दीपक जला ले । ११—परिजन = पेंकोसी । तेजय निसास = [फेलि समय में]
 नि श्वास लेना । १२—रमह = समोग करो । पास = निकट । १४—

(८२)

रति-सुबिसारद तुहु राख मान ।

घाढिले जीवन तोहे देव दान ॥ २ ॥

आवे से अलप रस न पूरव आस ।

थोर सलिल तुअ न जाव पियास ॥ ४ ॥

अलप अलप रति यहि चाहि नीति ।

प्रतिपद चाँद-कला सम रीति ॥ ६ ॥

थोरि पयोधर न पूरव पानि ।

न दिह नख-रेख हरि रस जानि ॥ ८ ॥

भनइ विद्यापति कइसन रीति ।

काँच दाडिम प्रति ऐसन प्रीति ॥ १० ॥

१—रति सुबिसारद = कामक्रीडा में परम चतुर । तुहु = तुम । मान = मर्यादा । २—आवे = इस समय । से = वह । अलप = थोड़ा । पूरव = पूरेगा । ३—सलिल = पानी । तुअ = तेरी । न जाव = नहीं जायगी । ४—६—बिस प्रकार प्रतिपदा में चन्द्रमा थोड़ा थोड़ा बढ़ता है, वसी प्रकार रति भी थोड़ी थोड़ी करके बढ़ानी चाहिये, यही नीति है । ७—थोरि = छोटी । पयोधर = कुच । पानि = दाय । अभी कुच छोटे हैं, उनमें तुम्हारे दाय भी नहीं भरेंगे । ८—हे हरि, ऊपर नख की रेखा मत दो—उन्हें नखों से मत ढकोटो, तुम तो स्वयं रस की बात जानते हो । ९—कइसन = किस प्रकार की । १०—दाडिम = अनार [कुच की उपमा] । ऐसन = इस प्रकार ।

“जहाँ न जाय रवि । तहाँ जाय कवि ।”

(८३)

निवि-बधन हरि किए कर दूर ।

पहो पप तोहर मनोरथ पूर ॥ २ ॥

हेरने कओन सुख न बुझ बिचारि ।

बड तुहु ढीठ दुभल बनमारि ॥ ४ ॥

हमर सपथ जो हेरह मुरारि ।

लहु लहु तब हम पारव गारि ॥ ६ ॥

बिहार से रहसि हेरने कौन काम ।

से नहि सहयहि हमर परान ॥ ८ ॥

कहाँ नहि सुनिप पहन परकार ।

करण बिलास दीप लप जार ॥ १० ॥

परिजन सुनि सुनि तेज निसास ।

लहु लहु रमह सखीजन पास ॥ १२ ॥

भनइ विद्यापति पहो रस जान ।

नृप सियसिंघ लखिमा विरमान ॥ १४ ॥

१—निवि बंधन=कौये का बन्धन । किए=क्यों । २—पहो पप=इससे भी । ३—हेरने=देखने से । ४—दुभल=मैं समझ गई । ५—हेरह=देखो । ६—लहु लहु=धीरे धीरे । पारव गारि=गाली दूंगी । ७—सुरा होकर बिहार करो, [बिहार से रहसि] मला देखने से क्या प्रयोजन । ८—पहन परकार=ऐसा ढग । १०—काम क्रीड़ा के समय दीपक जला ले । ११—परिजन=पड़ोसी । तेज निसास=[केलि समय में] निश्वास लेना । १२—रमह=समोग करो । पास=निष्ठ । १४—विरमान=पति ।

(८२)

रति-सुबिसारद तुहु राख मान ।

वाढिले जीवन तोहे देव दान ॥ २ ॥

आवे से अलप रस न पूरव आस ।

थोर सलिल तुअ न जाव पियास ॥ ४ ॥

अलप अलप रति यहि चाहि नीति ।

प्रतिपद चाँद-कला सम रीति ॥ ६ ॥

थोरि पयोधर न पूरव पानि ।

न दिह नख-रेख हरि रस जानि ॥ ८ ॥

भनइ विद्यापति कइसन रीति ।

काँच दाडिम प्रति ऐसन प्रीति ॥ १० ॥

१—रति सुबिसारद = कामग्रीष्म में परम चतुर । तुहु = तुम । मान = मर्यादा । २—आवे = इस समय । से = वह । अलप = थोड़ा । पूरव = पूरेगा । ३—सलिल = पानी । तुअ = तेरी । न जाव = नहीं जायगी । ४-६—जिस प्रकार प्रतिपदा से चन्द्रमा थोड़ा थोड़ा बढ़ता है, वसी प्रकार रति भी थोड़ी थोड़ी करके बढ़ानी चाहिये, यही नीति है । ७—थोरि = छोटी । पयोधर = कुच । पानि = हाथ । अभी कुच छोटे हैं, उनसे तुम्हारे हाथ भी नहीं भरेंगे । ८—हे हरि, उनपर नख की रेखा मत दो—उन्हें नखों से मत बकोटो, तुम तो स्वयं रस की बात जानते हो । ९—कइसन = किस प्रकार की । १०—दाडिम = अनार [कुच की उपमा] । ऐसन = इस प्रकार ।

“उहाँ न जाय रवि । तहाँ जाय कवि ।”

(८३)

निबिन्धन हरि किए कर दूर ।

पहो पप तोहर मनोरथ पूर ॥ २ ॥

हेरने कश्चोन सुख न बुझ बिचारि ।

बड लुहु ढीठ बुझल यनमारि ॥ ४ ॥

हमर सपथ जौं हेरह मुरारि ।

लहु लहु तव हम पारख गारि ॥ ६ ॥

बिहर से रहसि हेरने कौन काम ।

से नहि सहबहि हमर परान ॥ ८ ॥

कहाँ नहि सुनिप पहन परकार ।

करप बिलास दीप लप जार ॥ १० ॥

परिजन सुनि सुनि तेजय निसास ।

लहु लहु रमह सखीजन पास ॥ १२ ॥

मनइ विद्यापति पहो रस जान ।

नृप सिवसिंघ लखिमा बिरमान ॥ १४ ॥

१—निबि बधन = कौंसे का बन्धन । किए = क्यों । २—पहो पप = इससे भी । ३—हेरने = देखने से । ४—बुझल = मैं समझ गई । ५—हेरह—देखो । ६—लहु लहु = धीरे धीरे । पारख गारि = गाली दूँगी । ७—सुग होकर बिहार करो, [बिहार से रहसि] भला देखने से क्या प्रयो जन । ८—पहन परकार = ऐसा ढग । १०—काम छोड़ा के समय दीपक जला ले । ११—परिजन = पड़ोसी । तेजय निसास = [केलि समय में] निश्वास लेना । १२—रमह = समोग करो । पास = निकट । १४—बिरमान = पति ।

(८४)

सुन सुन नागर निवि-बध छोरे ।

गाँठिते नहिं सुरत-धन मोर ॥ २ ॥

सुरत क नाम सुनल हम आज ।

न जानिअ सुरत करण कौन काज ॥ ४ ॥

सुरत क खोज करव जहाँ पाव ।

घर कि अछप नाहि सखिरे सुधाव ॥ ६ ॥

वेरि एक माधव सुन मभु वानि ।

सपि सयँ खोजि माँगि देव आनि ॥ ८ ॥

विनति करण धनि माँगे परिहार ।

नागरि-चातुरि भन कवि-कठहार ॥ १० ॥

इस पद्य में राधा का विविध परिहास, बड़ी सफाई से, वर्णित है ।
 रूप राधा से 'सुरत' माँग रहे हैं—राधा से काम क्रीडा करने को कह रहे
 हैं—इसपर राधा कहती है,—“अरे चतुर, सुनो, मेरी नीची का बंधन
 दो, इसकी गाँठ में 'सुरत' रूपी धन नहीं छिपा पड़ा है । मैंने 'सुरत'
 का नाम तो आज ही सुना है, न जाने 'सुरत' [कौन है और] क्या
 नाम करता है । हाँ, आज से मैं, जहाँ पाऊँगी, सुरत की खोज करूँगी ।
 सखियों से पूछूँगी [सखि रे सुधाव] कि मेरे घर में है कि नहीं । माधव !
 एक बार मेरी बात सुन लो, सखियों से यदि प्राप्त कर सकूँगी तो खोज
 बंद कर तुम्हें ला दूँगी ।” यों नायिका विनती करती और उन्हें मना कर
 रही है, कवि कठहार विद्यापति नागरी नायिका की इस चातुरी का (चतुरता
 पूर्ण ।) वर्णन करते हैं ।

(८५)

हरि-कर हरनि नयनि तब सौंपलि
 सपिगन गेलि धान ठाम ।
 अक्सर पाइ धनि कर धरि नागर
 विनति करद अनुषाम ॥ २ ॥
 हरनि-नयनि धनि रामा ।
 फानु फ सरस परस सभापन
 मेटल लाज क धामा ॥ ४ ॥
 सुखद सेजोपरि नागरि नागर
 बइसल नव रति साधे ।
 प्रतिअग चुम्बन रस अनुमोदन
 थर थर काँपए राधे ॥ ६ ॥
 मदन सिंहासन करल अरोहन
 मोहन रसिक सुजान ।
 भय गढ़ तोडल अलप समाधल
 राखल सकल समान ॥ ८ ॥
 कह कवि-सेखर गहअ भूख पर
 कर जल थोर अहार ।
 अइसन दुहुमन तलफइ पुन पुन
 उपजल अधिक विकार ॥ १० ॥

४—सरस परस = रसमय स्पर्श, आलिंगन । ५—सेजोपरि—शय्या
 ; ऊपर । करल अरोहन = आरोहण किया, चढ़े । ८—अलप समाधल =
 धे से संतुष्ट किया । समान = मान-सहित । ९—गहअ = अधिक ।

(८४)

सुन सुन नागर निवि-बध छोर ।

गाँठिते नहिं सुरत-धन मोर ॥ २ ॥

सुरत क नाम सुनल हम आज ।

न जानिअ सुरत करए कौन काज ॥ ४ ॥

सुरत क खोज करव जहाँ पाव ।

घर कि अछए नाहि सखिरे सुधाव ॥ ६ ॥

वेरि एक माधव सुन मभु बानि ।

सखि सयँ खोजि मांगि देव आनि ॥ ८ ॥

बिनति करए धनि मांगे परिहार ।

नागरि चातुरि भन कवि-कठहार ॥ १० ॥

इस पद्य में राधा का विविध परिहास, बड़ी सफाई से, वर्णित है ।
कृष्ण राधा से 'सुरत' माँग रहे हैं—राधा से काम कीड़ा करने को कह रहे हैं—इसपर राधा कहती है,—“अरे चतुर, सुनो, मेरी नीधी का बन्धन छोड़ो, इसकी गाँठ में 'सुरत' रूपी धन नहीं छिपा पड़ा है । मैंने 'सुरत' का नाम तो आज ही सुना है, न जाने 'सुरत' [कौन है और] क्या काम करता है । हाँ, आज से मैं, जहाँ पाऊँगी, सुरत की खोज करूँगी । सखियों से पूछूँगी [सखि रे सुधाव] कि मेरे घर में है कि नहीं । माधव ! एक बार मेरी बात सुन लो, सखियों से यदि प्राप्त कर सकूँगी तो खोज हँदकर तुम्हें ला दूँगी ।” यों नायिका बिनती करती और उन्हें मना कर रही है, कवि कण्ठहार विद्यापति नागरी नायिका की इस चातुरी का (चतुरता पूर्ण ।) वर्णन करते हैं ।

(८७)

हे हरि हे हरि सुनिष स्रवन भरि
 अत्र न विलास क घेरा ।
 गगन नपत छल से अनेकत भेल
 फोफिल करइछ फेरा ॥ २ ॥
 चक्रा मोर सोर कप चुप भेल
 उठिष मलिन भेल चदा ।
 नगर क धेनु डगर कप सचर
 कुमुदनि बस मकरदा ॥ ४ ॥
 मुख फेर पान सेहो रे मलिन भेल
 अवसर भल नहि मदा ।
 विद्यापति भन यहो न निक थिक
 जग भरि करइछ निंदा ॥ ६ ॥

१—स्रवा भरि=जात मरकर, अच्छी तरह । विलास क घेरा=
 खेल का समय । २—गगन=आकाश । नपत=नघन, तारे । छल
 =ये । से=यह । अनेकत भेल=अपेक्षित हुए, छिप गये । करइछ
 फेरा=फेरा कर रही है, इधर-उधर पुकार रही है । ३—सोर कप=
 शोरगुल करके । चुप भेल=चुप हो गये । ४—धेनु=गौ । डगर=राह
 सचर=जो रहो है । कुमुदनि बस मकरदा=कुमुदनिवाँ से मकरद
 (पराग) का भरना (भव) बस (खतम) हो गया अर्थात् वे मुँद
 गई । मुख फेर=मुख का । सेहो=बढ़ भी । ५—भल=भला, अच्छा ।
 मन्दा=गुरा । निक=अच्छा, उचित । थिक=है ।

(८६)

सुरत समापि सुतल घर नागर
पानि पयोधर आपी ।

कनक-समु जनि पूजि पुजारी
धएल सरोरुह भाँपी ॥ २ ॥

सखि हे माधव, केलि विलासे ।
मालति रमि अलि ताहि अगोरसि
पुनु रति-रग क आसे ॥ ४ ॥

चदन मेराए धएल मुख-मडल
कमल मिलल जनि चन्दा ।
भमर चकोर दुअओ अरसाएल
पीचि अमिय मकरन्दा ॥ ६ ॥

भनइ अमीकर सुनह मधुरपति
राधा-चरित अपारे ।

राजा सिंगसिंघ रूपनरायन
सुकवि भनथि कठहारे ॥ ८ ॥

१ — सुरत = काम-क्रीडा । समापि = समाप्त कर । सुतल = सो गया ।
पानि = दाय । पयोधर = कुच । आपी = अपित कर, रख । २ — कनक-
समु = सोने का मदारव । सरोरुह = कमल । ४ — अलि = मीरा ।
अगोरसि = अगोरे रदता है । ५ — मेराए = मिलाकर । धएल = रखवा ।
चदन * मडल = कुण्ड ने अपना मुख राधा के मुख से सटाकर रखवा ।
६ — दुअओ = दोनों । अरसाएल = अलसा गये । अमीकर = शिवसिंह के
मन्त्री । सुकवि-कठहार = विद्यापति ।

सखी-सम्भाषण

(६१)

सामरि हे भामरि तोर देह ।
 की कह के सयँ लाएलि नेह ॥ २ ॥
 नौद भरल अछु लोचन तोर ।
 कोमल घदन कमल-खचि चोर ॥ ४ ॥
 निरस धुसर करु अधर पँजार ।
 कौन कुनुधि लुटु मदन भँडार ॥ ६ ॥
 कोन कुमति कुच नख-खत देल ।
 हाय हाय सम्भु भगन भए गेल ॥ ८ ॥
 दमन लता सम तनु सुकुमार ।
 फूटल बलय टुटल गृम हार ॥ १० ॥
 फेस कुसुम तोर, सिर क सिंदूर ।
 अलक तिलक हे सेउ गेल दूर ॥ १२ ॥
 भनइ विद्यापति रति अरुसान ।
 राजा सियसिंघ ई रस जान ॥ १४ ॥

अनुपाधि = उपमा देते हैं । ६ — भितल पराने = पराग की जीव लिया
 पीला पड़ गया । ७ — चगिम = सुन्दर । ८ — सामु = सामने ।
 १ — सामरि = बरामा, सुंदरी । भामरि = मलिन । २ — को = क्या
 के सयँ = किससे । लाएलि = लाई । ३ — मद्य = है । ४ — कोमल
 मुख की कमल-सदृश भामा चोरी चली गई है — वह मद पड़ गया है ।
 ५ — धुसर = धूसर, भूरा । पँजार = प्रवाल, मृगा । ७ — छव = छठ,
 णव । ८ — दमन लता = द्रोण पुष्प की लता । १० — वगय = हाय
 ११ — गूड़ी । गृम = घोड़ा, गला । ११ — कुसुम = फूल । १२ — अलक =
 लता, महावर । १४ — भवसान = समाप्त ।

(६०)

आजु देखलिसि कालि देखलिसि

आज कालि कत भेद ।

सैसव बापुर सीमा छाडल

जऊवन चाँधल फेद ॥ २ ॥

सुन्दर कनककेशा मुति गोरी ।

दिन दिन चाँद-कला सयँ बाढलि

जऊवन सोभा तोरी ॥ ४ ॥

बाल पयोधर गिरि क सहोदर

अनुपामिण अनुरागे ।

कओन पुरुष कर परसए पाओल

जे तनु जितल परागे ॥ ६ ॥

मन्द हास बकिम कए दरसए

चगिम भौह बिभगे ।

लाज बेआकुलि सामु न हेरए

आओल नयन तरगे ॥ ८ ॥

विद्यापति कबिबर यह गावए

नव जौवन नव कन्ता ।

सिबसिंघ राजा पह रस जानए

मधुमति देवि सुकन्ता ॥ १० ॥

१—बापुर=बेचारा । फेद (अस्पष्ट) । ३—कनककेशा=कन-
कीया, स्वर्ण निभिता । मूति=मूर्ति । ५—बाल पयोधर=छोटे छोटे
कुच । गिरि क सहोदर=पहाड़ के भाई (पहाड़ के ऐसे) ।

(६५)

कि कहव हे सखि आलु क विचार ।

से सुपुरुष मोहे कपल सिंगार ॥ २ ॥

हँसि हँसि पहु आलिंगन देल ।

मनमथ अकुर कुसुमित भेल ॥ ४ ॥

आँचर परसि पयोधर हेरु ।

जनम पगु जनि भेंटल सुमेरु ॥ ६ ॥

जत्र निबिन्ध खसाओल कान ।

तोहर सपथ हम किहु जदि जान ॥ ८ ॥

रति-चिन्हे जानल कठिन मुरारि ।

तोहर पुने जीअलि हम नारि ॥ १० ॥

कह फरि रजन सहज मधु राई ।

न कह सुधामुखि गेल चतुगई ॥ १२ ॥

चोट । १६—केहरि = सिंह । गज कुम = हाथी का मस्तक । बिदार = फाड़ना । १८—चेतन = चतुग । लुपुध = लोभायमान ।

२—कपल—विषा । ३—पहु—प्रीतम । ४—मनमथ = कामदेव । कुसुमित = फूला हुआ । कामदेव रूपी अँकुर फूल उठा—काम का पूर्ण विकारा हुआ । ५—आँचर = अँवल । पयोधर = कुच । हेरु = देखना । ६—पगु = पगड़ीन । जनि = मानों । ७—खसाओल = (खोलकर) गिरा दिया । कान = कृष्ण । ९—रति के चिन्ह से जाना कि कृष्ण बड़ा कठोर-हृदय है । १०—पुने = पुण्य से । जीअलि = जीती बची । ११—सहज मधु राई = राई (राधा) स्वभावत ही मधु (सदृश) है । १२—गेल चतुगई = चतुरता खतम हो गई ।

(६४)

न कर न कर सखि मोहि अनुरोध ।

की कहव हमहु तरु परबोध ॥ २ ॥

अलप वयस हम कानु से तरुना ।

अतिहु लाज डर अतिहु फरना ॥ ४ ॥

लोभे निठुर हरि कपलन्हि केलि ।

की कहव जामिनि जन दुख देलि ॥ ६ ॥

हठ भेल रस मोर हरल गैरान ।

निचि-बँध तोडल कयन के जान ॥ ८ ॥

देल आलिंगन भुज जुग चापि ।

तखन हृदय मभु ऊठल कापि ॥ १० ॥

नयन बारि दरसाओलि रोइ ।

तवहु कान्हु उपसम नहि होइ ॥ १२ ॥

अधर सुरस मभु कपलन्हि मन्द ।

राहु गरासि निसि तेजल चन्द ॥ १४ ॥

कुच जुग टेलन्हि नख-परहार ।

फेहरि जनि गज-कुम्भ विदार ॥ १६ ॥

भनइ विद्यापति रसवति नारि ।

तूहु से चेतन लुबुध मुरारि ॥ १८ ॥

२—तकर=उसका । ६—जामिनी=रात । जत=जितना ।

८—कखन=कब । १०—भुज जुग=दोनों हाथ । चापि=दबाकर ।

१२—तखन=उस समय । १२—उपसम=रान्त, ठंडा । १३—अधर=झोछ । १४—तेजल=झोड़ दिया । १५—नख-परहार=नखों की

(६५)

कि कहव हे सखि आबु क विचार ।

से सुपुरुष मोहे फपल सिंगार ॥ २ ॥

हँसि हँसि पहु आलिंगन देल ।

मनमथ अकुर कुसुमित भेल ॥ ४ ॥

आंचर परसि पयोधर हेर ।

जनम पगु जनि भेंटल सुमेरु ॥ ६ ॥

जय नित्रि मध पसाओल कान ।

तोहर सपथ हम किछु जदि जान ॥ ८ ॥

रति-चिन्हे जानल कठिन मुरारि ।

तोहर पुने जीअलि हम नारि ॥ १० ॥

कह कत्रि रजन सहज मधु राई ।

न कह सुधामुखि गेल चतुराई ॥ १२ ॥

चोट । १६—केशरि = सिंह । गग कुम = हाथी का मतक । बिहार =

फाड़ना । १८—चेवन = चतुरा । लुब्ध = लोभायमान ।

२—कपल = दिया । ३—पहु = प्रीतम । ४—मनमथ = कामदेव ।

कुसुमित = फूला हुआ । कामदेव रुषी अकुर फूल उठा-काम का पूर्ण विकास

हुआ । ५—आंचर = अंवल । पयोधर = कुच । हेर = देखना । ६—

पगु = पगहीन । जनि = मानो । ७—पसाओल = (खोलकर) गिरा

दिया । कान = कृष्ण । ८—रति के चिह्न से जाना कि कृष्ण बड़ा कठोर-

हृदय है । १०—पुने = पुन्य से । जीअलि = जीतो वचो । ११—सहज

मधु राई = राई (राधा) स्वभावतः ही मधु (सदृश) है । १२—गेल चतुराई

= चतुरता खतम हो गई ।

(६४)

न कर न कर सखि मोहि श्रुतरोध ।

की कहव हमहु तरु परबोध ॥ २ ॥

अलप वयस हम कानु से तरुना ।

अतिहु लाज डर अतिहु करुना ॥ ४ ॥

लोभे निठुर हरि कपलन्हि केलि ।

की कहव जामिनि जन दुख देलि ॥ ६ ॥

हठ भेल रस मोर हरल गोआन ।

निवि-वैध तोडल कखन के जान ॥ ८ ॥

देल आलिगन भुज-जुग चापि ।

तखन हृदय मभु ऊठल कापि ॥ १० ॥

नयन बारि दरसाओलि रोइ ।

तबहु कान्हु उपसम नहि होइ ॥ १२ ॥

अधर सुरस मभु कपलन्हि मन्द ।

राहु गरासि निसि तेजल चन्द ॥ १४ ॥

कुच जुग देलन्हि नख-परहार ।

फेहरि जनि राज-कुम्भ बिदार ॥ १६ ॥

भनइ विद्यापति रसवति नारि ।

तूहु से चेतन लुबुध मुरारि ॥ १८ ॥

२—तकर=उसका । ६—जामिनो=रात । जत=जितना ।

८—कखन=कब । १०—भुज जुग=दोनों हाथ । चापि=इवाकर ।

१२—तखन=उस समय । १४—उपसम=शांत, ठंडा । १६—अधर

=आँख । १८—तेजल=झोड़ दिया । १९—नख परहार=नखों की

(६७)

कि कहव हे सखि रातु क बात ।

मानिक पडल कुचानिक हात ॥ २ ॥

कांच कचन न जानए मूल । ॥

गुजा रतन करए समतूल ॥ ४ ॥

जे किछु कभु नहि कला रस जान ।

नीर खीर दुहु करए समान ॥ ६ ॥

तन्हि सों कहीं पिरित रसाल ।

वानर कठ कि मोतिम माल ॥ ८ ॥

भनइ विद्यापति इह रस जान ।

वानर-मुंह की सोभए पान ॥ १० ॥

१०—उगत = उगेगा । सूर = सूर्य । ११—मोयें = मैं । वहि = वस्तु ।

१२—बव = भले ही । नहावधि = छोड़ दे । १४—भाग प्रतापी है,

किन्तु पुन भाग ही की बहरत होती है ।

१—कि कहव = क्या कहूँ । रातु क = रात की । २—मानिक =

माणिक, मणि । पडल = पड़ गया । कुचानिक = मण्ड व्यापारी । हात =

हाथ । ३—कचन = सोना । मूल = मूल्य, कीमत । ४—गुजा = एक

प्रकार का लाल फल जो जंगल में विशेष होता है, वनवासी इसकी माथा

बनाते हैं, घुँघनी । रतन = रत्न, मणि । समतूल = समान । ६—नीर =

पानी । खीर = घीर = दूध । ७—तन्हि सों = वनसे । रसाल = रसमय ।

८—वानर = बंदर । कि = क्या । ९—रह = यह । १०—को = कक ।

सोभए = शोभता है ।

(६६)

दृढ परिरम्भन पीडलि मदनै ।

उवरि अपलहुँ सखि पुरव पुने ॥ २ ॥

टुटि छिडिआएल मोतिम हार ।

सिंदुर लोटाएल सुरग पँवार ॥ ४ ॥

सुन्दर कुच जुग नख-खत भरी ।

जनि गज कुंभ विदारल हरी ॥ ६ ॥

अधर दसन देखि जिउ मोरा काँपे ।

चाँद-मडल जनि राहु क भाँपे ॥ ८ ॥

समुद ऐसन निखि न पारिष ऊर ।

फखन उगत मोर हित भए सूर ॥ १० ॥

मोयँ न जाएव सखि तन्हि पिया-ठाम ।

वरु जिय मारि नडावथि काम ॥ १२ ॥

भनइ विद्यापति तेजभय लाज ।

आग जारिये पुनु आगि क काज ॥ १४ ॥

- १—परिरम्भन=गाढ़ आलिंगन । पीडलि=पीड़ित हुई । मदनै
=काम द्वारा । २—उवरि अपलहुँ=मैं बच आई । पुने=पुण्य से ।
३—छिडिआएल=विरार पड़ा । ४—सुरग=लाल । पँवार=प्रवाल ।
भुँगा । ४—कुच=स्तन । जुग=दो । नख खत=नखों द्वारा दिये
गये घाव । ६—गज-कुंभ=दाधी का मस्तक । विदारल=विदीर्ण किया ।
जीर फाड़ डाला । हरी=सिंह । ७—ओष्ठ पर दाँतों का आक्रमण
करते देख मेरे प्राण काँप उठे । ८—राहु क भाँपे=राहु का आक्रमण ।
९—समुद=समुद्र, सागर । ऐसन=समान । ऊर=ओर, सीमा ।

तखन यिनय जत से सब कह्य कत

कहए चाहल कर जोली ।

नव रस-रग भग भए गेल सखि

ओर धरि भेल न बोली ॥ ८ ॥

भनइ बिद्यापति सुनु घरजौरति

पहु अभिमत अभिमाने ।

राजा सिधसिध रूपनरायन

लखिमा देइ बिरमाने ॥ १० ॥

७—तखन = उस समय । जत = जितना । से = वह ।
कहए = कहूँगी । कत = कितना । कहए चाहल = कहना चाहा । कर-
जोली = हाथ जोड़कर । ८—नव = नवीन नया । भग भए गेल =
भग हो गया । ओर = पर । ओर धरि भेल न बोली = अन्त
तक कह भी न सके—साफ साफ बात भी नहीं कह सके । ७—
८—इस पद का तात्पर्य यह है कि समागम के समय श्रीकृष्ण यह
देखकर कि राधा उनकी प्रत्येक चेष्टा का यथोचित समाधान नहीं करती,
दोनों हाथ जोड़कर उस समय उसकी प्रार्थना करने लगे । यों, ऐन
सीके पर दोनों हाथ प्रार्थना के लिये जोड़े जाने के कारण रति रग में
भग हो गया । फिर तो कृष्ण के मुख से बोली तक १ निकली ।
इस पद का यथार्थ मर्म विदग्ध पाठक ही समझ सकगे । ९—पहु = पहुँच,
प्रीतम । अभिमत = युक्तियुक्त । १०—बिरमाने = विरमण, प्रीतम,
पति ।

(६८)

पहिलुक परिचय पेम क संचय
रजनी आध समाजे ।

सकल कला-रस सँभरि न भेले
वैरिनि भेलि मोरि लाजे ॥ २ ॥

साए साए अनुसए रहलि बहूते ।
तन्हिहि सुबन्धु के कहिए पठाइअ
जौ भमरा होअ दूते ॥ ४ ॥

खनहि चीर धर खनहि चिकुर गह
करए चाह कुच-भंगे ।

एकलि नारि हम कत अनुरजय
एकहि वेरि सव रगे ॥ ६ ॥

१—पहिलुक = प्रथम बार का । परिचय = ज्ञान पहचान । पेम क = प्रेम का । रजनी = रात । पहली बार का परिचय था—प्रथम प्रथम भेंट हुई थी, अतः प्रेम के संचय में ही—प्रेमोत्पत्ति में ही—आधी रात बीत गई । २—सँभरि न भेले = सँभल कर न हुआ—अच्छी तरह नहीं हुआ । भेलि = हुई । ३—साए = सखि । अनुसए = अनु-ताप, पछतावा । रहलि = रह गया । ४—तन्हिहि = उनके । कहिए पठाइअ = बोल पठाना, बुला भेजना । जौ = जिस प्रकार । भमरा = अमर = मौरा । ५—खनहि = क्षण । चीर = साड़ी । चिकुर = केरा । गह = पकड़ना । कुच भंगे = कुच को विदीर्ण करना । ६—एकलि = एकैसी । कत = किन्ना । अनुरजय = अनुरजन कहेंगी, प्रेम निबाहेंगी । वेरि = बार ।

कौतुक

(६६)

उठ उठ माधव कि सुतसि मद ।

गहन लाग देतु पुनिम क चद ॥ २ ॥

हार-रोमावलि जमुना गग ।

त्रिवलि त्रिवेनी विप्र अनग ॥ ४ ॥

सिंदूर-तिलक तरनि सम भास ।

धूसर मुख-ससि नहि परगास ॥ ६ ॥

एहन समय पूजह पंचवान ।

होअ उगारास देह रतिदान ॥ ८ ॥

पिक मधुकर पुर कहइत बोल ।

अलपत्रा अयसर दान अतोल ॥ १० ॥

विद्यापति कवि एहो रस भान ।

राए सिधसिध सब रस क निधान ॥ १२ ॥

१—मद=मत्तमय । २—गहन=गह्वर । ३—४—रोमावलि=र के निकट के केशों की पक्ति । त्रिवलि=पेट में पड़ी तीन लें । अनग=कामदेव । हार और रोमावली कपरा गंगा और ना है, त्रिवली ही त्रिवेणी है और कामदेव ही विप्र है । ५—सिंदूर तिलक=सिंदूर का टीका । तरनि=सूय । भास=प्रकाशित । ६—धूसर=धूमिल, प्रमादित । परगास=प्रकार । ७—एहन=ऐसा । वान=कामदेव । ८—होअ उगारास=उगारास होगा, गह्वर छूटेगा । रतिदान=रति का दान दो । ९—पिक=कावल । मधुकर=।। पुर कहइत बोल=गर्व में कहता फिरता है । १०—अल-प=छोटा ही । अतोल=अनंत ।

(१०१) ,

अम्बर घदन भपाग्रह गोरी ।
 राज सुनइछिअ चाँद क चोरी ॥ २ ॥
 घर घर पहरि गेल अछ जोहि ।
 अग्रही दूखन लागत तोहि ॥ ४ ॥
 कतए नुकाएअ चाँद क चोर ।
 जतहि नुकाओव ततहि उजोर ॥ ६ ॥
 हास-सुधारस न कर उजोर ।
 बनिअ-धनिअ धन बोलव मोर ॥ ८ ॥
 अघर क सीम सुदनी कर जोति ।
 सिंदुर क सीम बैसाओलि मोति ॥ १० ॥
 भनइ बिद्यापति होइ निरसक ।
 चाँदहु काँ थिक भेद कलक ॥ १२ ॥

१—अम्बर=वज्र । घदन=मुख । भपाग्रह=ढाँस लो ।
 २—चाँद क=चंद्रमा को । ३—पहरि=पहरी, पदरमा । गेल छन
 जोहि=हँड गया है । ४—दूखन=दोष, कष्ट । ५—कतए=कहाँ ।
 नुकाएअ=दियेगा । ६—उजोर=प्रकार । ७—१०—दाम=हँसी ।
 सुधारस=अमृत का रस । अघर क सीम=भोष्ठ के निकट । दसन=
 दाँत । बैसाओलि=बैठाया । हँसकर प्रकरा मत करो, यनी व्यापारी
 कहेंगे कि ये मेरे ही धन है (क्योंकि) भोष्ठ के निकट दाँत प्रकरा फँसा
 रहे हैं (जो मुक्ता के समान हैं) और सिंदूर बिन्दु मोठी-से चमक रहे हैं ।
 ११—होइ=होमो । १२—थिक=दे । चाँद (और सुधारस मुख) में
 भेद है, क्योंकि वसमें कलक है ।

(१००)

त्रिवलि-तरगिनि पुर दुग्गम जानि

मनमथ पत्र पठाऊ ।

जौवन-दलपति तोहि समर लागि

ऋतुपति दूत बढाऊ ॥ २ ॥

माधव, अच, देखु साजिए चाला ।

तसु सैसव तोहँ जे सतापल
से सव आश्रोत पाला ॥ ४ ॥

कुडल चक्र तिलक अकुस कप

चँदन कबच अभिरामा ।

नयन कमान कटाख बान दण

साजि रहल अछि बामा ॥ ६ ॥

सुन्दरि साजि खेत चलि आइलि

विद्यापति कबि भाने ।

राजा सिबसिंघ रूपनरायन

लखिमा देइ रमाने ॥ ८ ॥

१—त्रिवलि = पेट में पञ्जी तीन रेखाएँ । तरगिनि = नदी । त्रिवली
रूपी नदी के तट पर (वसे हुए) नगर को दुर्गम जान कामदेव रूपी राजा ने
(उसे विजय करने को) पत्र भेजा । २—दलपति = सेनापति । समर
लागि = युद्ध के लिये । ऋतुपति = वसंत । ४—तसु = उसके । तोहँ =
तुमने । सतापल = दुःख दिया । ५—कुडल चक्र = कुडल (कर्णफूल)
चक्र है । तिलक अकुस = टीका ही अकुरा है । चँदन कबच = चंदन का
सेप ही शरीर नाथ है । ६—कमान = धनुष । ७—खेत = युद्धभूमि ।

(१०१)

अम्बर बदन भूपाग्रह मोती ।

राज सुनइ छिअ चाँद क चोरी ॥ २ ॥

घर घर पहरि गेल अछ जोहि ।

अबही दुखन तागत तोहि ॥ ४ ॥

कतए नुकाण्य चाँद क चोर ।

जतहि नुकाओव ततहि उजोर ॥ ६ ॥

हास-मुधारस न कर उजोर ।

धनिक-धनिक धन बोनव मोर ॥ ८ ॥

अधर क सीम सुदन कर जोति ।

सिंदूर क सीम बसाओलि मोति ॥ १० ॥

भनइ विद्यापति हाह निरसक ।

चाँदहु काँ यिक भेद कलक ॥ १२ ॥

१—अम्बर=वन । बदन=मुख । भूपाग्रह=दाँव ली ।

२—चाँद क=चन्द्रमा की । ३—पहरि=गहरी, पदभूषा । गेल छन
जोहि=हँद गया है । ४—दुखन=दोष, कलक । ५—कतए=कहाँ ।

नुकाण्य=छिपेगा । ६—उजोर=प्रकाश । ७—'०—हास=हँसी ।

मुधारस=अमृत का रस । अधर क सीम=आँख के निकट । सुदन=

दाँव । बसाओलि=बैठाया । हैसकर प्रकाश मत करो, धनी व्यापारी

कहेने कि ये मेरे दो धन है (क्योंकि) आँख के निकट दाँव प्रकार केना

रहे हैं (जो मुक्ता के समान हैं) और सिंदूर बिंदु मोती-से चमक रहे हैं ।

११—दोह=दोहो । १२—यिक=है । चाँद (और मुखारे मुख) में

भेद है, क्योंकि उसमें कलक है ।

(१०२)

लोलुअ वदन-सिरी अछि धनि तोरि ।

जनु लागिह तोहि चाँद क चोरि ॥ २ ॥

दरसि हलह, जनु हेरह काहु ।

चाँद-भरम मुख गरसत राहु ॥ ४ ॥

धवल नयन तोर जनि तरुआर ।

तीख तरल तेहि कटाख क धार ॥ ६ ॥

निरवि निहारि फास गुन जोलि ।

चाँधि हलव तोहि खजन बोलि ॥ ८ ॥

सागर सार चोराश्रील चद ।

ता लागि राहु करण बड दद ॥ १० ॥

भनह विद्यापति होउ निरसक ।

चाँदहु की किछु लागु फलक ॥ १२ ॥

१—लोलुअ=आदोलित, चवल । वदन-सिरी=वदनश्री, मुख की शोभा । अछि=अस्ति, है । धनि=हो । २—जनु=नहीं ।

३-४—दरसि हलह=देखकर (झटपट) दृष्ट जाओ । “मृगार-तिलक” में यों ही लिखा है—“अटिति प्रविश गेह मा वदिस्तिष्ठ कान्ते, ग्रहण-समय-वेला वर्त्तते शीतरश्मे । तव मुखमवलोक वीक्ष्य नून स राहु । असति तव मुखेऽपि पूर्णचन्द्र विहाय ॥—” ५—धवल=चमला । जनि=पेसा ।

तरुआर=तलवार । ६—तीख=तीक्ष्ण । कटाख क=कटाख की । ७-८—निरवि=नीचे की ओर । फास गुन=गुण रुपी फाँस में । जोलि=जोषकर, बाँधकर । हलव=ले जायगा । बोलि=समझकर । ९—सागर-सार=अमृत । १०—दद=दद । जोर-जुलम ।

सांभक घेरि उगल नय ससधर
भरम विदित सविताहु ।

। कुण्डल चक्र तरास नुकाएल
दूर भेल हेरथि राहु ॥ २ ॥

जनु बइससि रे बदन हाथ लाई ।
तुअ मुख चगिम अधिक चपल भेल
कति खन धरय नुकाई ॥ ४ ॥

रकोपल जनि कमल बइसाओल
नील नलिनि दल तहु ।

तिलक कुसुम तहु माभु देखि कहु
भमर आवथि लहु लहु ॥ ६ ॥

पानि-पलव-गत अधर विम्वर-रत
दसन दाडिम-विज तोरे ।

कीर दूर भेल पास न आवय
भाह धनुहि के भोरे ॥ ८ ॥

१—संध्या के समय नवीन चन्द्र का उदय हुआ, जिससे सूर्य को भी भ्रम हुआ—मतलब यह है, सूर्यास्त हो रहा था, उसी समय नाबिका घर से निकली । सूर्य अभी पणत भस्म नहीं हुए थे, उन्हें आश्चर्य हुआ कि मेरे भस्म होने के पहले ही यह कीर्ति सा नवीन चन्द्रमा उदित हुआ । २—कुण्डल चक्र = कुण्डल (कर्णफल) रूपी चक्र । नुकाएल = धिपा हुआ । ३—बदन हाथ लाई = मुख हाथ पर रखकर । ४—चगिम = सुन्दर । कति खन = कब तक ।

(१०४)

वड कौसलि तुअ राधे ।

किनल कन्हारं लोचन आधे ॥२॥

अतुपति-दृष्टव नहिं परमादी ।

मनमथ-मधुध उचित मूलवादी ॥ ४ ॥

द्विज-पिक लेखक मस्ति मकरदा ।

काँप भमर-पद साखी चदा ॥ ६ ॥

वहि रति-रग लिखापन माने ।

श्री सिवसिंध सरस-कवि भाने ॥ ८ ॥

२—रक्तोपल = लाल कमल (हाथ) । कमल = (मुख) । नील नलिनी = नील कमल (भाँसे) । तडु = वहाँ भी । ६—लडु लडु = धीरे धीरे । ७—पानि-पलव-गत = हाथ परलव के समान है । भवर = भोड़ । बिम्ब रत = बिम्ब फल के समान । दाड़िम बिज = भनार के दाने । ८—कीर = सुग्गा । मोरे = अम में ।

१—कौसलि = मुचतुरा । किनल = कय किया, खरीदा । ३ = लोचन आधे = भाँधी भाँख से एक कटाव से । अतुपति = वसंत । दृष्टव = व्यापारी । नहिं परमादी = प्रमादी नहीं, बुद्धिमान् । ४—मनमथ = कामदेव । मधुध = मध्यस्थ, दलाल । मूल = मूल्य । वादी = कहनेवाला । ५—द्विज पिक लेखक = कीपल-रूपी माझण लेखक है । मस्ति = रोशनाई । मकरदा = पराग । ६—काँप = काँड़े का कलम । भमर पद = मोरे का पैर । साखी = साची, गवाह । वहि = वही, हिसाब की पुस्तक । रति-रग = काम बिलास । लिखापन माने = मान लिखा गया । इस पद्य का

(१०५)

कचन गढल हृदय-हृथिसार ।

ते थिर थम्म पयोधर भार ॥ २ ॥

लाज सिकर धर दृढ कण गोण ।

आनक बचन हलह जनु कोप ॥ ४ ॥

दूर कर अगे ससि चिन्ता आन ।

जओउन हाथि करिय अवधान ॥ ६ ॥

मनसिज-मदजल जओ उमताप ।

धरिहसि पिअतम आकुस लाण ॥ ८ ॥

जाये न सुमत ताये अगोर ।

मुसरत मनिहसि मानस चोर ॥ १० ॥

भन विद्यापति सुन मतिमान ।

हाथि महत नव के नहि जान ॥ १२ ॥

सरहानुवार स्वय विद्यापति ने बो किया २—“रसाकरसुग माया

मस्य कृष्णस्य राधिके । लोचनादेन स क्रीतस्त्वया ते कीरलम्पहत ॥

इष्टाविषो वसन्तरोऽप्रमादी विनयण । योग्यमूल्यार्थं वादी च

अभूत् कृष्ण क्रये राधे शशीपात्र मसी मधु ॥ बहिनंति रति श्रीका

मानो वेदन लेखक । कृष्णस्य शिवसिंहेन वाणी विद्यापते कवे ।’

१—कचन = सोना । २—यिर = स्थिर ।

थम्म = रथम्म, खम्मा । पयोधर = कुच । ३—सिकर = झुल्ला,

जजीर । गोप = द्विपाकर । ४—मानक = दूसरे के । हलह जनु

कोप = कमी मत खोल दो । ६—अबानी को ही हाथी समझ लो ।

(१०७)

धनि धनि चलु अभिसार ।
 सुभ दिन आजु राजपन मनमथ
 पाओउ कि रीति बिथार ॥२॥
 गुरुजन नयन अध करि आशोल
 बाधय तिमिर बिसेल ।
 तुअ उर फुरत वाम कुच लोचन
 बहु भगल करि लेख ॥३॥
 कुलपति धरम करम भय अउ सव
 गुरु-मंदिर चलु गसि ।
 प्रियतम सग रग करु चिर दिन
 फलत मनोरथ साखि ॥६॥
 नीरद विजुरि विजुरि सयँ नीरद
 किंकिनि गरजन जान ।
 हरसप चरसप फुल सउ साखी
 सिखि कुल दुहु गुन गान ॥८॥

१—अभिसार=गुप्त मिलन । २—राजपन मनमथ=काम
 का राजपद है । बिथार=विस्तार । ३—गुरुजन=बड़े लोग ।
 बाधय=बाधु, मित्र । तिमिर=अंधकार । ४—फुरत=पड़कता ।
 उर=हृदय । वाम=बायें । लेख=समझो । ६—साखि=साथी,
 शृंग । ७—नीरद=मेघ । सयँ=सग में । मेघ विजली के साथ
 रहता है और विजली मेघ के साथ (यों ही राधा कृष्ण के साथ और
 कृष्ण राधा के साथ) ८—सिखिकुल=मोर ।

(१०८)

कह कह सुन्दरि न कर वेआज ।

देखिअ आज अरूख साज ॥ २ ॥

मृगमद पक करसि अंगराग ।

कोन नागर परिनत होअ भाग ॥ ४ ॥

पुनुपुनु उठसि पछिम दिसि हेरि ।

कखन जाएत दिन कत अछि बेरि ॥ ६ ॥

नूपुर उपर करसि कसि थीर ।

दढ कए पहिरसि तम सम चीर ॥ ८ ॥

उठसि विहंसि हंसि तेजिए सार ।

तोर मन भाव सघन अधिआर ॥ १० ॥

भनइ विद्यापति सुनु घर नारि ।

धेरज धर मन मिलत मुरारि ॥ १२ ॥

- १—वेआज=बहाना । २—मृगमद पक=कस्तूरी का लेप (जो काला होता है) । ४—कोन=कौन । किस नायक का भाग्य परिणत हुआ=किमका भाग्योदय हुआ है । ५—हेरि=देखना । ६—कखन=कब । कत=कितना । अछि—अस्तित्व=है । बेरि=समय । ७—नूपुर को पैर के ऊपरी भाग में कसकर स्थिर करती हो जिसमें चलने पर शब्द न हो । ८—तम-सम=अन्यकार के समान काला । ९—तेजिए सार=सार त्याग कर, अक्षरण ही । १०—तोर=तुम्हारे । भाव=अच्छा लगता है । अधिआर=अन्यकार ।

(१०६)

माधव, धनि आपलि कत भाँति ।

प्रेम हेम परसाओल कसौटी

भादव कुडु तिथि राति ॥ २ ॥

गगन गरज घन ताहि न गन मन

कुलिस न कर मुख वका ।

तिमिर-अजन जलधार धोए जनि

तैं उपजावति सका ॥ ४ ॥

भाग भुजग सिर कर अभिनय, कर-

भाँपल फनिमनि दीप ।

॥ जानि सजल घन से देइ चुम्बन

तैं तुअ मिलन समीप ॥ ६ ॥

नारि-रतन धनि नागर ब्रज-मनि

रस गुन पहिरल हार ।

गोविंद चरन मन कह कविरजन

सफल भेल अभिसार ॥ ८ ॥

२—हेम = सोना । कसौटी भादव कुडु तिथि राति = भादो की

अमावस्या की रात रही कसौटी पर । ३—गगन = आकाश ।

कुलिस = मग्न, ठनका । मुख वका = मुख टेढ़ा करना, विमुख करना ।

४—तिमिर अजन = अंधकार रही अजन का । जनि = नदी । ५—

भागते हुए सर्प के सिर पर मानो नृत्य करती है और सर्प के मुख को

हाथ से ढाँक लेती है । ६—इस भाव का पद गोत्रगोविन्द में यों है—

विलम्बति चुम्बति जलधर कल्पद् हरिकल्पत इति तिमिर मन

(११०)

चन्दा जनि उग आञ्जुक राति ।

पिआ के लिखिअ पठाओव पाँति ॥ २ ॥

साओन सयँ हम करव पिरीत ।

जत अभिमत अभिसार क रीत ॥ ४ ॥

अथवा राहु बुझापव हँसी ।

पिबि जनि उगिलह सीतल ससी ॥ ६ ॥

कोटि रनन जलधर तोहँ लेह ।

आञ्जुक रयनि घन तम कए देह ॥ ८ ॥

भनइ विद्यापति सुभ अभिसार ।

भल जन करधि पर क उपकार ॥ १० ॥

स्पष्ट ॥ ७—धनि = बाला (राधे) । नागर = नायक (कृष्ण) ८ = कवि
रजन = विद्यापति का उपनाम ।

१—जनि = नहीं । उग = उदय हो । पठाओव = पठाऊँगी,
भेजूँगी । पाँति = पत्र । २—साओन सयँ = श्रावण मास से ।
४—अभिमत = मनोनीत । जो अभिसार करने की निश्चित रीति है—
निश्चित काल है । ६—पिबि = पीकर । उगिलह = उगल दो ।
ससी चन्द्रमा । ७—जलधर = मेघ । लेह = लो । ८—रयनि =
रजनी, रात । घन = घना, निबिड़ । तम = अन्धकार । देह = दो ।
१०—करधि = करते हैं । पर क = दूसरे का ।

Poetry is an emotion realized in tranquility
—Wordsworth.

(१११)

आहु मोयँ जायँ हरि समागम
 कत मनोरथ भेल ।
 घर गुरुजन निद निरूपइत
 चन्द ऊदय देल ॥ २ ॥
 चन्दा भलि नहि तुअ रीति ।
 एहि मति तोहँ कलंक लागल
 किछू न गुनह भीति ॥ ४ ॥
 जगत नागरि मुख जितल जब
 गगन गेला हारि ।
 तहुँश्री राहु गरास पडला
 देव तोह कि गारि ॥ ६ ॥
 एक मास बिहि तोहि सिरिजण
 दण सकलश्री बल ।
 दोसर दिन पुनु पुर न रहसी
 एही पाप क फल ॥ ८ ॥
 भनइ बिद्यापति सुन तोयँ जुवती
 न कर चाँद क साति ।
 दिना सोरह चाँद क आइति
 ताहि पर भलि राति ॥ १० ॥

२—निद निरूपइत=नींद था निरूपण करते, सोवे न सोवे ।

४—भीति=डर । ५—समार में जब लियो ने गुहारे मुख को जीत लिया—अपनी मुखश्री से तुम्हें पराजित किया—तब तुम दारकर

(११२)

गगन अघ घन मेह दाखन, सघन दामिनि भलकई ।
कुलिस पानन सगद भनभन, पवन खरतर चलगई ॥२॥
सजनी, आजु दुरदिन भेल ।

कत हमर नितात अगुसरि सँकेत-कुजहि गेल ॥ ४ ॥
तरल जलधर परिख भर भर, गरज घन घनघोर ।
साम नागर एकले कइसन, पंथ हेरए मोर ॥ ६ ॥
सुमिरि मभु तनु अगस भेल जनि अथिर थर थर काँप ।
इ मभु गुरुजन नयन दाखन, घोर तिमिरहि भाँप ॥ ८ ॥
तुरित चल अव किए बिचारत, जीवन मभु अगुसार ।
कवीसेखर वचन अभिसर, किए से बिघिन-बिथार ॥१०॥

आकाश में भाग गये । ७—पुर=पूर्य । ८—साति=सास्ति, निन्दा ।

१०—आइति=आयत्त, सीमा । ताहि पर=उसके बाद ।

१—गगन=आकाश । घन=घना, निबिड़ । दामिनि=विजली ।

२—कुलिस पातन=घन का गिरना, ठनके की ठनक । खरतर चल-
गई=अत्यन्त तेजी से सनसनाती हुई बहती है । ४—अगुसरि=

अगसर होकर, आगे जाकर । सकेत=गुप्त निवन स्थान । ५—

तरल=अस्थिर, चलायमान । जलधर=मेघ । परिख=बरसता

है । ६—साम=श्याम, शीकृष्ण । एकले=अकेले । ७—मभु=मेरा ।

अथिर=चनल । ८—ई=यह । गुरुजन=बड़े लोग, श्रेष्ठ पुरुष ।

तिमिरहि=अंधकार । ९—तुरित=तुरत । किए=क्या ।

बिचारत=विचारती हो । मभु=मध्य, मैं । अगुसार=अगसर होओ, बढ़ो ।

१०—अभिसर=अभिसार करो । बिथार=विस्तार ।

(११३)

रयनि काजर वम भीम भुजगम
कुलिस परप दुग्धार । प्रज्वली
गरज तरज मन रोस वरिस घन
ससञ्च पङ्क अभिसार ॥२॥

सजनी, यचन छडइत मोहि लाज ।

होएन से होओ यरु सत्र हम अगिरु
साहस मन देख आज ॥४॥

अपन अहित लेख कहइत परतेख
हृदय न पारिश्र ओर ।

चाँद हरिन वह राहु कवल सह
प्रेम पराभव थोर ॥६॥

१—रयनि=रात । वम=वमन करता है । रयनि काजर वग=रात
मध्यकार पूर्ण है । भीम=विशाल, मयानरु । भुजगम=सर्प । कुलिस
वज्र, ठनरा । दुग्धार=जिमसे बचना मुश्किल है । २—रोस=रोष, क्रोध ।
४—होएन से होओ वह=जो होना होगा, वह मले ही हो जाय ।
अगिरु=अगीकार करेंगी । ५—अहित=बुराई । लेख=रुम
मना । परतेख=प्रत्यक्ष । ओर=सीमा, अन्त । ६—हरिन=
चन्द्रमा में जो हरिन के आकार का धाता पधा है । वह=पराय ।
करना । कवल=कोट, ग्रास । सह=साथ, सहता है । पराभव=हार ।
राहु का ग्राम हो जाने पर भी चन्द्रमा हरिण को धारण किये
रहता है, प्रेम में पराजय है ही नहीं—किसी विधवा से प्रेम का
नारा नहीं हो सकता ।

तो पर जाने

चरन वेदिल फनि हित मानलि धनि
नेपुर न करण रोर ।

सुमुखि पुछ्छौ तोहि सरूप कहसि मोहि
सिनेह क फत दुर ओर ॥८॥

ठामहि रहिअ घुमि परस चिन्हिअ भूमि
दिग मग उपजु सँदेह ।

हरि हरि सिब सिब तावे जाइअ जिव
जावे न उपजु सिनेह ॥९॥

भनइ विद्यापति सुनइ सुचेतनि
गमन न करइ विलम्ब ।

राजा सिवसिंघ रूपनरायन
सकल कला अवलम्ब ॥१०॥

७—वेदिल=लपेटना, घेरना । फनि=सर्प । रोर=रान्द, भंकार । पेर में सर्प लिपट जाने पर बाला ने उसे भपना दित समझा, क्योंकि (सर्प लिपट जाने से) नूपुर भंकार नहीं करते थे । ८—सरूप=सत्य । ओर=अन्त । सुंदरी, मैं तुमसे पूछती हूँ, सब सब बताओ, प्रेम की अंतिम सीमा कहाँ पर है ? ९—दिग=दिशा । घूम घूमकर एक ही स्थान पर चली जाती हूँ । स्पर्श से ही पृथ्वी जानी जाती है (भयंकार के कारण दोख नहीं पड़ती) दिशा और राह के विषय में सँदेह है—मालूम होता है कि दिग्भ्रम हो गया है, जिसमें मैं राह भूल गई हूँ । १०—तावे=तब तक । जावे=जब तक । ११—सुचेतनि=शुद्धिमती, सुचतुरा । गमन=जाने में ।

(११४)

सखि हे, आज जाणव मोहि ।

घर गुरुजन डर न मानव

वचन चूकत नहि ॥ २ ॥

चानन आनि आनि अग लेपव ॥ ३ ॥

भूषन कण गजमोति ।

अजन विहुन लोचन-जुगुल

धरत धरल जोति ॥ ४ ॥

धवल वसन तनु भूषण

गमन करव मदा ।

जइओ सगैर गगन ऊगत ॥ ५ ॥

सहस सहस चदा ॥ ६ ॥

न हम काहुक डीठि निवारवि

न हम करव ओत । ओट

तही अभ्यास । अधिक चोरी पर सय करिअ

पहे सिनेह क सोत ॥ ८ ॥

भन विद्यापति सुनह जुवती

साहस सकल काज । १ ।

धूम सिवसिध इ रस रसमय

सोरम देवि समाज ॥ १० ॥

३—चानन=चदन । आनि=साकर । ३—विहुन=रहित ।

धवल=वजला । ४—मदा=धोरे-धीरे । ६—सागर=समय=समूचे ।

गगन=आकाश । ७—निवारवि=बचाव देगी । ओत=ओट । सोत=स्रोत ।

(११५)

प्रथम जउवन नव गरुश्र मनोभव
 छोटि मधुमास रजनि ।
 जागे गुरुजन गेह राखए चाह नेह
 संसअ पडल सजनि ॥ २ ॥
 नलिनी दल निर चित न रहए थिर
 तत घर तत हो बहार ।
 बिहि मोर बड मदा उगि जनु जाए चदा
 सुति उठि गगन निहार ॥ ४ ॥
 पथहु पथिक सका पय पय धए पका
 कि करति ओ नव तरनी ।
 चलए चाह धसि पुनु पड खसि खसि
 जाल क छेकलि हरिनी ॥ ६ ॥
 साए साए कओन बेदन तसु जाने ।
 निकुज बनहि हरि जाइति कओन परि
 अनुएन हन पचवाने ॥ ८ ॥
 विद्यापति भन कि करत गुरुजन
 नींद निरूपन लागी ।
 नयन नीर भरि धीर क्षपाए
 रयनि गमाए जागी ॥ १० ॥

१-मधुमास = चैत्र । २ नलिनी दल निर = कमल के पत्ते पर के पानी
 के सगन । बहार = बाहर । ४ सुति-सोकर । ५ पय-पग । पका = धीचढ़ ।
 ६ जाल क छेकलि = जाल में धिरी हुई । ७ साए = साखी । ८ हन = मारना ।

(११६)

अग्रहु राजपथ पुरुजन जागि ।

चाँद किरन नभमडल लागि ॥२॥

सहष न पारष नत्र नत्र नेह ।

हरि हरि सुन्दरि पडलि सदेह ॥ ४ ॥

कामिनि कपल कतहु परकार ।

पुरुष क वेस कपल अभिसार ॥ ६ ॥

धम्मिल लोल भौंट कए वध ।

पहिरल बसन आन करि छुद ॥ ८ ॥

अम्बर कुच नहि सम्बर भेल ।

वाजन-यत्र हृदय करि लेल ॥१०॥

अइसए मिललि धनि कुज क माभ ।

हेरि न चिन्हइ नागर राज ॥ १२ ॥

हेरइत माधव पडलन्हि धद ।

परसइत भाँगल हृदय क दद ॥१४॥

भनइ विद्यापति सुन वर नारि ।

दूध समुद जनि राज-मरालि ॥ १६ ॥

२—सहष न पारष=सह नहीं सकती । नत्र=नया । ५—
परकार=प्रकार, उपाय । ७—धम्मिल=वेश, बेसी । लोल=चल । भौंट
=भौंग, घोंघा, जुड़ा । चलल बेसी को (साधुओं के देना) जूड़े के
समान बाँधा । ८—आन छन्द करि=दूमी तरह से ९—अम्बर
कपड़ा । सम्बर=सँभलना । किंतु कपड़े से कसे जाने पर भी कुछ
सँभल न सके, दिप न सके । १०—वाजन-यत्र=सितार । हृदय करि

(११७)

चरन नूपुर उपर सारी ।
 मुखर मेखल कर निवारी ॥ २ ॥
 अम्बर सामर देह भूपाई ।
 चलहु तिमिर पथ समाई ॥ ४ ॥
 समुद = कुसुम , रमस , रसी ।
 अवहि उगत कुगत ससी ॥ ६ ॥
 आपल चाहिअ सुमुखि तोरा ।
 पिसुन-लोचन भम चकोरा ॥ ८ ॥
 अलक तिलक न कर राधे ।
 अग विलेपन करह बाधे ॥ १० ॥
 कुसुमित कानन कालिन्दि तीर ।
 तहाँ चलि आओल गोकुल चीर ॥ १२ ॥
 तयँ अनुरागिनि ओ अनुरागी ।
 दूषन लागत भूपन लागी ॥ १४ ॥
 भन विद्यापति सरस कवि ।
 नृपति-कुल-सरोरह रवि ॥ १६ ॥

लेल = छदय पर रख लिया । १३—५६ = सदेह । १४—५६ = दन्द,
 दुविया । १६—समुद = समुद्र । राजमरालि = राजहसिनी ।

१—२ पैर के नूपुर को ऊपर चढ़ा लो, और मुखरा (शब्द करने
 वाली) करवनी को हाथ से निवारण करो । ३—अम्बर = बल । तिमिर-
 पथ = भयङ्कर पूर्ण राह । समाई = घुमकर । ५ = समुद्र = समुद्र ।
 कुसुम = फूल । रमस = भान ३ । रसी = रम-युक्त । ७—कुगत = निःसङ्ग

(११८)

जागल घर पर निंद भेल भोर ।
सेज तेनल उठि नद किसोर ॥ २ ॥

सघन गगन हरि नयन पाँ
अवधि न पाओल छुटल राति ॥

जलधर रुचिहर सामर काँति ।
'जुवति-मोहन' वेष धर कत भाँति ॥ ६ ॥

धनि अनुरागिनि जानि सुजान ।
घोर अंधिआरे कएल पयान ॥ ८ ॥

पर-नारी पिरित क ऐसन रीति ।
चलल निभृत पथ न मानए भीति ॥ १० ॥

फुलुमित कानन कालिन्दि तीर ।
तहँ चलि आओल गोकुल घोर ॥ १२ ॥

कविसेखर पथ मीलल जाई ।
आएल नागर भेंटल राई ॥ १४ ॥

आगमन भगुम हो । मसी = चंद्रमा । ८ - विद्युत = दुष्ट । मम = भ्रमण कर रहे हैं । ९ - मजक विलक = महावर भोर टीका । गंग विलेपन = शरीर । अंगराग लगाना । करह बाधे = बाधा कर दो, मत लगाओ ।

१ - घर पर जो जागे थे, सभी सो गये । २ - नयन = नयन, तारे । ४ - रात किनारी की, इसका अन्दाज न पाया । ५ - जलधर = मेघ । रुचि हर = शोभा हरनेवाला । ६ - जुवति मोहन = युवतियों को मोहनेवाला । १० - निभृत = सुनसान पूर, अन्यकार । १४ - राई = राधा ।

(११६)

तपन क ताप तपत भेल महि-तल
 तातल बालू दहन समान ।
 चढल मनो-रथ भामिनी चलु पथ
 ताप तपत नहि जान ॥ २ ॥
 प्रेम क गति दुरवार ।
 नयन जौबनि धनि चरन कमल जिनि
 तइओ कएल अभिसार ॥ ४ ॥
 कुल-गुन-गौरव सति-जस-अपजस
 तृन करि न मानए राधे ।
 मन मधि मदन महोदधि उछलल
 बूझल कुल मरजादे ॥ ६ ॥
 कत कत बिघिन जितल अनुरागिनि
 साधल मनमथ-तत ।
 गुरु जन नयन निवारइत सु-बदनि
 पाठ करए मन मत ॥ ८ ॥
 १। केलि कलावति कुसुम-सरसि-कुल १
 कौसल करल पयान ।
 ३। जत छल मनोरथ पूरल मनमथ
 इह कविसेखर भान ॥ १० ॥

१—तपन क=सूर्य के । ताप=गर्मी । तपत=तप्त, जलती हुई । तातल=गर्मी हो गया । दहन=भस्मि । २—मनो-रथ=इच्छा-रथी रथ । भामिनी=ली । ३—दुरवार=भटल । ४—जिनि=

(१२०)

निश्च मंदिर सयँ पग दुइ चारि ।

घन घन घरिस मही भर वारि ॥ २ ॥

पय पीछर घड गद्यश्च नितम्ब ।

खसु फत वेरि नही अचलम्ब ॥ ४ ॥

बिजुरि-छटा दरसावण मेघ ।

उठए चाह जल धारक धेव ॥ ६ ॥

एक गुन तिमिर लाख गुन मेल ।

उतरहु दखिन भानु दुर गेल ॥ ८ ॥

ए हरि जानि करिअ मोयँ रोस ।

आजुक मिलम्ब दइव दिअ दोस ॥ १० ॥

समान । तदर्थो = तो भी । ५—सति = सती लियो का । ६—मवि = मध्य, मैं । महोदधि—महा समुद्र । उद्यल = उद्यलने लगा, तरंगित होने लगा । ७—मनमय = कामदेव । तव = तन्व । ८—निवारत = बचती हुई । मन्त = मन्त्र । ९—कुसुम = फूल । सरसि—सरसी, ठालाव । कुल = किनारे । कौसल = छल से । १०—टल = था ।

१—निम्ब = अचना । सयँ = से । पग = डेग । २—घन घन = घने बादल । मही भर वारि = पृथ्वी जल से भर गया । ३—पीछर = बिसपर पीर किमल आयँ । गद्यश्च = गारो । नितम्ब = घूतक । ४—खसु फत वेरि = कितनी बार गिर पड़ी । ५—मल धारा बाँध कर—मुरालधार—बरसना चाहता है । ६—तिमिर = अन्धकार । ८—उतर और दक्षिण का भानु ही दूर हो गया, दिग्दशन नहीं रहा ।

(१२१)

माधव, करिअ सुमुखि समधाने ।
 तुअ अभिसरि कणलि जत सुन्दरि
 कामिनि कर के आने ॥ २ ॥
 वरिस पयोधर धरनि वारि भरि
 रयनि महा भय भीमा ।
 तइओ चललि धनि तुअ गुन मन गुनि
 तसु साहस नहि सीमा ॥ ४ ॥
 देखि भवन-भित लिखित भुजंग-पति
 तसु मन परम तरासे ।
 से सुवदनि कर भूपइत फनिमनि
 बिहुसि आपलि तुअ पासे ॥ ६ ॥
 निअ पहु परिहरि अइलि कमल-मुखि
 परिहरि निअ कुल गारी ।
 तुअ अनुराग मधुर मद मातलि
 किनु न गुनलि बर नारी ॥ ८ ॥
 ई रस-रसिक विनोद क विन्दक
 कवि विद्यापति गावे ।
 काम प्रेम दुहु एक मत भए रहु
 कखने की न करावे ॥ १० ॥

२—के=कौन । आने=दूसरा । पयोधर=बादल ।
 सीमा=हरावनि । ५—मिति=दीवाल । गुजग=सर्प । ७—कर=
 हाथ । फनिमनि=सर्प के मणि को । ७—पहु=प्रभु, प्रीतम । गारी—

(१२२)

राहु मेघ भए गरसल छर ।

पथ परिचय दिवसहि भेल दूर ॥ २ ॥

नहि बरिसए अवसन नहि होए ॥

पुर परिजन सचर नहि कोए ॥ ४ ॥

चल चल सुन्दरि कर गए साज ।

दिवस समागम सपजत आज ॥ ६ ॥

गुरुजन परिजन डर कर दूर ।

बिनु साहस अभिमत नहि पूर ॥ ८ ॥

एहि ससार सार बसु एक ।

तिला एक सगम, जाय जिव नेह ॥ १० ॥

भनइ विद्यापति कविकंठहार ।

कोटिहुँ न घट दिवस-अभिसार ॥ १२ ॥

गाली, शिकायत । १०—कसने = कब क्या नहीं कराता ।

१—मेघ ने राहु बनकर सूर्य को ग्रस लिया है—मेघ के कारण सूर्य हीनप्रभ हो गये है । २—पथ परिचय=राह की पहचान । दिवसहि=दिन में ही । ३—अवसन=अवसन्न समाप्त । मेघ न बरसता है, न झुल जाता है । ४—गाँव में लोग नहीं आते-जाते । ५—कर गए साज=जाकर साज करो—शृंगार करो । ६—दिवस-समागम=दिन का मिलन । सपजत=सम्पूर्ण होगा । ८—अभिमत=मनोवाञ्छा । ९—सार=सर्व, सत्य । बसु=बसु । १०—एक छल के लिये रति बढ़ा और जीवन भर प्रेम करना । ११—कोटिहुँ=करोड़ो वर्षादि करने पर भी । न घट=न घट सकता, न हो सकता ।

(१२३)

आज पुनिम तिथि जानि मोयँ अएलिहुँ ।

उचित तोहर अभिसार ।

देह-जोति ससि-किरन समाइति

के बिभिनावए पार ॥ २ ॥

सुन्दरि अपनहु हृदय विचारि ।

आँख पसारि जगत हम देखलि

के जग तुअ सम नारि ॥ ४ ॥

॥ तोहँ जनि तिमिर हीत कए मानह

आनन तोर तिमिरारि ।

सहज विरोध दूर परिहरि धनि

चलु उठि जतए मुरारि ॥ ६ ॥

दूती वचन हीत कए मानल

चालक भेल पँचवान ।

हरि-अभिसार चललि घर कामिनि

विद्यापति कबि भान ॥ ८ ॥

१—पुनिम = पूर्णिमा । अएलिहुँ = मैं आई । २—देह

जोति = शरीर की काति । ससि किरन = चन्द्रमा की किरण (में) ।

समाइति = घुस जायगी, मिल जायगी । के = कौन । बिभिनावए पार =

विभिन्न कर सकता है, भलग कर सकता है । ५—जनि = नहीं ।

तिमिर = अन्धकार । हीत = मित्र । आनन = मुख । तिमिरारि = अन्धकार

का हनु, चद्र । ६—जतए = जहाँ । ७—चालक = प्रेरक

पँचवान = काम । हरि अभिसार = कृष्ण से गुप्त मिलन करने को ।

(१२४)

अरुन किरन किटु अम्बर देख ।

दीपक सिखा मलिन भए गेल ॥ २ ॥

बूढ तज माघन जयवा देह ।

राखए चाहिअ गुप्त सनेह ॥ ४ ॥

दुरजन जाएत परिजन फान ।

सगर चतुरपन होएत मलान ॥ ६ ॥

भमर कुसुम रमि न रह अगोरि ।

फेओ नहि बेकन करण निअ चोरि ॥ ८ ॥

अपनय धन हे धनिक घर गोप ।

परक रतन परगट कर कोष ॥ १० ॥

फाव चोरि जौं चेतन चोर ।

जागि जाए पुर परिजन मोर ॥ १२ ॥

भनइ विद्यापति सखि कह सार ।

से जीवन जे पर उपकार ॥ १४ ॥

१—अरुन-किरन = सूर्य की किरण । अम्बर = आकाश । २—सिखा = लो, टेम । ३—तज = छोड़ो । जयवा देह = जाने दो । ४—गुप्त = गुप्त, छिपा हुआ । ६—सगर = सब । मलान = मलान, मलिन । ८—भमर = भौंरा । रमि = रमण कर, बिहार कर । अगोरि = अगोरकर रहना । ९—बेकन = व्यक्त, प्रकट । १०—१०—धनी लोग अपने धन को भी छिपाकर रखते हैं । फिर दूसरे के धन को कहीं कहीं प्रकट करता है ? ११—फाव = फवना, शोभना । चेतन = चतुर । १२—सार = सार ।

दुहु रुप-लावनि मनमथ मोहनि (१२५)

निरखि सयन भुलि जाय ।

रजनि-जनित रति विशेष अलापन

अलस रहल दुहु गाय ॥ २ ॥

चाँचर कुन्तल ताहे कुसुम-दल

लोलत आनहि भाँति ।

दुहु दुहु हेरि मुख हृदय बाढ़ए सुख

घोलत भूलत पाँति ॥ ४ ॥

निज निज मन्दिर नागरि नागर

चलइत कर अनुबन्ध ।

बिरह-विषानल दुहु तनु जारल

लोचन लागल धन्द ॥ ६ ॥

भीतक-चीत पुतुलि सन दुहु जन

रहल बिदायक बेला ।

प्रेम-पयोनिधि उछलि उछलि पड

चेतन अचेतन भेला ॥ ८ ॥

दुहु जन चीत-रीत हेरि सहचरि

छन छन गगनहि चाय ।

रजनि पोहाओल सब जन जागल

से उर अधिक डराय ॥ १० ॥

सेखर बुझि तब करि कत अनुभव

दुहु संग भग कराव ।

निज निज मन्दिर गमन करल दुहु

गुरुजन भेद न पाव ॥ १२ ॥



ॐ श्री (१२६)

मन्दिर अल्लो सहचरि मेलि ।
परसंगे रजनि अधिक भइ गेलि ॥ २ ॥
जय सखि चललहु अप्पन गेह ।
तब मभु नौद भरल सब देह ॥ ४ ॥
सूति रहल हम करि एक चीत ।
द्वैध-विपाक भेल विपरीत ॥ ६ ॥
न बोल सजनि सुन सपन सम्वाद ।
हंसहत केहु जनि कर परिवाद ॥ ८ ॥
विपाद पडल मभु टदयक मांझ ।
तुरित घाँचायलौ नीतिक काज ॥ १० ॥
एक पुरुष पुनु आओल आगे ।
कोप अरुन आँखि अधरक दागे ॥ १२ ॥
से भय चिकुर चीर आनहि गेल ॥ १४ ॥
कपाल काजर मुख सिंदुर भेल ॥ १६ ॥
अतर कहव केह अपजस गाय ।
विद्यापति कह के पतिआव ॥ १८ ॥

—अल्लो = मै श्री । सहचरि = सखी । २—परसंगे =
मै । रजनि = रात । ४—सूति रहल = सो रही । चीत
= विच एकाम करके । ६—विपाक = फल । ८—सपन
= परिवाद = प्रवाद, शिकायत । १०—घाँचायलौ =
दिया । नीतिक काम = नीती का बपन । १२—अरुन
= अपरक दागे = ओठ पर चिह्न बना दिया ।

१२७ (१२७)

कुसुम - तोरु गेलहुँ जाहाँ

भमर - अधर खडल ताहाँ ॥ २ ॥

तैं चलिपलहुँ जमुना तीर ।

पवन हरल हृदय - चीर ॥ ४ ॥

ए सखि सरूप कहल तोहि ।

आनु किछु जनि बोलसि मोहि ॥ ६ ॥

हार मनोहर बेकत भेल ।

उजुर उरग ससअ लेल ॥ ८ ॥

तैं धसि मजूर जोडल भाँप ।

नखर गाडल हृदय काँप ॥ १० ॥

भन विद्यापति उचित भाषा ।

वचन-पाटव कपट लाग ॥ १२ ॥

१३—से मय = उस घर से । चिकुर = केरा । चीर = साड़ी । आनहि

गेल = दूसरे ही ढंग का हो गया । १४—कपाल = मस्तक । १५—

भतर = हृदय की बात । १६—पतिभाव = विश्वास करेगा ।

१—कुसुम = फूल । गेलहुँ = मैं गई । २—भमर = भौरा ।

अधर = ओष्ठ । ३—तैं = वहाँ से । ४—हृदय चीर—वचन स्थल

की साड़ी, भचल । ५—सरूप = सत्य । आनु = भय । ७—

बेकत = व्यक्त, प्रकट । उजुर = उज्ज्वल । उरग = सर्प । ८—भाँप

खोडल = कपट पहा । १०—नखर गाडल = नख गड़ा गया ।

१२—पाटव = पटुता, चतुरता ।

३१ (१२८)

सखि दे तोहे हमर बहु सेवा ।
 ऐसनि घानि कबहु जनि मोलधि
 जाति कुल किए मोद लेवा ॥ २ ॥
 गोकुल नगर कान्हू रति लम्पट
 जीवन सहज हमारा ।
 तुहु सखि रभसि मोहे जनि मोलधि
 लोक करव पतिधारा ॥ ४ ॥
 केसर कुसुम हेरि हम कौतुक
 भुज जुग मेटल ताहि ।
 दाडिम भरम पयोधर ऊपर
 पडलहु कीर लोभादि ॥ ६ ॥
 चकित उभय भुज इति-उति पेखल
 शरीर तैं वेस भय गेल आन ।
 इथे परिचाद कहसि मोहे वैरिनि
 इह कवि सेखर भान ॥ ८ ॥

१—दे सखि, मैं तुम्हारी बहुत सेवा करूँगी । २—गानि = मोली । गानि कुल = मेरा जाति-कुल क्यों होगी, क्यों नष्ट करोगी । ४—रभसि = दिल्लगी में । पतिधारा = विरवात । ५—केसर के फूल देखकर, कौतुकवश, उसे दोनों हाथों से मलल दिया [जिस कारण मेरे हाथों में भगवत लगे दीख पड़ते हैं] । ६—भनार समझकर दुगो मेरे कुचों पर लुमा गये [उनकी चोचों के बाधात से कुच पतविषय हो गये, जिसे हम नष्ट रेखा समझ रही हो] । ७—उभय =

नदी

(१२६)

खरि नरि-वेग भासलि नार्द । नौका-मह-नल

धरप न पारथि चाल कन्हार्द ॥ २ ॥

ते धसि जमुना भेलहुँ पार ।

फूटल बलआ दूटल हार ॥ ४ ॥

: सखि ए सखि न धोल मद ।

वेरह बचन बाढ़प दद ॥ ६ ॥

कुडल खसल जमुन माँझ ।

ताहि जोहइत पडलि साँझ ॥ ८ ॥

प्रलक तिलक तँ बहि गेल ।

सुध सुधाकर बदन भेल ॥

तटिनि तट न पाइअ घाट ।

तँ कुच गडल कठिन काँट ॥ १२ ॥

भन विद्यापति निअ अपसाद ।

बचन-कओसल जितिअ बाढ़ ॥ १४ ॥

दोनो । मुख = क्षय । तँ = इससे । वेप = रूप । भान = दूसरा ।

१—खरि = तीव्र । नरि = नदी । भासलि = भस गई, ब
चली । नार्द = नाव, नौका । ३—धसि = तैरकर । ४—बलआ =
चूड़ी । ५—मद = गुरी बात । ६—वेरह = विरस, कठोर
दद = भगड़ा । ७—खसल = गिर पड़ा । ८—जोहइत = खोजने में
९—प्रलक = भालता, महावर । तिलक = टीका । १०—सुध =
शुद्ध, निष्कलंक । सुधाकर = चंद्रमा । ११—तटिनि = नदी । घाट =
राह । १२—गडल = गड़ गया । १३—भवसाद = पराश्रय

(१३०)

ननदी सरूप निरूपह दोसे ।
बिनु बिचार वेभिचार बुझओवह
सासू करतन्हि रोसे ॥ २ ॥
कौतुक कमल नाल सयँ तोरल
करण चाहल अबतसे ।
रोष कोष सयँ मधुकर आओल
तेहि अधर कर दसे ॥ ४ ॥
सरवर-घाट बाट कंटक-तरु
देखहि न पारल आगू ।
साँकरि घाट उबटि कहु चललहु
तेँ कुच कटरु लागू ॥ ६ ॥

- १४—बचन कभोसल = बचन चावुरी । बाद = मुकदमा ।
१—सरर = स्वरूप, भाकृति । निरूपह = निरूपण करती
है । मेरी ननद, तुम भाकृति देखकर मुझे दोष लगाती हो ।
२—वेभिचार = व्यभिचार, पाप कर्म । बुझओवह = समझाओगी ।
रोसे = क्रोध । ३—नाल सयँ = गुणाल से । अबतसे = सिर का
आभूषण । ४—रोष = क्रोधित होकर । कोष = कमल का भीतरी भाग ।
मधुकर = भौरा । तेहि = उसीने । दसे दह = काट लिया (जिससे
कोष मलिन हो गया) ५—सरवर = शम्भू । बाट = राह । पटक
= काँचों के पेड़ । देखहि न पारल = देख न सकी । आगू =
पहले । ६—साँकरि = सक्कीर, पतली । तेँ = इसमें । कुच = स्तन ।

से चलि गेल ताहि लप चललिहु

ते पथ भेल अनेआई ॥ ६ ॥

सकर-बाहन खेडि खेलाइत

मेदिनि-बाहन आगे ।

जे सब अछलि संग से सब चललि भंग

उवरि अपलहुँ अति भागे ॥ ८ ॥

जाहि दुइ खोज करइछधि सासुन्हि

से मिलु अपना सगे ।

भनइ विद्यापति सुन बर जौबति

गुप्त नेह रति-रगे ॥ १० ॥

६—से=वह (जन वृष्टि) चली गई तब उसे (बल) चली । ते=इस कारण । पथ=राह । अनेआई=अन्याय । ७—स बाहन=बैल । खेडि खेलाइति=खेल कर रहा था, आपस में रहा था । मेदिनि बाहन=सर्प । आगे=आगे था । ८—अछलि थी । भंग=छिड़ककर । उवरि अपलहुँ=उपर आइं, वच आ भागे=भाग्य से ही । ९—जिन दोनों (जल और घड़ा) की सासुजी कर रहा है, वे दोनों अपने साथियों से मिल गये—(वर्षा रही थी कि घड़ा फूट गया घड़े का पानी वर्षा के पानी में मिल गया और मिट्टी का घड़ा मिट्टी में मिल गया) । १०—जौबति=युवति गुप्त नेह=गुप्त प्रेम । रति रगे=रति लीड़ा ।

When passion and philosophy meet in a single individual, we have a great poet —Browning

मान



(१३२)

खनहि खन महँधि भइ किछु अरुन नयन कइ
कपट धरि मान सम्मान लेही ।
कनक जयँ प्रेम कसि पुनु पलटि बाँक हसि
आधि सर्यँ अधर मधु-पान देही ॥ २ ॥
अरेरे इन्दुमुखि अरु न कर विश्व हृदय खेद हर
कुसुम सर रग ससार सारा ॥ ३ ॥
वचन वस होसि जनु सुसरि भिन्न होइत तनु ।
सहज वरु छाडि देव सयन-सीमा ।
प्रथमे रस भंग भेल लोभे मुख सोम गेल
बाँधि भुज पास पिय धरय गीमा ॥ ५ ॥
जदि नयन-कमल-वर मुकन कल कान्ति धर
खर-नखर-चात कइ सेहे बेला ।
परम पद लाभ सम मोद चिर हृदय रम
नागरी सुरत-सुख अमिअ मेला ॥ ७ ॥
१ सरसकवि सुरस भन चारु तर चतुरपन
नारि आराहिअइ पचवाना ।
२ सफल जन सुजन गति रानि लखिमाक पति
रूपनारायन सियसिध जाना ॥ १ ॥

[मान शिवा] १—महँधि = मदेगा । ३—भइ = अलपट्टन ।
कुसुम सर = कामदेव । ८—गीमा = धीमा, गारदन । १—यदि नयन
रूपी कमल कली का रूप शरण करे—जाये निराले सगे—तो वस समय
नख का बिकट प्रहार करना ।

(१३३)

लोचन अरुत घुमल बड भेद ।

रयनि उजागर गुरुअ निवेद ॥ २ ॥

ततहि जाह हरि न करह लाथ । १३३

रयनि गमओलह जन्हिने साथ ॥ ४ ॥

कुच कुकुम माखल हिय तोर ।

जनि अनुराग राँगि करु गोर ॥ ६ ॥

आनक भूपण तोर कलङ्क ।

बड ओ भेद मन्द ओ परसङ्ग ॥ ८ ॥

॥ चिटि-गुड चुपडलि राडक पोरि ।

लओले लाथ बेकत भेल चोरि ॥ १० ॥

भनइ विद्यापति बजबहु वाद ।

बड अपराध मौन पण साथ ॥ १२ ॥

१—२—उजागर=जागरण । निवेद=जनाता है । लाल
जाँखों को देखकर मैंने सारा भेद समझ लिया, वे रात का अधिक
जागरण प्रकट करती हैं । “रजनि जनिन गुरुजागर राग कषायि-
समलस निमेषम्—गीतगोविन्द ।” ३—ततहि जाह=यही बाबो ।
लाथ=बहाना । ५—६—(उसके) कुच का लगा केसर तुम्हारे
हृदय में लिपटा हुआ है । मानो अनुराग के रंग में रँग कर (काले
वच रत्न को) गोरा बना दिया हो । ७—आनक=दूसरे का ।
८—परसङ्ग=प्रसङ्ग, संगति । ९—चिटि गुड=गुड़ चीथी । राड
=शुद्ध की एक उपजाति । पोरि=घर । १०—लाथ लओले=बहाना
पर । बेकत=व्यक्त । ११—बजबहु=बोलना । वाद=व्यर्थ ।

(१३४)

कुसुम लश्रोतह नख पत गोइ ।
अधरक काजर अपलह धोइ ॥ २ ॥

तइओ न छपल कपट-बुधि तोरि ।
लोचन अरुन वेकत भेल चोरि ॥ ४ ॥

चल चल कान्ह बोलइ जनु आन ।
परतल चाहि अधिक अनुमान ॥ ६ ॥

जानओ प्रकृति बुझओ गुनसीला ।
जस तोर मनोरथ मनसिज लीला ॥ ८ ॥

बचन नुकाइह वेकतओ काज ।
तोय हँसि हेरह मोय बह लाज ॥ १० ॥

अपथहु सपथ बुझावह रात्रे ।
कोन परि सेओम सठ अपराधे ॥ १२ ॥

मनइ बिद्यापति पिअ अपराध ।
उदघट न कर मनोरथ साध ॥ १४ ॥

१—नायिका ने जो अपने नख से बकोटकर तुम्हारे बच-

स्पल पर चिह्न बना दिया था, वैसे कुसुम लगाकर दिया लाये हो ।

२—अधरक=भोछ का । अपलह=भाये हो । ३—छपल=छिप सका ।

४—अरुन=लाल । वेकत=व्यक्त, प्रकट । ५—आन=अन ।

६—परतल=प्रत्यक्ष । ७—प्रकृति=स्वभाव । ८—जस=जैसा ।

मनसिज=कामदेव । ९—नुकाइह=छिपाते हो । १०—तुम हँस

कर (मेरी ओर) देखते हो, बिना मुझे सज्जा माती दे ।

११—अपथहु=बुरी राह जाने पर भी । १२—कोन परि=किस प्रकार ।

सेओम=समा करोगी । १४—उदघट=प्रकाश । साध=सज्जा ।

(१३५)

आध आध मुदित भेल दुहु लोचन
घचन चोलत आध आधे ।

रति-आलस सामर तनु आमर ^{कति}
हेरि पुरल मोर साधे ॥२॥ ^{नैल}

माधव, चल चल चल तन्हि ठाम ।

जसु पद-जावक हृदयक भूपन
अबहु जपत तसु नाम ॥४॥

कत चदन कत मृगमद कुकुम
तुअ कपोल रहु लागि ।

^{२५५१७} देखि सौति-अनुरूप कपल विहि
अतए मानिए बहु भागि ॥६॥

१—मुदित=मुँरे हुए । २—रति-आलस=काम-क्रीडा-
जनित थकावट । सामर=श्यामला । आमर=मलिन । हेरि=
देखकर । साधे=दोसला ३—चल=जाओ । तन्हि ठाम=वसी
जाइ । ४—जसु=जिसके । पद जावक=पैर का महावर । जिसके
पैर का महावर तुम्हारे हृदय का आभूषण हुआ है, वसीका नाम
तुम अब भी जप रहे हो [अकस्मात् कृष्ण के मुँह से उस नायिका
का नाम निकल गया था] । ५—कत=कितना । मृगमद=कनूरी ।
कुंकुम=केशर । कपोल=गोल । ६—अनुरूप=समान ।
६—मैं तो इसीमें अपना सौभाग्य मानती हूँ कि ब्रह्मा ने मुझे
एक योग्य सौत दी है ।

सुन सुन सुन्दरि (१३६) कर अवधान ।

बिनु अपराध कहसि काहे आन ॥२॥

पुजल पसुपति जामिनि जागि ।

गमन बिलम्ब भेल तेहि लागि ॥३॥

लागल मृगमद हुंकुम दाग ।

उचरइत मंत्र अधर नहि राग ॥४॥

रजनि उजागर लोचन घोर ।

ताहि लागि तोहे मोहे बोलसि चोर ॥५॥

नवकमिसेपर कि कहय तोय ।

सपथ करहु तय परतीत होय ॥६॥

१—अवधान = मनोयोग ध्यान देना । कहसि काहे आन = दूसरी

बान क्यों कह रही हो । पसुपति = महादेव । जामिनि = रात ।

४—गमन = जाने में, चलने में । तेहि लागि = उसी लिये । ५—६—

उचरइत = उच्चारण करने । राग = लालिमा । करतूरी और कोशर से

शिर की पूजा की शरीर पर चढ़ीके बिद्ध हैं । बार बार मंत्र

उच्चारण करने के कारण ओष्ठ की ललई नट हो गई । ७—रजनि =

रात । उजागर = जागरण । घोर = भयानक (सात) । ८—इसी

लिय तुम मुझे चोर कहती हो । ९—१०—निषावति कहते हैं—तुम

क्या कहोगे, जब रापथ करो, तो तुम्हारी बातों पर विश्वास हो ।

[अगले पद में श्रीकृष्ण की विचित्र रापथ पदिये और गौर कीजिये]

(१३७)

प धनि माननि करह सुजात ।

तुआ कुच हेम-घट हार भुजगिनि

ताक उपर धर हात ॥ २ ॥

तोहे छोडि जदि हम परसव कोय ।

तुआ हार-नागिनि काटव मोय ॥ ४ ॥

हमर बचन यदि नहि परतीत ।

बुझि करह साति जे होय उचीत ॥ ६ ॥

भुज-पास बाँधि जघन-तर तारि ।

पयोधर-पाथर हिय दह भारि ॥ ८ ॥

उर-कास बाँधि राख दिन-राति ।

बिद्यापति कह उचित इह साति ॥ १० ॥

१—धनि=धाला । करह सजात=मनत करो, मोष छोड़ो ।

२—हेम घट=सोने का घड़ा । भुजगिनि=सर्पिणी । ताक=हसके ।

[यदि विश्राम न हो तो शपथ करा लो । सोना छूकर शपथ खाना प्रामाणिक माना जाता है, सो] वेरे कुच रूपी सोने के घड़े तथा हार रूपी सर्पिणी के ऊपर हाथ रखकर मैं शपथ खाता हूँ । ३—

छोड़ि=छोड़कर । परसव=स्पर्श करेगा । कोय=किसी को ।

६—साति=शास्ति, दण्ड । ७—भुज पास=भुजा रूपी जमीर ।

जघन तर=बाँधों के बीच में । तारि=ताड़ना करके, खूब ठोक्-

पीट के । ८—स्तनरूपी भारी पथर हृदय पर रख दो । ९—उर

कास=हृदय रूपी जेलखाने में । राख=रखो । १०—६=यह ।

साति=शास्ति, दण्ड ।

(१३८)

अरुन पुरव दिसा बितलि सगरि निस्ता
गगन मगन भेला चदा ।

मूदि गेलि कुमुदिन तइयौ तोहर धनि
मूदल मुख अरविदा ॥२॥

चांद बदन कुबलय दुहु लोचन
अधर मधुरि बिरमान ।

सगर सरीर कुसुम तौय सिरिजल
किए दहु हृदय पखान ॥३॥

अस वति करह ककन नहि पहिरह
हार हृदय भेल भार ।

गिरि सम गरुअ मान नहि मुंचसि
अपरर तुअ वेवहार ॥४॥

अवगुन परिहरि हेरह हरलि धनि
मानक अवधि बिहान ।

राजा सिरसिघ रूप नरायन
कवि विद्यापति मान ॥५॥

१—अरुन=लाल । बितलि=बीत गई । सगरि=समग्र, समूची । मगन=मग्न हुए जाना । २—अरविदा=कमल । ३—बदन=मुख । कुबलय=कमल । मधुरि=एक लाल फूल । ४—कुसुम=फूल । सिरिजल=बनाया । किए दहु=क्यों दिया । पखान=परवर । ५—अस=ऐसा । वति=क्यों । ककन=कंगन । ६—गरुअ=भारी । मुंचसि=छोड़ती हो । ७—बिहान=मात काल ।

(१३६)

मदन-कुज पर बइसल नागर

वृन्दा सखि मुख चाहि ।

जोड़ि जुगुल कर विनति करण कत

तुरित मिलावह रहि ॥ २ ॥

हम पर रोखि बिमुख भइ सुन्दरि

जबहु चललि निज गेहा ।

मदन-हुतासन मभु मन जारल

जीव न बाँधइ थेहा ॥ ४ ॥ २

तुअ अति चतुर सिरोमनि नागर

तोहे कि सिखाओव वानि ।

तुहु बिनु हमर मरम कोन जानत

कइसे मिलाएव आनि ॥ ६ ॥

चन्दन चाँद पवन भेल रिपु सम

वृन्दावन धन भेल ।

कोकिल मयूर झकार देत कत

मभु मन मनमथ सेल ॥ ८ ॥

छल छल नयन वयन भरि रोअत

चरन पकडि गहि जाव ।

हा हा से धनि हमए न हेरव

सिंह भूपति रस गाव ॥ १० ॥

१—चाहि=देखना । २—राहि=राधा । ४—मदन हुता

सन=कामदेव रूपी अग्नि । जीव न बाँधइ थेहा=जीव स्थैर्य

(१४०)

माधव, इ नहि उचित विचार ।
जनिक पहन धनि काम-कला सनि
से किए कर व्यभिचार ॥ २ ॥
मानहु ताहि अधिक कए मानव
हृदयक हार समान ।
कोन परजुगति आन के ताकव
की धिक तोहर गेआन ॥ ४ ॥
कृपन पुरुष के केओ नहि निरु कह
जग भरि कर उपहास ।
निज धन अछइत नहि उपभोगव
केवल परहिक आस ॥ ६ ॥
भनइ विद्यापति सुनु मधुगपति
इ धिक अनुचित काज ।
मांगि लायव वित से जदि हो नित
अपन करय कोन काज ॥ ८ ॥

नहीं बाँधते, प्राण स्थिर नहीं होते । ८—मनमय=धामदेव ।

२—जनिक=जिसकी । पहन=पेनी । सनि=समान ।

४—परजुगति=प्रयुक्ति । आन के ताकव=दूमरे की देखना । की=

वया । धिक=दे । २—कृपन=सूय । निक=नीक, अप्रज्ञा ।

उपहास=हँसी, । ६—मदरन=रहते । परहिक=दूमरे की ।

८—यदि मांगा हुआ पग नित्य रहता—यदि मैगनी की बीज से ही काम
चल जाता—तो लोग अपने धन के लिये क्यों कष्ट उठाते ?

(१४७)

मानिनि आब उचित नहि मात ।-

पखनुक रग पहन सत लगइछ

जागल (पए) पंचगान ॥ २ ॥

जुडि रयनि चक्रमक करु चांदनि

पहन समय नहि आन ।

पहि अवसर पिय-मिलन जेहन सुख

जकरहि होए से जान ॥ ४ ॥

रभसि-रभसि अलि बिलसि-बिलसि करि

करए मधुर मधु एन ।

अपन-अपन पहु सग्रहु जेमाओलि

भुखल तुअ जजमान ॥ ६ ॥

त्रिबलि तरंग सितासित सगम

उरज सम्भु निरमान ।

आरति पति मगइछ परतिग्रह दात

करु धनि सेवस दान ॥ ८ ॥

दीपक दिप सम थिर न रहए मन

दड़ करु अपन गेआन ।

सचित मदन वेदन अति दारुन

बिद्यापति कथि मान ॥ १० ॥

२—इस समय का सभा (रग) कुछ ऐसा मालूम होता है, मानों कामदेव सोने से जग पड़ा हो । ३—जुडि = पीतल । ४—जेहन = जैसा । जेकरहि = जिसको । ६—रभसि = उमग में आकर ।

(१४६)

मानिनि हम कहिए तुअ लागी ।

नाह निकट पाइ जे जन बचप
तेकर बडाहि अभागो ॥ २ ॥

दिनकर-बन्धु कमल सब जानप
जल तेहि जीवन होई ।

पङ्क बिहिन तनु भानु सुखावप

जल पटाव वर कोई ॥ ४ ॥

नाह समीप सुषद जत वैभव

अनुकूल होयत जोई ।

तेकर विरह सकल सुख सम्पद
खन खन दगधप सोई ॥ ६ ॥

तुहु धनि गुनमति बूझि करह रति

परिजन ऐसन भास ।

सुनइत राहि हृदय भेल गदगद

अनुमति कएल प्रगास ॥ ८ ॥

बंदोबा । १२—काले तमाल के पृष्ठ को चूने से पोत दिया और

(बाले) मयूर तथा कोयल को खरेद दिया । १३—विकुर=कोरा ।

मुकुर=आर्चना । १४—सब चूर=सौ डकड़े । १५—गाम=समूह ।

मुक=सुगा । रोसाइ=क्षोभित होकर । फटिक=स्फटिक पत्थर ।

१७—रेनु=धूल ।

१—तुम लागी=तुम्हारे लिये । २—नाह=पति । ३—दिनकर=सूर्य ।

४—बिहिन=हीन । भानु=सूर्य । पटाव=छिड़कना । ६—दगधप=जलाशाई ।

स्थावर जगम कीट पतंगम
सुखद जे सकल सरीरे ।

कागद पत्र परस जस्रो नासए
इथे लागि निन्दह नीरे ॥ ८ ॥

खन एन सकल कुसुम मन तोषए
निसि रहु कमलिनि सगे ।

चम्पक एक जइओ नहि चुम्भए
इथे लागि निन्दह भृगे ॥ १० ॥

पाँच पंच गुन दस गुन चौगुन
आठ दुगुन सपि माफे ।

विद्यापति कान्हू आकुल तो त्रिनु
विषाद न पावसि लाजे ॥ १२ ॥

७—स्थावर = वृक्ष आदि अचल जीव । जगम = मनुष्य आदि चलनेवाले जीव । कीट = कीड़े । पतंगम = पतंगे आदि । ८—कागद पत्र = कागज के पत्रे । परस = स्पर्श । जस्रो = यदि । नीरे = पानी । ९—खन = चण । कुसुम = फूल । तोषए = सन्तुष्ट करता है । निसि = नान । १०—चम्पक = चम्पा । जइओ = यदि । भृग = भौरे को । ११— $(५ \times ५ \times १० \times ४ \times ८ \times २) = १६०००$ सल्लियों के मध्य में । १२—कान्हू = भोक्तृ । विषाद = दुःख । पावसि = पानी हो ।

“सा कविता सा वनिता यस्या अवयवेन दर्शनेनापि ।
कविद्वय विद्वद्वय सरल सरल च सत्वर भवति ॥”

(१४८०),

अखिल लोचन तम, ताप विमोचन
उदयति आनन्द कन्दे ।

एक नलिनि-मुख मलिन करणजनि
इथे लागि निन्दह चन्दे ॥ २ ॥

सुन्दरि, वृक्षल तुअ प्रतिभाति ।
गुन गन तेजि दोष एक घोषसि
अन्त अहीरनि जाति ॥ ४ ॥

सकल जोव-जन जीव समीरन
मन्द सुगन्ध सुसीते ।
दीपक जोति परस जदि नासप
इथे लागि नीन्द मारुते ॥ ६ ॥

अलि = मोटा । ६—पहु = प्रीतम । जेमाओलि = खिलाया । ७—
त्रिवली की तग में गंगा-यमुना (धार और रोमावलि) का सगम
हुमा है, जहाँ कुच रूपो शिव की भी स्थापना है । ८—आरति =
भारत, व्याकुल । परतिग्रह = प्रतिग्रह = दान । ९—दीपक दिप =
दीपक की शिखा, लौ । १०—मदन = कामदेव ।

१—अखिल = समूचा (ससार) । तम = अधिकार । ताप =
गर्मी, ज्वाला । विमोचन = नाश करनेवाला । उदयति = उगता
है । कद = मूल, जड़ । २—नलिनि = कमलनी । इथे = इसलिये ।
निन्दह = निंदा करती हो । ३—प्रतिभाति = बुझि । ४—घोषसि =
बार बार कहना । ५—जीव जन = प्राणी । जाव = प्राण । समीरन =
वायु । ६—परस = स्पर्श । नीन्द = निद्रा करना । मारुते = पवन की ।

स्थावर जगम कीट पतंगम
सुखद जे सकल सरीरे ।
कागद पत्र परस ज्यों नासर
इथे लागि निन्दह नीरे ॥ ८ ॥
खन खन सकल कुसुम मन तोष
निसि रहु कमलनि सगे ।
चम्पक एक जइयो नहि चुम्प
इथे लागि निन्दह भृगे ॥ १० ॥
पाँच पंच गुन दस गुन चौगुन
आठ दुगुन सखि माफे ।
विद्यापति कान्हू आकुल तो रिनु
त्रिपाद न पावमि लाजे ॥ १२ ॥ ८१ ॥ ११

७—स्थावर = वृक्ष आदि अवल जीव । जगम = मनुष्य आदि
चलनेवाले जीव । कीट = कीड़े । पतंगम = पतंगे आदि । ८—
कागद पत्र = काज क पत्रे । परस = स्वरां । ज्यों = यदि । नीर =
पानी । ९—खन = क्षण । कुसुम = फूल । तोष = सन्तुष्ट
करता है । निसि = शन । १०—चम्पक = चम्पा । जइयो =
बढ़ी । भृग = भौरे को । ११—(५ × ५ × १० × ४ ×
८ × २) = १६००० सखियों क मध्य में । १२—काहु = शोकपूर्ण ।
त्रिपाद = दुष्ट । पावमि = पत्ती हो ।

“सा कविता सा वनिता परया मय्येन दर्शनेनानि ।
कविहृदय विट्टयं सरल वरल च सवर मयनि ॥”

(१४६)

वानन भरम सेवलि हम सजनी
 पुरत सब मन काम ।
 कंक दरस परस भेल सजनी
 सीमर भेल परिनाम ॥ २ ॥
 एकहि नगर वसु माधव सजनी
 पर-भामिनि वस भेल ।
 हम धनि पहुनि कलावति सजनी
 गुन गौरव दुर गेल ॥ ४ ॥
 अभिनव एक कमल फुल सजनी
 दीना नीमक डार ।
 सेहो फुल श्रोतहि सुखायल छथि सजनी
 रसमय फुलल नवार ॥ ६ ॥
 विधि बस आज आपल सजनी
 एत दिन श्रोतहि गमाय ।
 कोन परि करब समागम सजनो
 मोर मन नहि पतिश्राय ॥ ८ ॥
 मनई विद्यापति गाओल सजनी
 उचित आश्रोत गुनसाह ।
 उठ बधाव करु मन भरि सजनी
 आज आश्रोत घर नाह ॥ १० ॥

१—वानन=वन । भरम=अम से । सेवलि=सेवा को ।
 २—कंक=कौंदा । सीमर=सेदल । ३—पर-भामिनि=

(१५०)

सजनी अपद न मोहि परबोध ।
 तोड़ि जोड़िअजहाँ गाँठ पड़ए तहाँ
 तेज तम परम विरोध ॥ २ ॥
 सलिल सनेह सहज थिरु सीतल
 इ जानए सब कोरि ।
 से जदि तपत कए जतने जुडाइअ
 तइओ विरत रस होई ॥ ४ ॥
 गेल सहज हे कि रिति उपजाइअ
 कुल—ससि नीली रग ।
 अनुभवि पुनु अनुभवए अचेतन
 पड़ए हुतास पतग ॥ ६ ॥

दूरे की स्त्री । ४—परबोध=बेसी । दूर गेल=दूर हो गया । ५—एक
 तरे कमल के फूल को (अर्थात् मुझे) नीम की डाली पर डाल दिया,
 वह वही सूख गया, और नेवार का फूल रसयुक्त होकर खिला । ७—
 थि=है । ओतहि=वही । ८—समागम=मैट । १०—आभोत-आवेगा ।
 १—अपद=अस्थान, अनुचित रूप से । परबोध=समझाओ ।
 २—सहज सीतल थिरु=स्वभावतः ही ठंडा है । ४—तपत
 ए=गर्म करके । जतने=बहुत अधिक । जुडाइअ=ठंडा कीजिये ।
 इओ=तोभी । विरत रस=रसहीन । ५—कुल कही चंदमा में
 लोला धन्वा पड़ जाने पर तथा कि ना भी प्रयत्न करने पर वषा वसुमें
 शमाविक रग उत्पन्न हो सकता है । ६—अनुमवि=अनुभव
 करके । पुनु=पुनः । अनुभवए=अनुभव करता है । हुतास=अग्नि ।

(१५१)

कबहु रसिक सयँ दरसन होए जुनु-
 दरसन होए जुनु नेह
 नेह बिछोह जुनु काहुक उपजए
 बिछोह धरए जुनु देह ॥ २ ।
 सजनी दुर कर ओ परसङ्ग ।
 पहिलहि उपजइत प्रेमक श्रुकर
 दारुन विधि देल भङ्ग ॥ ४ ।
 दैवक दोष प्रेम जदि उपजए
 रसिक सयँ जुनु होए ।
 कान्ह से गुपुन नेह करि अए एक
 सबहु सिखाओल मोय ॥ ६ ॥
 एहन ओषध सखि कहि नहि पाइअ
 जनि जीवन जरि जाव ।
 असमजस रस सहए न पारिअ
 इह कवि मेखर गाय ॥ ८ ॥

१—सयँ=से । जुनु=नही । २—बिछोह=जुगार । काहुक=किसीको । ३—दुर कर=अलग करो, बद करो । परसग=विषय, बातचीत । ४—दारुन=कटोर । भंग देल=तोड़ डाला, कुचल डाला । ५—दैवक दोष=विधि विद्वन्मता से । ६—कुथण से गुप्त प्रेम करके मैं यही एक शिखा लोगों को देती हूँ । ७—ऐसी दवा मैं कहीं भी नहीं पाती, जिसके खाने से ये जवानी जल जाव । ८—असमजस=दुविधा । सहए न पारिअ=सह नहीं जाता ।

(१५२)

जनम होअण जनु, जाँ पुनि होई

जुवती भए जनमए जनु कोई ॥ २ ॥

होई जुवति जनु हो रसमति ।

रसओ धुमए जनु हो कुनमति ॥ ४ ॥

इ धन माँगओ यहि एक पए तोहि ।

धिरता दिहह अयसानहु मोहि ॥ ६ ॥

मिलि सामी नागर रसधार ।

परवस जनु होए हमर पिआर ॥ ८ ॥

होए परवस कुछ बुझए विचारि ।

पाए विचार हार फओन नारि ॥ १० ॥

भनइ विद्यापति अछु परकार ।

दद समुद होअ जीव दए पार ॥ १२ ॥

१—जाँ=यदि । जनु=नहीं । २—जुवती=नौववा की ।

३, ४—यदि जुवती होकर जन मिले तो सुसिका न हो, और यदि सुसिका हो तो ऊँचे कुन की नहीं हो । ५—र=यह । धन=(यहाँ) वरदान । निदि=मदत । एक पए=एक ही । ६—धिरता=स्विरता ।

दिहह=देना । अवस नहु=मतिन अवसों में भी । ७—सामी=स्वामी, पति । नागर=चतुर । रसधार=रसिक । ८—परवस=दूसरे के वश ।

९—१०—यदि परवश भी हो जाय, तो कुछ समझ कुछ रखे, क्योंकि समझ-बूझ होने पर (यह निश्चय कर सहेगा कि) कौन स्त्री गने का हार हो सकती है । ११—मछ=दे । परकार=वशाय । दद=कलह ।

समुद=समुद्र । पाए देकर कमल रूपी समुद्र में पार हो भागी ।

(१५३)

चरन नखर-मनि-रंजन छांद । ^{महोत्तम ॥}

धरनि लोटायल गोकुलचाद ॥ २ ॥

ढरकि ढरकि परु लोचन नोर ।

कतक्षप भिनति कपल पहु मोर ॥ ४ ॥

लागल कुद्दिन कपल हम मान ।

अबहु न निकसए कठिन परान ॥ ६ ॥

रोस तिमिर अत बेरि किए जान ।

रतनक भै गेल गैरिक भान ॥ ८ ॥

नारि जनम हम न कपल भागि ।

भैरन सरन भेल मानक लागि ॥ १० ॥

विद्यापति कह सुनु धनि राइ ।

रोअसि काले कह भल समुझाइ ॥ १२ ॥

१-२—मेरे चरण के नख रूपी माणिक्य को रजित करने के
 बशाने वह गोकुलचन्द्र (श्रीकृष्ण) पृथ्वी में लोट गया । ३—नोर
 = आँसू । ४—कतक्षप = कितने प्रकार से । भिनति = विनती ।
 पहु = प्रीतम । ६—निकसए = निकलता है । ७-८—कोय रूपी
 अपकार में मैं उस समय क्या जानने गई रतन को मैंने गेरु मिट्टी
 समझा । ९—भागि = भाग्य । १०—मान के कारण मुझे चृत्यु
 की शरण लेनी पड़ी । ११—राइ = राधा । १२—रोअसि = रोती है ।
 काइ = किस लिये । भल समुझाइ = अच्छी तरह समझाकर ।

(१५४)

धनि भलि मालिनि सखि गन मांझ ।

अनुनय करइत उपजए लाज ॥ २ ॥

पिरितक आइति त्रिउति न सतई ।

इगित भगिण दुहु सय कहई ॥ ४ ॥

राहि सुचेतनि फान्हु सयान ।

मनहि समाधल मन अभिमान ॥ ६ ॥

अधर मुरलि जौं धपल मुरारि ।

फोइ कररि धरि बांधि समारि ॥ ८ ॥

जौं निज पुर-पथ धपल मुरारि ।

सखि लखि अनतए चलु घर नारि ॥ १० ॥

हरि जव छाया कर धनि पाय ।

धनि सभ्रम बइसलि कर लाय ॥ १२ ॥

कह कवि-सेखर दुभय सयान ।

इगित रस पसारल पचवान ॥ १४ ॥

१—धनि=बाला । ३—भारति=भ्रातुरवा शीघ्रता । भोग की

भ्रातुरवा उदासीनता नही सबती । ४—इगित भगिण=इशारे से ।

५—राहि=राधा । सुचेतनि=सुचतुष । ६—समाधल=समाधान

किया । ८—फोई=छुले हुए । कररि=केश । धनि=बाला । समारि=

जौंमालकर । ९—पुर पथ=गाँव का रास्ता । १०—अनतए=

अन्तर । सखिभौं की ओर देखकर घर चुर छी दूसरी ओर

गयी । ११—जव धीरुष्य (राखे में) राधा को बाहर बतबर

छाया की ठी राधा भटपट उनका हाथ पकड़ बैठ गई ।

(१५५)

(श्रीकृष्ण का मान)

राधा-माधव रतनहि मंदिर

निवसय सयनक सुख । ^{कान्ह}

रस-रस दारुन दद उपजल

कान्ह चलल तव रुस ॥ २ ॥

नागर-अंचल कर धरि नागरि

हसि मिनती कह आधा ।

नागर-हृदय पांचसर हनलक

उरज दरसि मन बाधा ॥ ४ ॥

देख सखि भूठक मान ।

कारन किछुओ बुझए न पाइए

तव काहे रोखल कान्ह ॥ ६ ॥

रोख समापि पुन रहस पसारल

भेल मधुय पचवान ।

अवसर जानि मनायथि । राधा

कवि विद्यापति मान ॥ ८ ॥

१—रतनहि = रतन का बना । निवसय = निवास करते हैं । सयनक सुख = राधा के सुख में-मिथुनानन्द में । २—रस रस = धीरे धीरे । दारुन = कठोर । दंद = कलह । रुस = रुठकर । ३—अंचल = चादर की खूंट । कर = हाथ । ४—पांचसर = कामदेव । हनलक = मारा । उरज = कुच । दरसि = देखकर । मन-बाधा = मन में बाधा उपस्थित हुई, मन चंचल हो उठा । ६—रोखल = रुक

(१५६)

पत दिन छलि नघ रीति रे ।

जल मीन जेहन पिरीति रे ॥ २ ॥

एकहि घचन घीच भेल रे ।

हँसि पछु उतरो न देल रे ॥ ४ ॥

एकहि पलंग पर फान रे ।

मोर लेख दूर देस भाग रे ॥ ६ ॥

जाहि घन केस्रो नहि डोल रे ।

ताहि घन पिया हँसि घोल रे ॥ ८ ॥

धरव योगिनिया के भेस रे ।

करन में पडुक उदेस रे ॥ १० ॥

भनइ बिद्यापति मान रे ।

सुपुरुष न कर निदान रे ॥ १२ ॥

हुआ । ७—समापि = समाप्त कर । रदस = पसारल = काम कीड़ा में लगा । भवघ = मध्यस्थ, पत्र । ८—अब समय जानकर राधा मानवती बन गई । मान = कहते हैं ।

१—एक = एक । छलि था । नर = नवीन । २—मीन = मछली । जेहन = जैसा । ३—बीन भेल = अंतर पड़ गया । ४—सेख = मेरे लिये । भाग = मालूम होता है । ५—केस्रो = कोई । ६—मोर डोल = आवाज जाता है । ७—धरव = धरंगी । योगिनिया = योगिनी । ८—पडुक = प्रीतम का । उदेस = तजारा । ११—निदान = अंत ।

(१५७)

विर-२।

जतहि प्रेम रस ततहि दुरन्त ।

पुन कर पलटि पिरित गुनमन्त ॥ २ ॥

सबतहु सुनिये अइसन बेवहार ।

पुनु दूटै पुनु गाँथि प हार ॥ ४ ॥

ए कन्हु कन्हु तोहहि सयान ।

बिसरि प कोप करै समधान ॥ ६ ॥

प्रेमरु अंकुर तोहे जल देल ।

दिन दिन बाढ़ि महातरु भेल ॥ ८ ॥

तुअ गुन न गुनल सउतिन आछु ।

रोपि न फाटि प बिपहुक गाछ ॥ १० ॥

जे नेह उपजल प्रानक ओल ।

से न करिअ दुर दुरजन बोल ॥ १२ ॥

जगत विदित भेल तोह हम नेह ।

एक परान कएल दुइ देह ॥ १४ ॥

भनइ विद्यापति न कर उदास ।

बडक बचन करि प तिसवास ॥ १६ ॥

१-२—जहाँ प्रेम रस है, वही दीर्घ-प्रेम कलह भी है ।

भक्त गुणवान् एक बार दूटने पर पुन प्रीति करते हैं । ३—सबतहु = सर्वत्रही । ६—समधान = समाधान । ७—तोहे = तुमने । ८—तुमने गुण कुछ न देखा और सौतिन का लाये । १०—बिपदक गाछ = विप का भी घूँस । ११—प्राणक ओल = प्राणों की ओर अतस्तल में । १२—दुर = दूर, भिन्न । १३—तोह हम = तुम्हारा और मेरा ।

(१५८)

। की हम साँझक एकसरि तारा
भादेव चौठिक सली ।

इथि दुहु माझ कश्चोन मोर आनन
जे पहु हेरसि न हँसी ॥ २ ॥

साए साए कहह कहह कन्हु कपट करह जुनु
कि मोरा भेल अपराधे ॥

न मोयँ कबहु तुअ अनुगति चुकलिहुँ
वचन न बोलल मदा ।

सामि समाज प्रेम अनुरजिप
कुमुदिन सन्निधि चढ़ा ॥ ५ ॥

भनइ विद्यापति सुनु चर जौवति
मेदिनि मदन समाने ।

राजा सिबसिंघ रूप नरायन
लखिमा देवि रमाने ॥ ७ ॥

१—२—वया मँ सप्ताकाल की झकली तारा हूँ (जिसे लोग
खना नहीं चाहते) वा मैं मारो सुबल चतुर्थी का चद्रमा हूँ (जिसे
छने से बलक लगता है) । मेरा मुख इन दोनों में क्या है, जो
है प्रियतम, उसे तुम हँसकर नहीं देखते । (जैसा अच्छा तक है ।)
३—साए=सखि । कहह=कहो । कहु=धीरुष्य । ४—अनु
गति=पीछे जाना—आवा गानना । सामि=स्वामी, पति । अनु
रजिप=अनुरजन दिया, निमावा । सन्निधि=निकट । ६—मेदिनि
मदन=पृथ्वी में कामदेव स्वरूप ।

((१५६))

करतल कमल नयन ढर नीर ।

न चेतुष सभरन कुतल चीर ॥ २ ॥

तुअ पथ हेरि-हेरि चित नहि थीर । ३

सुमिरि पुरुष नेहा दगध सरीर ॥ ४ ॥

कत परि माधव साधव मान ।

बिरही जुवति मांग दरसन दान ॥ ६ ॥

जल-मध कमल गगन-मध सूर । ७

आंतर चान कुमुद कत दूर ॥ ८ ॥

गगन गरज मेघ सिखर मयूर ।

कत जन जानसि नेह कत दूर ॥ १० ॥

भनइ विद्यापति विपरित मान । ११

राधा वचन लजापल कान ॥ १२ ॥

१—करतल = हथेली । कमल = (मुख) । नीर = आँसू ।

२—चेतय = संगलती है । सभरन = आभरण, गहने । कुतल =

केस । चीर = बख । ३—तुअ पथ = तेरी राह । हेरि-हेरि = देख देख

कर । थीर = स्थिर । ४—पुरुष = पदला । दगध = जलता है । ५—

कत परि = कब तक । साधव मांग = मान किये रहोगे । ७—मध =

मध्य । सूर = सूर्य । ८—आंतर = अंतर, बीच । चान = चंद्रमा ।

कुमुद = कोई । कत = कितना । १०—गरज = गरजता है । सिखर =

पहाड़ की चोटी । ११—जाना = आदमी । जानसि = जानते हैं ।

१२—यह विपरीत मान कैसा ? [मांग खिाँ करती है, पुरुष

नहीं] राधा का यह वचन सुन श्रीकृष्ण प्रजित हुए ।

मान-भंग

(१६०)

चढ़ई चतुर मोर कान ।

साधन विनहि भांगल मझु मान ॥ २ ॥

जोगी वेस धरि आओल आज ।

के इह समुझ्य अपठ्य काज ॥ ४ ॥

सास बचन हम भीख लइ गेल ।

मझु मुख हेरइत गदगद भेल ॥ ६ ॥

कह तब—'मान-एतलु दह मोय ।'

समझल तब हम सुकपट सोय ॥ ८ ॥

जे किछु कहल तब कहइत लाज ।

कोई न जानल नागर-राज ॥ १० ॥

बिद्यापति कह सुन्दरि राई ।

५ किए तुहु समुझि से चतुराई ॥ १२ ॥

२—भांगल=तोड़ा । मझु=मेघ । ३—आओल=आया ।

४—के=कीन । अपठ्य=अपूर्व । ५—सास बचन=सास के,

कहने से । लइ गेल=ले गई । ६—हेरइत=देखते । ७—तब

कहा—'मुझे मान कवी रान दो ।' ८—सोय=पह । १०—जानल=

जाना । नागर राज=चतुरों का बादशाह । ११—राई=राधा ।

१२—किए=कैसे ।

“सुभाषिते भोगे युवतीनां च लीलया ।

मनो न भिद्यते वरय स योगीन्द्रपदा पशु ॥”

(१६१)

जटिला सास फुकरि तहि बोलल
बहुरि बेरि काहे ठाढ़ि ।

ललिता कहल अमंगल सुनल
सति पतिभय अयगाढ़ि ॥ २ ॥

सुनि कह जटिला घटल की अकुसल
घर सयँ बाहर होय ।

बहुरिक पानि धरि हेरह जोगी
किये अकुसल कह मोहि ॥ ४ ॥

जोगेश्वर फेरि बहुरिक पानि धरि
कुसल करब चनदेव ।

इहे एक अक बक बिसकओ
चन मधि पसुपति सेव ॥ ६ ॥

१—फुकरि = चिल्ला कर । बहुरि = बहुरिया, पतोह । बेरि = विलम्ब । २—अयगाढ़ि = निश्चय । जटिला सास चिल्लाकर बोली बहुरिया, उतनी देर से कहाँ क्यों खड़ी हो ? ललिता ने कहा—कुछ अमंगल सुना जा रहा है । सती को पतिभय निश्चित है । ३—घटल की अकुसल = कीन-सा अमंगल घटा है । ४—बहुरिक पानि = बहुरिया के हाथ । हेरह = देखो । ५-६—'क' = रेखा । बक = टेढ़ा । बिसकओ = राक्षस । मधि = में । तब योगेश्वर ने बहुरिया का हाथ धरकर कहा—वन देवता कुराल करें, यही हाथ की एक रेखा कुछ टेढ़ी है, जिससे कुराल की आराधना है । इसके निवारण के लिये वन में पसुपति की सेवा करनी होगी ।

पुजतक तन-मन बहु आछप
 से हम किछु नहि जान ।
 जटिला कह आन देन कहाँ पाओव
 तुहु बीज कर इह दान ॥८॥
 एत सुनि दुहु जन मंदिर परसल
 दुहु जन भेल एक ठाम ।
 मनमथ मत्र पढ़ाओल दुहु जन
 पूरल दुहु मन काम ॥९॥
 पुनु दुहु जन मंदिर सयँ निकसल
 जटिला सयँ कह भाखी ।
 जय इह गौरि अराधन जाओव
 विधवा जन घर राखी ॥१०॥
 एक कहि सबहु चललि निज मंदिर
 जोगी चरन प्रनाम ।
 विद्यापति कह नटवर सेखर
 साधि चलल मन काम ॥११॥

७—पूजा के बहुत-से मन-तन है हम कुछ नहीं जानते ।
 जटिला सास ने कहा—तुम्हारे येना देवता फिर कहाँ मिलेगा—तुम
 इसे बीजमंत्र दो—माइ फूँक कर दो । ८—परसल=प्रवेश किया ।
 ९—सयँ=से । १०—जब यह गौरी की आराधना करने जाय,
 तब विधवा को घर में ही रख लेना—विधवा इसके साथ न जाय ।
 [बिचारी सास विधवा थी, अतः नई अकेली जायगी, तो मिलने में सुविधा
 होगी] ११—मनकाम=मन कामना, इच्छा ।

(१६२)

गोकुल देवदेयासिनि आओल

नगरहि ऐसे पुकारि ।

अरुन बसन पेन्हि जटिल बेस धरि

कान्ह छार माभ ठारि ॥ २ ॥

सुनि धनि जटिला तुरित चल आओल

हेरइत चमकित भेल ।

हमर बहुक रीति देखि जनि आनमति

कहि मदिर लइ गेल ॥ ४ ॥

देवदेयासिनि कान ।

जटिला बचन सुधामुखि नियरहि

एक दीठि हेरइ बयान ॥ ६ ॥

कह तव अतनु देव इथे पाओल

हृदि-मधि पइसल काल ।

१—देवदेयासिनि=बह स्त्री को माद फूँक करती है ।

आओल=आई । नगरहि=नगर में । २ अरुन=लाल । बसन=

बस्त्र । पेन्हि=पहनकर । जटिल=योगिनी । माभ=में । ३—

जटिला धनि=सास । चमकिने=आश्चर्यविशु । ४—बहुक=

बहु को, पढोह को । जनि=जैसे । आनमति=कुछ दूसरी ही

तरह की । लइ गेल=(श्री कृष्ण को) ले गई । ६—जटिला=

साम । सुधामुखि=चंद्रवदनी (बाला) । नियरहि=निकट ही । एक-

दीठि=एकटक । बयान=मुख । ७—अतनु देव=कामदेव । इथे=

इधे । हृदि मधि=हृदय में । पइसल=प्रवेश किया ।

निरजन सोइ मत्र जय भाडिप
 तव इह होएय भाल ॥८॥
 एत सुनि जटिला घर दोह लेअल
 निरजन दुहु एक ठाम ।
 सेव जन निकसल बाहर वइसल
 पुरल फान्ह मनकाम ॥९॥
 बहु खन अतनु मंत्र पढ़ि भारल
 भागल तब से हो देया ।
 देवदेयासिनि घर सयँ निकसल
 चातुरि बूझय केवा ॥१०॥
 जटिला बहुत भक्ति करि हरखित
 कतक भीख आनि देल ।
 कह कवि सेखर भीख लिप तब
 से हो देयासिनी गेल ॥११॥

८—निरजन = एकाउ में । भाडिये = भाड़ा फूँक करे । इह =
 यह । भाल = अच्छी । ९—एत = ऐसा । जटिला = सास । घर दादे
 लेअल = दोनों को घर में ले आई । ठाम = जगह । १०—निकसल =
 निकल गई । वइसल = बैठी । मनकाम = मन कामना, इच्छा । ११—
 भागल = भाग गया । से हो = वह । १२—केवा = किसी बर्षात
 विमीने नहीं । १३—भक्ति = मक्ति । कतक = कितना (बहुत) । आनि
 देल = ला दिया । १४—गेल = गई ।

“कलेजे की सबसे गुप्त एव मधुर रागिणी का नाम कविता है ।”

(१६२)

गोकुल देवदेयासिनि आओल

नगरहि ऐसे पुकारि ।

अरुन बसन पेन्हि जटिल बेस धरि

कान्ह छार माझ ठारि ॥ २ ॥

सुनि धनि जटिला तुरित चल आओल

हेरइत चमकित भेल ।

हमर बधुक रीति देखि जनि आनमति

कहि मदिर लइ गेल ॥ ४ ॥

देवदेयासिनि कान ।

जटिला बचन सुधामुखि नियरहि

एक दीठि हेरइ बयान ॥ ६ ॥

कह तय अतनु देव इये पाओल

हृदि-मधि पइसल काल ।

१—देवदेयासिनि = वह जो भोजन पूँक करती है ।

आओल = आइ । नगरहि = नगर में । २ अरुन = लाल । बसन =

बस । पेन्हि = पहनकर । जटिल = शोषिनी । माझ = मैं । ३—

जटिला धनि = लाल । चमकिते = आश्चर्य । ४—बधुक =

बधू की, पतोड़ की । जनि = जैसे । आनमति = कुछ दूसरी ही

तरह की । लइ गेल = (गी कृष्ण को) ले गई । ६—जटिला =

साम । सुधामुखि = चंद्रवदनी (बाला) । नियरहि = निकट ही । एक-

दीठि = एकटक । बयान = मुख । ७—अतनु देव = कामदेव । इये =

इसे । हृदि मधि = हृदय में । पइसल = प्रवेश किया ।

निरजन सोइ मय जन भाडिप
तय इह होय भाल ॥८॥
एत सुनि जटिला घर दोहें लेशल
निरजन दुष्ट एक ठाम ।
सब जन निकसल याहर यइसल
पुरत कान्ह मनकाम ॥१०॥
बहु रान अतनु मंत्र पढ़ि भारता
भागल तय से हो देवा ।
देवदेयासिनि घर सयँ निकसल
चातुरि बूझय केना ॥१२॥
जटिला बहुत भक्ति करि हरखित
कतक भील आनि देल ।
यह कयि सेखर भीष लिप तय
से हो देयासिनी गेल ॥१४॥

८—निरजन = एकांत में । भाडिये = माफ़ पूँक करे । यह =
यह । भाल = मरदी । ९—एत = ऐसा । जटिला = सास । पर दादे
लेमल = दोनों को घर में से भाई । ठाम = जगह । १०—निकसल =
निकल गई । बरमल = बैठी । मनकाम = मन-कामना, इच्छा । ११—
भागल = भाग गया । से हो = यह । १२—देवा = किसी भर्षाई
किसी ने मारी । १३—भक्ति = भक्ति । कतक = कितना (बहुत) । आनि
रेल = ला दिया । १४—गेल = गई ।

“कनेजे की सबसे गुप्त पय मधुर रागिणी का नाम कविता है ।”

(१६३)

बर नागर साजइ नागरि बेसा ।

मुकुट उतारि सीमत सँवारल ॥ १ ॥

बेनी बिरचित फेसा ॥ २ ॥

चदन धोइ सिंदुर भाल रजल

लोचन अजन अका ।

कुण्डल खोलि कर्नफूल पहिरल

भरि तनु केसरपका ॥ ४ ॥

बेसर खचित सुतेसरि पहिरल

चुरि कनक कर कजे ।

चरन कमल पास जावक रंजन

तापर मजिर गजे ॥ ६ ॥

कंचुकि माँझ कदम्ब-कुसुम भरि

आरम्भन कुच आभा ।

अरुनाम्बर बर साडी पहिरल

घख बिलोकन सोभा ॥ ८ ॥

१—चतुर कृष्ण स्त्री का वेष बना रहे है । २—सीमत =
मोंग । बिरचित = बनाया । ३—रजल = मनुजित करते है,
लगाते है । अका = रेखा । ४—केसरपका = केशर का लेप ।
५—चुरि कनक कर कजे = कमल रूपी हाथ में सोने की चूड़ी ।
६—जावक = महावर । गजे = गुजर कर रहा है । ७—चोली में
कदम्ब के फूल रखकर आभायुक्त कुच बनाये । ८—अरुनाम्बर =
जाल कपड़ा ।

धरि परिव्यादिनि स्याम मिलन हित

शुभ अनुकूल पयाने ।

पहिलहि वाम चरन तुलि मोहन

त्रियागति लच्छन भाने ॥१०॥

पेसन चरित मिलन जहाँ सुन्दरि

दूरहि एकलि ठारि ।

कर धरि यत्र तंत्र सँवारत ।

को रह लखइ न पारि ॥१२॥

राइक निफट वजाओल सुन्दरि

सुनइत भइ गेल साधा ।

ए नव जीवनि नचिन विदेसिनि

आओ पुकारइ राधा ॥१४॥

सुनइत स्याम हरवि चित आओल

उठि धनि आदर देल ।

चाँह पकडि निज आसन घइसाओल

कत कत हरलित भेल ॥१६॥

—परिव्यादिनि = वीणा । पयान = जाना । १०—पहले बावो
र बदाया, क्योंकि जियों को यही रीति है । ११—एकलि =
केली । १२—कर = हाथ । यत्र = वीणा । तंत्र = तार । को रह =
नहीं भी । लखइ न पारि = देख नहीं सकती । १३—राइक =
राधा के । साधा = इच्छा । १४—धनि = बाला । १५—चाँह =
प्यार । कत कत = कितना ।

×

×

×

जबहि बजाओल धीन सुमाधुरि
रीझि देहल मनि माल ।

अइसे बजावए हमर जतरिया
मोहन जत्र रसाल ॥२०॥

नाम गाम कह कुल अवलम्बन
घज आगम किए काजा ।

सुखमइ नाम, मथुरापुर, जदुकुल
गुनीजन पीडइ राजा ॥२१॥

धनि कह तुअ गुन रीझि प्रसन्न भेल
मांगह मानस जोय ।

मनोरथ कर्म जांचलि जदि सुन्दरि
मान रतन देह मोय ॥२२॥

हंसि मुख मोडि पीठि देइ बइसल
कान्ह कपल धनि कोर ।

टूटल मान बढल कत कौतुक
भूपति के करु ओर ॥२३॥

१०—देहल=दिया । २०—बजावए=बजाता है । जतरिया=
धीणा बजानेवाला । यंत्र=धीणा । २१—मेरा नाम सुखमयी है, गाँव
मथुरा, कुल यदुवश, वहाँ के राजा गुणियों को पीड़ा देते हैं, शीलिये
आई हूँ । २२—मानस=हृदय । २३—मान रतन=मान रूपी
रत्न । देह=दो । २४—कोर=गोद । २५—भूपति=शिवसिंह ।

(१६४)

आजुक लाज तोहे कि कहब माई ।
जल देइ धोइ जदि तरहु न जाई ॥ २ ॥

नदाइ उठल हम कालिंदी तीर ।
अगहि लागल पातल चीर ॥ ४ ॥

तैं बेकत भेल सकल सरीर ।
तहि उपनीत समुख जदुबीर ॥ ६ ॥

विपुल नितम्ब अति बेकत भेल ।
पालटि तापर कुतल देल ॥ ८ ॥

उरज उपर जय देहल दीठ ।
उर मोरि बैसल हरि करि पीठ ॥ १० ॥

हंसि मुख मोड़प दीठ कन्दाई ।
तनु तनु भांपइते भांपल न जाई ॥ १२ ॥

विद्यापति कह लुहु अगेआनि ।
पुनु काहे पलटि न पेसलि पानि ॥ १४ ॥

१—आजुक=आज का । माई=भारी देवा । २—जल
देइ=जल से । ३—नदाइ=स्नान कर । ४—पातली साकी शरीर से
सीट गई । ५—त=इससे । बेकत=बच, प्रकट । ६—तहि=
ही । उपनीत=बैठ डुबा । जदुबीर=कृष्ण । ७—पालटि=पलट
। तापर=उपपर । कुतल=केरा । ८—देहल दीठ=(श्रीकृष्ण
की हडि डाली । १०—मोरि=मुड़कर । बैसल=में बैठ गई ।
पीठ करि=कृष्ण की ओर पीठ करके । १२—तनु तनु=अंग
१४—पुन लौटकर पानी में क्यों न बैठ गई ?

(१६७)

हरि धरि हार चश्रौंकि पर राधा ।

आध माधव कर गिम रहु आधा ॥ २ ॥

कपट कोष धनि दिठि धर फेरी ।

हरि हँसि रहल वदन-विधु हेरी ॥ ४ ॥

मधुरिम हास गुपुत नहि भेला ।

तखने सुमुखि मुख चुम्बन देला ॥ ६ ॥

कर धर कुच, आकुल भेलि नारी ।

निरखि अघर मधु पियव मुतारी ॥ ८ ॥

चिकुर-चमर भर कुसुमक धारा ।

। पिधि कहु तम जनि बम नव तारा ॥ १० ॥

विद्यापति कह सुन्दरि बानी ।

हरि हँसि मिललि राधिका रानी ॥ १२ ॥

का । १३—कुपश्त = खोलते । पट्ट = प्रीतम । मोर = वेसुष । १५—मान = कहते हैं ।

१—२—राधिका सोरं दूरं थी कि कृष्ण ने चुपके निकट जाकर उसका हार पकड़ लिया । राधिका चौंक पड़ी । हार टूट गया । आधा हार कृष्ण के हाथ में रहा और आधा राधिका के गले में ।

३—कपट कोष = झूठमूठ का ऋष । दिठि धर फेरी = आँखें फेर ली ।

४—वदन विधु = मुखचंद्र । हेरी = देखना । ५—६—राधा की मधुर मुस्कान छिप न सकी, उसी समय कृष्ण ने उसके मुख को चुम्ब लिया । ७—अघर = नीचे का कोष्ठ । ८—चिकुर = केरा ।

१०—मानों अथकार तारे को निगलकर पुन उसे गगन रहा हो ।

(१६८)

सासु सुतल छलि कोर अगोरे ।
तहि अति ढीठ पीठ रहु चोर ॥ २ ॥
कत कर आखर कहव बुझाई ।
आञ्जुक चातुरि कहल कि जाई ॥ ४ ॥
नहि कर आरति ए अरुभ नाह ।
अव नहि होएत वचन निरवाह ॥ ६ ॥
पीठ आलिगन कत सुख पाव ।
पानिक पिआस दूध किए जाय ॥ ८ ॥
कत मुख मोरि अधर, रस लेल ।
कत निसवद कए कुच कर देल ॥ १० ॥
समुख न जाए सघन निसोआस ।
किए फारन भेल दसन बिकास ॥ १२ ॥
जागल सास चलल तय फान ।
न पूरल आस बिद्यापति भान ॥ १४ ॥

१—सुतल छलि=सोई थी । कोर अगार=अपनी गोद में
सेकर । २—तहि=वहाँ भी । ३—शब्दों में इमे कहीं तक समझा
कर कहें । ४—कहत कि जाई=कहा कही जाती है । ५—आरति=
आखुरता, शोभा । नाह=प्रीति । ७—८—मेरी पीठ के
आलिगन से मुझे क्या सुख मिलेगा—पानी की प्यास कहीं दूध से
पूरी है । ९—मोरि=मोड़कर । १०—निसवद कए=निशब्द
कर, चुपचाप । ११—निसोआस=निरास, सँत । जैसी सँत
नहीं छोड़ता कि कहीं वम सँत के स्पर्श से मेरी सास न

(१६६)

कि कहय हे सखि आजुक रग ।

सपन हि सूतल कुपुरुष सग ॥ २ ॥

बड सुपुरुष बलि आओल धाई ।

सूति रहल मुख आंचर भँपाई ॥ ४ ॥

काँचलि खोलि आलिंगन देल ।

मोहे जगाए आपु निंद गेल ॥ ६ ॥

हे बिहि हे बिहि बड़ दुख देल ।

से दुख रे सखि अबहु न गेल ॥ ८ ॥

भनए विद्यापति इह रस धद ।

भेक कि जान कुसुम-मकरद ॥ १० ॥

जग बाय । १२—न मालूम क्यों, उसी समय दौट चमक उठे ।

१३—कान=कृष्ण । १४—न पूरल आस=आशा नहीं पूरी हुई ।

१—रग=रस-वार्ता । २—आन में स्वप्न में—भ्रम में आकर—

कुपुरुष के साथ सोई । ३—बलि—समझकर । आओल धाई=

दौड़कर आई । आंचर भँपाई=अचल से हँककर । ४—

काँचलि=चोली । आलिंगन देल=छाती से लगाया । ६—मुझे

जगाकर पुन आप सो रहा । ७—बिहि=ब्रह्मा । ८—रस धद=

रस की विचित्रता । १०—भेक=भेदक, बँग । कि=क्या । कुसुम-

मकरद=फूल का पराग ।

“अमरहिता सा कचवस्त्रया कुचवच्च सरसहिता ।

लसदधरपीयूषाधरवस्त्रविता महात्मना क्षीयात् ॥”

(१७०)

आकुल चिकुर वेदलि मुख सोभ ।

राहु कपल ससि-मडल लोभ ॥ २ ॥

बड अपरुख दुइ चेतन मेलि ।

बिपरित रति कामिनि कर केलि ॥ ४ ॥

कुच बिपरीत बिलम्बित हार ।

कनक कलस बम दूधक धार ॥ ६ ॥

पिय मुख सुमुखि चूम तजि ओज ।

चाँद अधोमुख पियर सरोज ॥ ८ ॥

किंकिनि रटत नितम्बिनि छाज ।

मदन-महारथ बाजन बाज ॥ १० ॥

पूजल चिकुर माल धर रग ।

जनि जमुना मिलु गग तरंग ॥ १२ ॥

बदन सोहाओन स्रम-जल-बिन्दु ।

मदन मोति लप पूजल इन्दु ॥ १४ ॥

भनइ विद्यापति रसमय बानी ।

नागरि रम पिय अभिमत जानी ॥ १६ ॥

१—आकुल=व्यथ, चचल, क्षिप्तके रूप । चिकुर=वेश ।

वेदलि=घेर लिया । २—दुइ चेतन=दो चतुर (राधा-कृष्ण) ।

५—बिलम्बित=लटका हुआ । ६—बम=वमन कराया है,

लगलता है । ७—भोज=(पक्षी) लाज । ८—रटत=बगती हुई ।

नितम्बिनि=खो । छाज=शोभती है । ११—पूजल=सुने हुए ।

१६—रम=रमती है । अभिमत=रन्जित ।

(१७१)

विगलित चिह्नुर मिलित मुखमडल

चाँद वेढ़ल घनमाला ।

मनिमय कुण्डल स्रवन दुलित भेल

घाम तिलक बहि गेला ॥ २ ॥

सुन्दरि तुअ मुख मङ्गल दाता ।

रति-विपरीत समर जदि राखबि

कि करव हरि-हर-धाता ॥ ४ ॥

किंकिनि किनिकिनि ककन कनकन

घनघन नूपुर बाजे ।

रति-रन मदन पराभव मानल

जय-जय डिमडिम बाजे ॥ ६ ॥

तिल एक जघन सघन रव करइत

होअल सैनक भग ।

विद्यापति कवि इ रस गावप

जामुन मिलली गग ॥ ८ ॥

१—विगलित = बिखरे हुए । घनमाला = मेघसमूह । २—स्रवन = कान । दुलित = डोलता हुआ । ४—समर = युद्ध । राखबि = रक्षा करोगी । धाता = माला । ६—आज रति युद्ध में कामदेव हार गया है, उसीकी जय मेरी बज रही है । ७—तिल एक = एक छत्र के लिये । सघन जघन = पुष्ट अंग । रव = शब्द । होअल = हो गया । ८—जामुन = यमुना ।

(१७२)

सपि हे कि कह्य किछु नहि फूर ।
सपन कि परतेय कह्य न पारिण
किप नियरे किप दूर ॥ २ ॥
तडित लता तल जलद समारल
आंतर सुरसरि धारा ।
तरल-तिमिर ससि-सूर गरासल
चौदिस रसि पडु तारा ॥ ४ ॥
अम्बर खसल धराधर उलटल
धरनी डगमग डोले ।
खरतर वेग समीरन सचर
चचरिगन कर रोले ॥ ६ ॥
प्रनय-पयोधि-जले तन भाँपल
इ नहि जुग अवसान ।
के विपरीत कथा पतिआयत
कवि विद्यापति भान ॥ ८ ॥

१—किछु नहि फूर=कहने की स्फुटि नहीं होती । २—पर-
तेख=प्रत्यक्ष । किप=कथा । नियरे=निज । ३—तडित लता=
निजुली (राधा) । तल=नीचे । जलद=मेघ (कृष्ण) ।
आंतर=बीच में । सुरसरि धारा=गंगा (धारा) । ४—तरल
तिमिर=चंचल-अधकार (बेरा) । ससि=चंद्रमा (मुख) ।
सूर=सूर्य । (सि दूर बिडु) । खसि पडु=गिर पड़े । तारा
माये पर के फूल) । ५—अम्बर=(१) आकाश (

१११

(१७३)

दुहुक सजुत चिकुर फूजल ।

दुहुक दुहु यलावल वूमल ॥ २ ॥

दुहुक अधर दसन लागल ।

दुहुक मदन चौगुन जागल ॥ ४ ॥

दुश्श्रो अधर करण पान ।

दुहुक कठ आलिगन दान ॥ ६ ॥

दुश्श्रो केलि सयँ सयँ भेलि ।

सुरत सुखे बिभावलि गेलि ॥ ८ ॥

दुश्श्रो सश्न चेत न चीर ।

दुश्श्रो पियासल पीवए नीर ॥ १० ॥

भन विद्यापति ससय गेल ।

दुहुक मदन लिखन देल ॥ १२ ॥

धराधर = धराधर = (१) बादल (२) कुच । उलटल = उलट
पड़ा । धरनी = (१) पृथ्वी (२) नितम्ब । १—खरतर = तीव्र ।
समीरन = (१) हवा (२) निश्वास । चंचरिगन = (१) अमर
(२) किंकिणी आदि । रोले = शोर । ७—प्राय-पयोधि = प्रेम
का समुद्र । छग अवसान = युग का अंत (विपरीत-रति का वर्णन है)

१—सजुत = साथ ही साथ । चिकुर = केश । फूजल = झुल
गया । २—यलावल = ताकत और कमजोरी । ३—अधर = नीचे
का ओष्ठ । दसन = दाँत । ७—केलि = कामक्रीड़ा । सयँ सयँ =
साथ ही साथ । ८—बिभावलि = रात । ९—दोनो ही शय्या
पर अपने-अपने बल तक नहीं सँभालते । १०—पियासल = प्यासा ।

(१०४)

माघ मास सिरि पंचमी गँजाइलि
नवम मास पचम हरथाई ।

अति धन पीड़ा दुख बढ पाओल
धनसपति भेलि धाई हे ॥ २ ॥

सुभ मन बरा सुकुल पकल हे
दिनकर उदित-समाई ।

सोरह सम्पुन बतिस लखन सह
जनम लेल ऋतुराई हे ॥ ४ ॥

नाचण जुगतिजना हरसित मन
जुनमल बात मधाई हे । माधव

मधुर महारस मङ्गल गावण
मानिनि मान उढाई हे ॥ ६ ॥

१—सिरिपामो = माघ शुद्ध पंचमी । गँजाइलि = पूर्णगर्भा हुए ।
नवम मास = बैशाख में वरत का अठ होता है, उँठ से माघ तक

नी महीने हुए । पचम हरथाई = पाँचों दिन होने पर । (वैष्णव के
अनुसार ती गद्दीन पाँच दिन पर पुष्ट जानक पैदा होता है) ।

२—धन = अधिक । ३—खन = छण । देरा = बेना, समय ।
सुकुल पकल = सुखद । दिनकर = सूर्य । उदित समाई = उदय के

समय । ४—सोरह सम्पुन = सोलह अगों से सम्पूर्ण । बतिस लखन =
बतिस लखण । ऋतुराई = वसंत । ५—जनमल = नाम लिया ।

मधाई = माधव, वसंत । ६—उढाई = उड़ा ले गया, नष्ट किया ।

बह मलयानिल ओत उचित हे
 नव घन भश्रो उजियारा ।
 माधवि फूल भेल मुकुता तुल /
 ते देल वृन्दनबारा ॥ ८ ॥
 पीश्ररि पाँडरि महुश्ररि गावण
 काहरकार धतूरा ।
 नागोसर—रुलि सख धूनि पूर
 तकर ताल समतूरा ॥ १० ॥ सुम्
 मधु लण मधुकर बालक दण्डलु /
 कमल-पंखरी-लाई ।
 पश्रोनार तोरि सूत बाँधल कटि
 केसर कणलि बघनारै ॥ १२ ॥ बाध
 नव नव पल्लव सेज ओछाओल /
 सिर देल कदम्बक माला ।
 वैसलि भमरी हरउद गावण /
 चक्का चन्द निहारै ॥ १४ ॥

७—मलय पवन वह रहा है, उससे ओट करना उचित है
 (क्योंकि शिशु को दवा लगाने का मय है) भत नवीन मेघ
 छा गये । ८—मुकुता तुल = मुकुता के समान । पीश्ररि-पाँडरि = फूल
 विशेष । महुश्ररि = गीत-विशेष । काहरकार = तुंगही । तकर = उसका ।
 समतूरा = समान । ११ = (जन्म होने पर शिशु को पहले मधु
 चदाया जाता है) । दण्डलु = ला दिया । १२—पश्रोनार = पंचनाल ।
 कटि = कमर में । (लड़के की कमर में सूत बाँधा जाता है) । बघनारै =

सोना माला जनकपत्र
 कनश्च पेसुश्च सुति पत्र लिखिष हलु
 रासि नक्षत्र कप लोला ।
 कोकिल गनित-गुनित भल जानप
 रितु वसत नाम थोला ॥ १६ ॥

+ + + + +

घाल घसत तरुन भए धाश्रोल
 वढ़ए सकल ससारा ॥ १८ ॥

दखिन पवन घन अग उगारए
 किसलय कुसुम-परागे ।

सुललित हार मजरि घन कज्जल
 अखितौ अजन लागे ॥ २० ॥

। नव घसत रितु अगुसर जीवति
 विद्यापति कवि गावे ।

राजा सिर सिंघ रूप नरायन
 सकल कला मनभावे ॥ २२ ॥

बाबाख (लड़के की कमर में पहनाया जाता है) । १३—मोझामोल =
 बिछाया । सिर = कदम की माला सिरहाती (तक्रिया के रूप
 में) रखी । १४—हरदद = पलने का गीत । भमरी = भमरी । १५—
 कनक = सोना । केसुम = पलास । सुति-पत्र = जन्मपत्र । नक्षत्र = नक्षत्र ।
 १६—कोकिला गणित की गणना खूब जानती थी, उसीने वसंत नाम
 रखा । १८—बीच की एक पक्ति गायब है । १९-२०—दक्षिण पवन किसलय
 और पुष्प पराग लेकर उसके शरीर में उड़ते लगाता है । मजरी का
 सुन्दर हार गले में है, मेव ने उसकी आँखों में काजल लगा दिया ।

(१७५)

आपल स्तुपति-राज बसत ।
 धाओल अलिकुल माधवि-पथ ॥ २ ॥
 दिनकर किरन भेल पौगड ।
 केसर कुसुम धपल हेमदड ॥ ४ ॥
 नृप-आसन नव पीठल पात ।
 काचन कुसुम छत्र धर माथ ॥ ६ ॥
 मौलि रसाल मुकुल मेल ताय ।
 समुल हि कोकिल पञ्चम गाय ॥ ८ ॥
 सिखिकुल नाचत अलिकुल यत्र ।
 द्विजकुल आन पढ आसिख मत्र ॥ १० ॥
 चन्द्रातप उडे कुसुम पराग ।
 मलय पवन सह भेल अनुराग ॥ १२ ॥

१—आपल = माया । २—धाओल = दोहा । अलिकुल =
 अमर समूह । माधवि पथ = माधवी की ओर । ३—दिनकर =
 सूर्य । भेल = हुआ । पौगड = किरोरावरथा, कुछ कुछ तोत्र । हेमदड =
 सोने का डहा, आसा । “मदन महीपति कनक दड रुचि केसर
 कुसुम विकारो—गीतगोविन्द ।” ५—पीठा = घुघ विशेष, पिठना ।
 पात = पत्ता । काचन कुसुम = चम्पा । ७—मौलि = किरोट ।
 रसाल मुकुल = आम की मजरी । ताय = उसके । ८—सिखि =
 मोर । अलिकुल यत्र = भीरे बाजा मजा रहे है । १०—द्विजकुल =
 (१) पक्षी (२) ब्राह्मण (पक्षी को द्विज इस लिये कहा जाता है कि
 उसका जन्म भी दो बार होता है, एक बार भटे के रूप में, पुन

कुदवल्ली तर धपल निसान । ✓

पाटलतून असोक दलवान ॥ १४ ॥

१८-६

किंसुक लवंग लता एक सग ।

हेरिसिसिररितु आगे दल भग ॥ १६ ॥

सैन साजल मधु-मखिका फूल ।

सिसिरक सगहु फणेल निरमूल ॥ १८ ॥

उधारल सरसिज पाओल मान ।

निज नव दुल कर आसन दान ॥ २० ॥

नव वृन्दावन राज निहार ।

पन्हा

विद्यापति कह समयक सार ॥ २० ॥

पक्षी के रूप में ।) भाग = भाकर । भासिख मत्र = भारीवाँ (त्मक श्लोक) ।

११—चद्रातप = चंदोषा । फूलों के पराग ही चंदोषा से उड़

रहे हैं । १२—मलय पवन = मलयचल से अनेवाली हवा,

दक्षिण पवन । सद = साथ । कुदवल्ली = वृक्ष विशेष । निसान =

पत्राका । पाटल तून = पाटल के पत्ते ही तून (तरकरा) हैं ।

अशोक दलवान = अशोक के पत्ते वाण हैं । १४—किंसुक = पलास ।

(धनुष की समान) लवंगलता = (ताँत के समान) । १६—भागे

दल भग = पड़ले ही सै यभग हो गया । १७—दुल = दुल ।

१८—उधारल = उधार किया । पाओल = पाया । २०—दान = पत्ता ।

अर्था गिरामविहित रिहितश्च कश्चित् ।

सौभाग्यमेति मरहट्टवधूदुचाभ ॥

नाग्नीपयोधर इवातिवरा प्रकाशो ।

नो गुर्जरीस्तन इवातिवरा निरूढ ॥

(१७६)

नव वृन्दावन नव नव तरुगन

नव नव विकसित फूल ।

नवल बसत नवल मलयानिल

मातल नव अलि कूल ॥ २ ॥

पागल बना विहरइ नवल किसोर ।

कालिदि पुलिन-कुज बन सोभन

नव नव प्रेम-बिभोर ॥ ४ ॥

नवल रसाल मुकुल-मधु मातल

नव कोकिल कुल गाय ।

नवजुवती गत चित उमताअई

नव रस कानन धाय ॥ ६ ॥

नव जुवराज नवल वर नागरि

मीलए नव नव भाँति ।

निति निति ऐसन नव नव खेलन

विद्यापति मति माति ॥ ८ ॥

१—नव = नवीन । विकसित = खिले हुए । २—मलयानिल = मलय पवन । मातल = पागल बना । अलिकूल = मौरि । ३—विहरइ = विहार करता है । नवल किसोर = युवक कृष्ण । ४—कालिदि = यमुना । पुलिन = किनारे । सोभन = सुशोभन । प्रेम बिभोर = प्रेम में बेसुध । ५—नई आम की मजरी के मधु में मस्त बनी नई कोयल गा रही है । ६—उमताअई = उमत्त हो जाता है । ८—ऐसन = इस प्रकार का । खेलन = मीठा । माति = मत्त बनी ।

(१७७)

लता तरुश्रर मडप जीति ।

निरमल ससधर धवल्लिष भीति ॥ २ ॥ स्नेह

पउंअ नाल अइपन भल भेल ।

रात परीहन पदलव देल ॥ ४ ॥ परिधान

देखह माइ हे मन चित लाय ।

यसन्त विद्याह कानन-धलि आय ॥ ६ ॥

मधुकरि रमनी मगल गाव ।

दुजवर कोकिल मन पढ़ाय ॥ ८ ॥

करु मकरद ह्योदक नीर ।

बिधु वरिआती धीर समीर ॥ १० ॥

कनअ किसुक मुति तोरन तूल ॥

छाया बिथरल बेलिक फूल ॥ १२ ॥

केसर कुसुम करु सिंदुर दान ।

जओतुक पाओल मानिनि मान ॥ १४ ॥

रेलप कौतुक नव पंचवान ।

विद्यापति करि हृद कप भान ॥ १६ ॥

१—लता और वृक्ष ने मानो मडप को जीत लिया—लता और

वृक्ष ही मडप है । २—निरमल=स्वच्छ । ससधर=चंद्रमा ।

धवल्लिष=उज्ज्वल कर दिया (चूना पोत दिया) । भीति=दीवान ।

३—पउंअ नाल=पगनाल, कमल का नाल । अइपन=अरिपन (अश्विनी

परका मांगलिक चित्र) । ४—रात=रात । परीहन=परिधान=वस्त्र । ५—

माइ हे=मरी मैया । ६—कानन धलि=वनरमली । ७—मधुकरि रमनी=

(१८१)

अभिनव कोमल सुन्दर पात ।

सुखारे बने जनि पहिरल रात ॥ २ ॥

मलय-पवन डोलए बहु भाँति ।

अपन कुसुम रस अपने माति ॥ ४ ॥

देखि देखि माधव मन हुलसत ।

चिरिदावन भेल बेकत यसत ॥ ६ ॥

पुष्पकुंजीकोकिल बोलए साहर भार ।

मदन पाओल जग नव अधिकार ॥ ८ ॥

पाइक मधुकर कर मधु पान ।

भमि भमि जोइए मानिनि मान ॥ १० ॥

दिसि दिसि से भमि विपिन निहारि ।

रास बुझाए मुदित मुरारि ॥ १२ ॥

भनइ विद्यापति इ रस गाव ।

राधा-माधव अभिनव भाव ॥ १४ ॥

१—अभिनव = नवीन । पात = पत्ते । २—सुखारे = सम्पूर्ण ।
रात = लाल (वल) । मानो समूचे वन ने लाल वल रहन लिमा हो ।
३—डोलए = बह रहा है । ४—माति = मत्त होकर । फूल अपने
रस में आप ही पागल है । ५—हुलसत = हुलसित हुआ । ६—
बेकत भेन = प्रकट हुआ । ७—साहर = आसमानी । ८—मदन =
कामदेव । ९—पाइक = पायक, दूत । मधुकर = मीठा । १०—
भमि भमि = झमझम कर । जोइए = खोजता है । ११—विपिन = वन ।
निहारि = देखकर । १२—मदमदित कृष्ण रासलीला कर रहे है ।

२४१

(१८२)

चल देखए जाऊ रितु बसत ।

जहाँ कुद-कुसुम केतकि हसत ॥ २ ॥

जहा चदा निरमल भमर कार ।

जहा रयनि उजागर दिन अंधार ॥ ४ ॥

जहा मुगुधलि मानिनि करए मान ।

परिपथिहि पेखए पंचवान ॥ ६ ॥

भनइ सरस कवि कठ-हार ।

मधुसूदन राधा वन विहार ॥ ८ ॥

(१८३)

मधुरितु मधुकर पाँति । मधुर कुसुम मधुमाति ॥

मधुर वृदावन मांझ । मधुर मधुर रसराज ॥

मधुर जुयति जन संग । मधुर मधुर रसरग ॥

मधुर मृदग रसाल । मधुर मधुर करताल ॥

मधुर नटन गति भंग । मधुर नटिनी नट संग ॥

मधुर मधुर रस गान । मधुर विद्यापति भान ॥

३—निरमल=शुद्ध । भमर=अमर, मोरा । कार=काला ।

४—जहाँ रात वजली प्रकारमय (फूलों और चंद के कारण) और दिन

अपकार पूर्ण (औरों और गुल्म लताओं के कारण) । ६—परिपथिहि=

पथिकों को, विरोधियों को । पेखए=देखता है । पंचवान=कामदेव ।

मधुरितु=वसंत । मधुकर=मोरा । मधुमाति=मधु से

मानक=मैं । रसराज=शृंगार । मधुर मृदय का गति मग

और मधुर नाचनेवाली के साथ (मधुर) नट का (ग

(१८४)

बाजत त्रिगि त्रिगि धौद्रिम त्रिमिया ।
 १। नटति कलावति माति श्याम सँग
 कर करताल प्रबन्धक ध्वनिया ॥२॥
 डम डम डफ डिमिक डिम मादल बाजा
 रतु भुनु मंजीर बोल ।
 किंकिनि रनरनि बलश्रा कनकनि
 निधुवन रास तुमुल उतरोल ॥३॥
 धीन, रवाय, मुरज स्वरमंडल
 सा रि ग म प ध नि सा बहु विधि भास ।
 घटिता घटिता धुनि मृदंग गरजनि
 चचल स्वरमंडल कर रास ॥४॥
 छम भर गलित लुलित कवरीयुत
 मालति माल बियारल मोति ।
 समय यसंत रास रस घणन
 विद्यापति मति छोमित होति ॥५॥

२—नटति=जाच रही है । माति=मत्त होकर । ध्वनिया=
 बाजा । ३—मादल=एक बाजा । ४—बलभा=बंगला । निधु
 वन .. =निधुवन में रासलीला जोरा के साथ हो रही है । ५—
 रवाय=सारंगी के डग का एक बाजा । स्वरमंडल=वीणा का एक
 भेद । ६—राव=स्वर । ७—परिश्रम के कारण पसीने चस रहे
 हैं, केरा चचल हो इधर-उधर छिटके हैं और मालती की माला मोती-
 बसेर रही है । ८—छोमित=घोमित, चचल ।

(१८५)

रितुपति-राति रसिक रसराज ।

रसमय रास रभस रस मांझ ॥२॥

रसमति रमनि-रतन धनि राहि ।

रास रसिक सह रस श्रवगाहि ॥४॥

रगिनि गन सब रंगहि नटई ।

रनरनि ककन किंकिनि रटई ॥६॥

रहि रहि राग रचय रसवत ।

रतिरत रागिनि रमन बसत ॥८॥

रटति रवाव महतिक पिनास ।

राधारमन करु मुरलि विलास ॥१०॥

रसमय विद्यापति कधि भान ।

रूपनारायन भूपति जान ॥१२॥

(१८६)

मलय पवन बह । बसत विजय कह ॥

भमर करइ रोए । परिमल नहि ओर ॥

रितुपति रंग देला । हृदय रमस भेला ॥

अनग मगल भेलि । कामिनि करथु केलि ॥

तहन तरुनि सगे । रयनि खेपधि रगे ॥

बिहरि विषदि लागि । फेसु उपजल आनि ॥

कधि विद्यापति भान । मानिनी जीवन जान ॥

नृप रुद्रसिंह बरु । मेदिनि कलप तरु ॥

महतिक = बड़ी बीया । पिनास = एक वाद्ययंत्र । खेपधि = बितायेगा ।

(१८७)

सखि हे बालुम जितब बिदेस ।

हम कुलकामिनि कहइत अनुचित

तोइहुँ दे हुनि उपदेस ॥ २ ॥

ई न बिदेसक बेलि ।

दुरजन हमर दुख न अनुमापव

तैं तोहे पिया लग मेलि ॥४॥

किछु दिन करथु निवास ।

हम पूजल जे से हे पप भुज

राखथु पर उपहास ॥६॥

होयताह किए यध भागी ।

जेहि खन छुन मन जापव चितब

हमहु मरव धसि आगी ॥८॥

बिद्यापति कवि भान ।

राजा सिवासिध रूपनरायन

लपिमा देइ रमान ॥१०॥

१—जितब = जीतेंगे । (अपराधुन समझकर 'जादेंगे' ऐसा नहीं कहती) । २—तोइहुँ = तुम्हीं । हुनि = उनको) । ३—बेलि = बेला, समय । ४—अनुमापव = समझेंगे । ते तोहे पिया लग मेलि = इसीलिये तुम्हें प्रीतम के निकट भेज रही हूँ । ५—करथु = करें । ६—वैसी पूजा की होगी, वैसा पत्र मैं भोगूँगी, वे मुझे केवल दूसरे की भेन्दा से बचा ले । ७—होयताह = होयेंगे । किए = क्यों । यध भागी = हत्या का भागी ८—जापव चितब = जाने को सोचेंगे ।

(१८८)

माधव, तोहँ जनु जाह बिदेस ।
 हमरा रग-रमस लए जएवह
 लएवह कौन सँदेस ॥२॥
 बनहि गमन करु होएति दोसर मति
 बिसरि जाएव पति मोरा ।
 हीरा मनि मानिक एको नहि माँगव
 फेरि माँगव पहु तोरा ॥४॥
 जखन गमन करु नयन नीर भरु
 देखहु न भेल पहु श्रोरा ।
 एकहि नगर बसि पहु भेल परबस
 कहसे पुरत मन मोरा ॥६॥
 पहु संग कामिनि बहुत सोहागिनि
 चद्र निकट जइसे तारा ।
 भनइ विद्यापति सुनु चर जौवति
 अपन हृदय धरु सारा ॥८॥

१—जनु जाह = मत नामो । २—रग-रमस = भामोद-
 प्रमोद । ३—मोरा बिसरि जाएव = मुझे भूल जाओगे ।
 ४—नीर = माँस । पहु मोरा = प्रीतम की मोर । ६—पुरत = पूरा
 होगा । ८—सारा = (यहाँ) पैर ।

“सत्सूत्रसन्निधान सदलकार सुवृत्तमच्छिद्रम् ।
 को धारयति न कण्ठे सत्काव्य मार्यमध्य च ॥”

(१८६)

कालि कहल पिआ प साम्हि रे

जाएव मोयँ मारुअ देस ।

मोयँ अभागलि नहि जानलि रे

संग जइतआँ जोगिन वेस ॥२॥

हृदय मोर बड दारुन रे

पिया बिनु बिहरि न जाए ॥३॥

×

×

×

×

एक सयन सति सूतल रे

आछल बालमु निसि भोर ।

न जानल कति खन तेजि गेल रे

बिछुरल चकेवा जोर ॥५॥

सूत सेज हिय सालए रे

पिया बिनु घर मोयँ आजि ।

बिनति करआँ सहलोलिनि रे

मोहि देह अगिहर साजि ॥७॥

बिद्यापति कवि गाओल रे

आनि मिलब पिय तोर ।

जखिमा देह घर नागर रे

राय सिवसिंघ नहि भोर ॥८॥

१—मारुअ=मयुरा । २—जइतआँ=जाती । ३—दारुन=कठोर । बिहरि=फट जाना । ४—मदल=या । जोर=बोझ । ५—सालए=पीड़ा देवी दे । ७—सहलोलिन=सहली । मोहि=मुझे । अगिबिन्हा साज दो, निघमें जल बाऊँ ।

(१६०)

मधुपुर मोहन गेल रे
 मोरा बिहरत छाती ।
 गोपी सकल बिसरलनि रे
 जत छल अहिबाती ॥२॥
 सुतल छलहुँ अपन गृह रे
 निन्दइ गेलउँ सपनाइ ।
 करसौँ छुटल परसमनि रे
 कोन गेल अपनाइ ॥४॥
 कत कहवो कत सुमिरब रे
 हम भरिष गराणि ।
 आनक धन सौँ धनबती रे
 कुनजा भेल रानि ॥६॥

१—मधुपुर=मथुरा । गेल=गया । मोरा=मेरा । बिहरत=फटती है । २—बिसरलनि=विस्मरण हो गये, भूल गये । जत=जितनी । छल=थी । अहिबाती=सौभाग्यवती । ३—सुतलि=सोई । छलहुँ=(मैं) थी । अपन=अपने । निन्दइ गेल सपनाइ=नींद में स्वप्न देखने लगी । ४—कर=हाथ । छुटल=छूट गया । परसमनि=स्पर्श मणि, पारस । कोन=कौन । गेल अपनाइ=अपना गया । ५—कत=किनना । कहवो=कहूँगी । सुमिरब=स्मरण कहूँगी । भरिष गराणि=ग्लानि से भर गई हूँ । ६—आनक=दूसरे का । सौ=से । भेल=हुए ।

गोकुल चान चकोरल रे
 चोरी गेल चन्दा ।
 बिछुडि चललि दुहु जोडी रे
 जीय दइ गेल धदा ॥८॥
 काक भाख निज भाखह रे
 पहु आओत मोरा ।
 खीर खांड भोजन देव रे
 भरि कनक कटोरा ॥९॥
 भनहि विद्यापति गाओल रे
 धैरज धर नारी ।
 गोकुल होयत सोहाओन रे
 फेरि मिलत मुरारी ॥१०॥

७—गोकुल का चन्द्रमा चकोर बन गया—जो वहाँ चन्द्रमा के समान था—जिसे हजार हजार गोविण्ड चकोरी की तरह देखती थी—वही आज स्वयं चकोर बनकर दूसरी को—हुम्मा फो देव रहा है। हाय। मेरा चन्द्र चोरी चला गया। ८—बिछुडि=बिछुड़कर। चललि=चली। दुहु जोडी=दोनों (राधा कृष्ण) की जोड़ी। जीय दर गेल धदा=मार्गों में सदेह दे गया। ९—काक=काग, कीमा। गाउ=बोली। भाखद=बोली। पहु=प्रीतम। आओत=आयेगा। १०—खीर=दूध। देव=दुँगी। कनक=सोना। १२—सोहाओन=शोभायमान।

-- "सुभाषितरसास्वादयद्वरोमानन्दपञ्चुषा ।

-- विनापि वरमिनीसग कथय सुखमासते ॥'

(१६१)

सरसिज बिनु सर सर बिनु सरसिज
की सरसिज बिनु सूरै ।

जौवन बिनु तन तन बिनु जौवन
की जौवन पिय दूरे ॥२॥

सखि हे मोर घड़ दैर बिरोधी ।
मदन वेदन बड पिया मोर बोलछुड
अगहु देहे परबोधी ॥ ४ ॥

चौदिस भमर भम कुसुम कुसुम रम
नीरसि मांजरि पीबइ ।

मद पवन चल पिक कुहु कुहु कह
सुनि बिरहिन कहसे जीबइ ॥६॥

सिनेह अछल जत हम भेव न टूटत
बड बोल जत सब थीर ।

अइसन के बोल दहु निज सिम तेजि कह
उछल पयोनिध नीर ॥ ८ ॥

भनइ विद्यापति अरेरे कमलमुखि
गुन गाहक पिया तोरा ।

राजा सिवसिध रूपनरायन
सहजे एको नहि भोरा ॥ १० ॥

१—की=क्या । सूरै=सूर्य । ४—बोलछुड=प्रतिष्ठाभग
करनेवाला ।, देहे=देती हो । ५—भमर भम=भौरे भ्रमण कर
रहे हैं । ७—अछल=था । भेव=समझना । बड बोल जत सब

(१६३)

लोचन धाए फेधाएल
हरि नहि आयल रे ।
सिच सिच जिवओ न जाए
आस अरुभाएल रे ॥ २ ॥
मन करे तहाँ उडि जाइअ
जहाँ हरि पाइअ रे ।
पेम-परसमनि जानि
आनि उर लाइअ रे ॥ ४ ॥
सपनहु सगम पाओल
रग बढाओल रे ।
से मोरा बिहि बिघटाओल
निन्दओ हेराएल रे ॥ ६ ॥
भनइ विद्यापति गाओल
धनि धइरज धर रे ।
अचिरे मिलत तोहि बालमु
पुरत मनोरथ रे ॥ ८ ॥

१—धाए=दोहर । फेधाएल=फेन सहित हो गये, फूल गये । २—जिवओ=प्राण मी । अरुभाएल=उलझ पड़े हैं । ३—मन करे=इच्छा होती है । ४—उर लाइअ=छाती से लगा लूँ । ५—सगम=मिलन, मेट । पाओल=पाया । ६—बिहि=महा । बिघटाओल=नष्ट किया । निन्दओ हेराएल=नोद भूल गई, जाती रही । ८—अचिरे=शीघ्र ही । पुरा होगा ।

(१६४)

सखि मोर पिया ।

अनहु न आओल कुलिस हिया ॥ २ ॥

नखर ओआओलु दिवस लिपि लिपि ।

० नयन अंधाओलुं पिआपथ देखि ॥ ४ ॥

जय हम बाला परिहरि गेला ।

किप दोस किप गुन बुझइ न भेला ॥ ६ ॥

अर हम तरनि बुझन रस भास ।

१ ॥ हेन जन नहि मोर कारे पिया पास ॥ ८ ॥

आएव हेन करि पिया मोर गेला ।

पुरबक जत गुन बिसरित भेला ॥ १० ॥

भनइ बिद्यापति सुन अर राइ ।

कानु समुझाइत श्रव चलि जाइ ॥ १२ ॥

२—आओल = आया । कुलिस हिया = वज्र देता कठोर हृदय । ३—नखर = नहँ । ओआओलु = नष्ट कर दिया । प्रीतम के जाने का दिन लिखते लिखते मेरे नख पिस गये । ४—अंधा-ओलुं = अंधा बना लिया । पियापथ = प्रीतम की राह । ५—बाला = भोली भाली किशोरी । परिहरि गेला = छोड़कर चले गये । ६—किपे = क्या । बुझइ न भेला = कुछ न जान सके । ७—तरनि = बुझती । रस भास = रस की बातें । हेन = इस समय । ८—पुरबक = पूर्व का । बिसरित = निरमरण । ९—राइ = राधा । १०—कानु = कण्ठ ।

(१६५)

आसक लता लगाओल सजनी
 नयनक नीर पटाय । १ ॥
 से फल अत्र तरुनत भेल सजनी
 आँचर तरन समाय ॥ २ ॥
 फाँच साँच पहु देखि गेल सजनी
 तसु मन भेल कुह भान ।
 दिन दिन फल तरुनत भेल सजनी
 अहु खन न करु गेआन ॥ ४ ॥
 सब कर पहु परदेश बसि सजनी
 आयल सुमिरि सिनेह ।
 हमर पहन पति निरदय सजनी
 नहि मन चाढ्य नेह ॥ ६ ॥
 भनइ विद्यापति गाओल सजनी
 उचित आओल गुनसाह ।
 उठि वधाव करु मन भरि सजनी
 अब आओल घर नाह ॥ ८ ॥

१-२—सखि, आँखों के पानी से सौंचकर आशा की लता
 मेने लगाई । अब उस लता का फल (फल) जवानों में जा गया,
 पुष्ट हो चला, वह अवल के नीचे समाता नहीं । ३—साच=सच
 मुख में । पहु=प्रीति । तसु=उसके । कुह=कुहेसा, (निराशा) ।
 अहुखन=इस समय भी । ४—पहन=पेसा । ५—आओल=
 आयेगा । गुनसाह=गुनवान् । ६—वधाव=वधैया । नाह=पति ।

(१६६)

कोन गुन पहु परवस भेल सजनी
बुझलि तनिक भल मद ।

मनमथ मन मथ तनि धिनु सजनी
देह दहए निसि चद ॥ २ ॥

कहओ पिसुन सत अथगुन सजनी
तनि सम मोहि नहि आन ।

कनेक जतन सौ मेटिए सजनी
मेटए न रेए पएान ॥ ४ ॥

जे दुरजन कटु भाखए सजनी
मोर मन न होए विराम ।

अनुभव राहु पराभव सजनी
हरिन न तज हिमधाम ॥ ६ ॥

जतओ तरनि जल सोखए सजनी
कमल न तेजए पाक ।

जे जन रतल जाहि सौ सजनी
कि करत बिहि भए बाक ॥ ८ ॥

बिद्यापति कवि गाओल सजनी
रस बूझए रसमत ।

राजा सिवसिंघ मन दए सजनी
मोदवती देह कत ॥ १० ॥

१—ठनिक=ठनका । २—मनमथ मन मथ—कामदेव मन का
मथन—कर—रहा है । ठनि=ठनक । ३—दुष्ट लोग भले ही उनके

(१६७)

माधव हमर रटल दुर देस । १॥ १॥

केओ न कहइ सखि कुसल सनेस ॥ २ ॥

जुग-जुग जीबथु बसथु लाख कोस ।

हमर अभाग धुनक नहि दोस ॥ ४ ॥

हमर करम भेल बिहि बिपरीत ।

तेजलनि माधव पुरुविल पिरीत ॥ ६ ॥

हृदयक वेदन वान समान ।

आनक दुःख आन नहि जान ॥ ८ ॥

भनइ विद्यापति कवि जयराम ।

दैव लिखल परिणत फल वाम ॥ १० ॥

सैकड़ों भवगुण मुक्तसे कहें, किन्तु मेरे लिये उनके समान दूसरा कोई नहीं है । ४—पखान = पत्थर । ५—विराम = सदासीनता (कृष्ण के प्रति) । राहु परामव = राहु द्वारा हराये जाने पर, प्रस लिये जाने पर । दिमपाम = चन्द्रमा । ७—तरनि = सूर्य । ८—रतल = अनुरक्त । कि करत = मद्धा विमुख होकर क्या करेगा ?

१—रटल = चला गया । २—केओ = कोई । सनेस = सदेरा । ३—जीबथु = जीये । बसथु = बसें । ४—धुनक = धनका । ५—बिहि = मझा । ६—तेजलनि = छोड़ दिया । पुरुविल = पूर्व का । ७—वेदन = वेदना, दुःख । ८—आनक = दूसरे का । १०—वाम = बिपरीत ।

“कृतमन्दपदपासा विकचश्रीश्चावराभमगवती ।

करय न कम्पयते क जरेव जीर्णस्य स कवेर्वाणो ॥”

(१६८)

जीवन रूप अद्भुत दिन चारि ।

से देखि आदर कपल मुरारि ॥ २ ॥

अन भेल भाल कुसुम रस छूछ ।

चारि बिहुन सर केशो नहि पुछ ॥ ४ ॥

हमरि ए विनती कह्य सखि रोय ।

सुपुरुष धवन अफल नहि होय ॥ ६ ॥

जारे रहइ धन अपना हाथ ।

तारे से आदर कर सग साथ ॥ ८ ॥

धनिकक आदर सय तहँ होय ।

निरधन बापुर पुछए न कोय ॥ १० ॥

भनइ बिद्यापति राखब सील ।

जो जग जीविए नयनो निधि मील ॥ १२ ॥

१—अद्भुत=ये । २—से=यह । कपल=किया । ३—भाल=

कटु, गपहीन । रस छूछ=रस से हीन । ४—चारि बिहुन=पानी

से रहित । सर=तालाब । केशो=कोई । ५—रोय=रोकर ।

६—अफल=मर्थ । ७—जारे=जबतक । ८—सग साथ=सगी-

साथी, मित्र कुटुम्ब । ९—धनिकक=धनियों का । सय तहँ=सर्वत्र ।

१०—बापुर=बेवारा । ११—सील=मर्षादा । १२—यदि जग में

जीवित रहो, सभी की निधियाँ प्राप्त हों ।

Poetry is at bottom a criticism of life The great-
ness of a poet lies in his powerful and beauti-
ful application of ideas to life —Mathew Arnold.

(१६६)

सखि हे हमर दुखक नहिं ओर ।

इ भर वादर माह-भादर

सून मदिर मोर ॥ २ ॥

अपि घन गरजति सतत

भुवन भरि बरसतिया ।

कन्त पाहुन काम दाखन

सघन खर सर हतिया ॥ ४ ॥

कुलिस कत सत पात मुदित

मयूर नाचत मातिया ।

मत्त दादुर डाक डाहुक

फाटि जायत छातिया ॥ ६ ॥

तिमिर दिग भरि घोर जामिनि

अथिर विजुरिक पाँतिया ।

विद्यापति कह कहसे गमाओब

हरि बिना दिन-रातिया ॥ ८ ॥

२—(इस पद्य का यह चरण अत्यन्त प्रसिद्ध है । स्वयं रवीन्द्र-
नाथ ठाकुर ने कई बार इसे उद्धृत किया है) । भर=भरा हुआ ।
मादर=मेघ । ३—सतत=सदा । ४—पाहुन=प्रवासी । खर
सर=तेज बाण । हतिया=मारता । ५—कत सत=कई सौ ।
पात=गिरता है । मातिया=मत्त होकर । ६—डाक=पुकारता है ।
डाहुक=यह बरसाती पड़ी । ७—दिग=दिशा । अथिर=चबलट्ट
=कैसे=किस प्रकार । गमाओब=विताऊँगी ।

(२००)

मोर घन घन सोर सुनहत

वहत मनमथ पीर ।

प्रथम छार असाढ आओल

अबहु गगन गंभीर ॥ २ ॥

दियस रयना अरे सखी

कइसे मोहन बिनु जाय ॥ ३ ॥

आग्र साओन बरिख भाओन

घन सोहाओन धारि ।

पचसरसर छुटत रे, कइसे

जीअण विरहिन नारि ॥ ४ ॥

आवण भादो वेगर माधो

कांसो कहि यहि दुख ।

निडर डर डर डाक डाहुक

छुटत मदन घनुक ॥ ५ ॥

अछूह आसिन गगन भासि न

घनन घन घन रोल ।

सिह भूपति भनइ पेसन

चतुर मास कि घोल ॥ ६ ॥

२—माओन = जो मत की भावे । ४—पचसर = चारदेव । ५—

वेगर = बिना । कांसो = किससे । ७—निडर डाहुक (पपी विशेष) डर

डर शब्द में पुकार रहा है—मानो चारदेव की बहुत छुट रही हो ।

८—मछूह = (मछ = मछि) भावा । मछि = मालूम पड़ता है ।

(२०१)

फुटल कुसुम नव कुज कुटिर वन
कोकिल पंचम गावे रे ।

मलयानिल हिम सिखर सिधारल
पिया निज देश न आवे रे ॥ २ ॥

चनन चान तन अधिक उताप
उपवन अलि उतरोले रे ।

समय बसत कत रहु दुर देस
जानल बिधि प्रतिकूले रे ॥ ४ ॥

अनुमिल नयन नाह मुख निरखइत
तिरपित न भेल नयाने रे ।

ई सुख समय सहए एत सकट
अबला कठिन पराने रे ॥ ६ ॥

दिन दिन खिन तनु हिम कमलनि जनि
न जानि कि जिव परजत रे ।

विद्यापति कह धिक धिक जीवन
माधव निकरुन कत रे ॥ ८ ॥

१—फुटल = प्रफुटित हुआ, खिल गया । २—मलयानिल

हिम सिखर सिधारल = मलय पर्वत हिमालय को ओर चला—

दक्षिण पवन बहने लगा । ३—चनन = चन्दन । चान = चन्द्रमा ।

उताप = उत्ताप कर देता है, मलाना है । अलि उतरोले रे =

ओरे गुमार कर रहे है । ५—अनुमिल = बिना पलक गिरे हुए ।

हिम = बर्फ । परजत = रोष । ८—निकरुन = करुणा रहित, कठोर ।

(२०२)

सजनी कानुक कहवि बुझाई ।

रोपि पेमक बिज अकुर मूडलि
वाँचव कोन उपाई ॥ २ ॥

तेल बिन्दु जैसे पानि पसारिप
पेसन मोर अनुराग ।

सिकता जल जैसे छनहि सूखप
तैसन मोर सुहाग ॥ ४ ॥

कुल कामिनि छलों कुलटा भए गेलीं
तिनकर वचन लोभाई ।

अपने कर हम मूँड मुडाएल
कानु से प्रेम घटाई ॥ ६ ॥

चोर रमनि जनि मन मन रोअई
अमर वदन छिपाई ।

दीपक लोभ सलभ जनि धापल
से फल भुजइत चाई ॥ ८ ॥

भनइ विद्यापति इह कलजुग रित
चिन्ता करह न कोई ।

अपन करम दोष आपहि भुजइ
जे जन पर-यस होई ॥ १० ॥

१—कानुक = कृष्ण को । २—मूडलि = छोड़ दिया । पसारिप =

देवता है । ४—सिकता = बालू । पेसन = बैसा । सुहाग = सौभाग्य ।

५—छलों = भी । कुलटा = अभिचारिणी । तिनकर = उनके । ६—मूँड

(२०३)

के पतिश्चा लए जाएत रे
मोरा पियतम पास ।

हिय नहि सहए असह दुख रे
भेल साओन मास ॥ २ ॥

एकसरि भवन पिया विनु रे
मोरा रहलो न जाय ।

सखि अनकर दुख दारुन रे
जग के पतिश्चाय ॥ ४ ॥

मोर मन हरि हरि लय गेल रे
अपनो मन गेल ।

गोकुल तजि मधुपुर बस रे
कत अपजस लेल ॥ ६ ॥

विद्यापति कबि गाओल रे
धनि धरु पिय आस ।

आओत तोर मनभावन रे
एहि कातिक मास ॥ ८ ॥

मुड़ाएल = बदनाम हुई । ७—चोर-रगनि = चोर की छी । भग्गर = बल ।

८—सलम = पतंग । जनि = ऐसा । मुजहत चारं = भोगना ही चाहिये ।

१०—मुजह = भोगता है ।

१—के = कौन । २—भेल = दुभा, भाया । ३—एकसरि = अकेली

४—अनकर = दूसरे का । पतिम य—विश्वास करता है । ५—हरि लय

गेल = हरकर ले गये । अपनो = स्वयं भी । ८—आओत = आवेगा ।

सजनी, के कह आश्रोव मथाई ।

विरह पयोधि पार किए पाश्रोव
मभु मन नहिं पतिआई ॥ २ ॥

एखन-तखन करि दिवस गमाओल
दिवस दिवस करि मासा ।

मास-मास करि बरस गमाओल
छोडलू जीवन आसा ॥ ४ ॥

बरस-बरस करि समय गमाओल
खोयलू कानुक आसे ।

हिमकर किरन नलिनि जदि जारव
कि करव माधव मासे ॥ ६ ॥

अकुरे तपन ताप जदि जारव
कि करव वारिद मेहे ।

इह नव जीवन विरह गमाओव
कि करव से पिया मेहे ॥ ८ ॥

भनई विद्यापति सुन बर जौबति
अव नहि होइ निरासे ।

से ब्रजनन्दन हृदय अनन्दन
भटित मिलव तुअ पासे ॥ १० ॥

१—आश्रोव = आश्रित । २—पयोधि = समुद्र । ३—एखन-तखन = यह घण, वह घण । ४—छोडलू = मुला दिया । कानुक = कृष्ण का । ५—हिमकर = चंद्रमा । नलिनि = कमलिनि । जारव = जसायेगा ।

कातिक फत दिगन्तर वास ।

पिय पथ हेरि हेरि भेलहुँ निरास ॥

सुख सुखराति सयहु का भेल ।

हमे दुख साल सोआमि दय गेल ॥ ६ ॥

अगहन मास जीव के अत ।

अबहु न आएल निरदण कत ॥

एकसरि हम धनि सूतश्री जागि ।

नाहक आओत खाएत मोहि आगि ॥ ७ ॥

पूस खीन दिन दीघरि राति ।

पिआ परदेस मलिन भेल काँति ॥

हेरश्री चौदिस भूँखश्री रोय ।

नाह बिछोह काहु जन होय ॥ ८ ॥

माघ मास घन पडए तुसार ।

भिलमिल फेचुआँ उनत थन हार ॥

पुनमति सूतलि पिअतम फोर ।

विधि बस दैव बाम भेल मोर ॥ ९ ॥

६—दिगन्तर=दूर देश । वास=रहना । सुखराति=दीवाली की रात । सोआमी=स्वामी । ७—सूतश्री जागि=जागकर सोती हूँ-। जब मुझे आग खा जायगी, जब मैं विरह ज्वाला में मर जाऊँगी, तब भीतम व्यर्थ आदोंगे । ८—दीघरि=दीर्घ, बड़ी । भूँखश्री=भूँखती हूँ । तुसार=वफा । भिलमिल=बारीक चोली में समझे हुए कुच है, बिनके ऊपर हार है । बाम भेल=विमुख हुआ ।

फागुन मास धनि जोय उचाट ।

निरद-विचिन भेल हौराँ चाट ॥

आयल भक्त पिक पचम गाथ ।

से सुनि कामनि जोबहु सताव ॥१०॥

चेत चतुरपन पिय परयास ।

माली जाने कुसुम बिकास ॥

भमि भमि भमरा कर मधुपान ।

नागरि भइ पहु भेल असयान ॥११॥

वैसाख तवे खर मरन समान ।

कामिनि कत हनय पँचरान ॥

नहि जुडि छाहरि न बरसि बारि ।

हम जे अभागिनि पापिनि नारि ॥१२॥

जेठ मास उजर नव रग ।

कत चहय खलु कामिनि संग ॥

रूपनारायन पूरथ आस ।

भनइ विद्यापति धारह मास ॥१३॥

१०—धनि जोय उचाट=बाला का जो उचट गया । विचिन=विचित्र, अत्यंत कृत । पिक=कोयल । से=वह । सताव=सतावा है ।

११—प्रवास=विदेश में । कुसुम बिकास=फूल का खिलना । भमि=भरण कर । भमरा=मोरा । नागरि=चतुर । पहु=प्रीतम । १२—तवे=तब जाता है, गरम हो उठता है । खर=ठोढ़ण । जुडि=ठठाना । छाहरि=छाया । बरिस=बरसता है । बारि=पानी । ऊजर नवरग=नये रंग उलड़ गये । खलु=निश्चय । पूरथ=पूरा करे ।

कातिक कत दिगन्तर चाम ।

पिय पथ हेरि हेरि भेलहुँ निरास ॥

सुख सुखराति सगहु का भेल ।

हमे दुख साल सोआमि दय गेल ॥ ६ ॥

अगहन मास जीव के अत ।

अवहु न आपल निरदण कत ॥

एकसरि हम धनि सूतश्री जागि ।

नाहक आश्रोत खाएत मोहि आगि ॥ ७ ॥

पूस खोन दिन दीघरि राति ।

पिआ परदेस मलिन भेल काँति ॥

हेरश्री चौदिस भँखश्री रोय ।

नाह बिछोह काहु जन होय ॥ ८ ॥

माघ मास घन पड़ए तुसार ।

झिलमिल केचुआँ उनत थन हार ॥

पुनमति सूतलि पिअतम कोर ।

विधि बस दैव चाम भेल मोर ॥ ९ ॥

-दिगन्तर=दूर देश । वास=रहना । सुखराति=दीवाली की । सोआमी=स्वामी । ७—सूतश्री जागि=जागकर सोती जब मुझे भाग ला जायगी, जब मैं विरह ज्वाला में मर जाँ, तब प्रीतम व्यर्थ आरेंगे । ८—दीघरि=दीर्घ, बड़ी । भँख=भँखती हूँ । तुसार=बर्फ । झिलमिल बारीक चोली उगड़े हुए कुच है, जिनके ऊपर हार है । चाम भेल=विमुख हुआ ।

फागुन मास धनि जीव उचाट ।

चिरह-चिखिन भेल हेरश्रौं चाट ॥

आयल मत्त पिक पचम गाव ।

से सुनि कामनि जीवहु सताव ॥१०॥

चेत चतुरपन पिय परनास ।

माली जाने कुसुम बिकास ॥

भमि भमि भमरा कर मधुपान ।

नागरि भइ पहु भेल असयान ॥११॥

यैसाय तवे खर मरन समान ।

कामिनि कत हनय पँचयान ॥

नहि जुडि छाहरि न बरसि बारि ।

हम जे अभागिनि पापिनि नारि ॥१२॥

जेठ मास उजर नव रंग ।

कत चहए खलु कामिनि संग ॥

रूपनारायन पूरथु आस ।

भनइ विद्यापति बारह मास ॥१३॥

१०—धनि जीव उचाट=बासा बा नी उचट गया । चिखि=

विधीण, अत्यंत कुरा । पिक=कोपल । से=वह । सताव=सतावा है ।

११—प्रवास=विदेरा में । कुसुम बिकास=फूल का खिलना । भमि=

अमण कर । भमरा=भीरा । नागरि=चतुर । पहु=प्रीतम । १२—

तवे=तब आता है, गरम हो उठता है । खर=शीघ्र । जुडि=

ठगना । छाहरि=छाया । बरसि=बरसता है । बारि=पानी । ऊजर

नवरंग=नये रंग उलझ गये । खलु=निश्चय । पूरथु=पूर करे ।

(२१०)

अकामिक मन्दिर भेलि बहार ।
 चहुँदिस सुनलक भमर-भकार ॥ २ ॥
 मुठझि खसल महि न रहलि थीर ।
 न चेतए चिकुर न चेतए चीर ॥ ४ ॥
 केश्रो सखि बेनि धुन केश्रो धुरि भार ।
 केश्रो चानन अरगजश्रोँ संभार ॥ ६ ॥
 केश्रो बोल मत्र कान तर जोलि ।
 केश्रो कोकिल खेद डाकिनि बोलि ॥ ८ ॥
 अरे अरे अरे कान्हु की रमसि बोरि ।
 मदन-भुजंग डसु बालहि तोरि ॥ १० ॥
 भनइ विद्यापति एहो रस भान ।
 एहि विष-गारुड एक पए कान ॥ १२ ॥

१ — अकामिक = अकामाव । भेलि बहार = बाहर हुई । २ —
 भमर = भौरा । ३ — खसल = गिर पड़ी । थीर = स्थिरता । ४ —
 चेतए = संभालती है । चिकुर = कोरा । चीर = साड़ी । ५ — केश्रो
 = कोई । बेनि धुन = बेणी गूंथती है, बेणी संभालती है । धुरि भार
 = धूल भादती है । ६ — अरगजश्रोँ = कस्तूरी आदि के सेप से ।
 संभार = संभालती है । ७ — कान तर = कान के निकट । जोलि = धोर
 ने । ८ — खेद = खदेड़ती है । ९ — कि रमसि बोरि = क्या रमन कर
 बोल रहे हो । १० — गुहारी प्रेमिका को (बालहि) कामदेव रूपी सर्प
 ने काट लिया है । १२ — एक कृष्ण ही इन विष के लिये गरुड़ है ।

(२११)

माधव, कठिन हृदय परवासी ।
तुम पेअसि मोयँ देखल बियोगिनि
अग्रहु पलटि घर जासी ॥ २ ॥
हिमकर हेरि अवनत कर आनन
करु करुना पथ हेरी ।
नयन काजर लप लिखप विधुनुद
भय रह ताहेरि सेरी ॥ ४ ॥
दखिन पवन बह से कइसे जुगति सह
कर कवलित तनु अगे ।
गेल परान आस दप राखप
दस नख लिखप भुजगे ॥ ६ ॥
मीनकेतन भय सिव सिध सिव कय
घरनि लोटावप देहा ।
करे रे कमल लप कुव सिरिफल दप
सिव पूजप निज गेहा ॥ ८ ॥
परभृत के डर पायस लप कर
वायस निकट पुकारे ।
राजा सिवसिध रूप नरायन
करथु विरह उपचारे ॥ १० ॥

१—परवासी=प्रवासी विदेश में रहनेवाला । २—पेअसि=प्रेमसी, प्रेमिका । जासी=जाओ । ३—हिमकर=चन्द्रमा । अवनत=नीचे । विधुनुद=रुद्र । ताहेरि सेरी=दमीकी शाय में ।

(२१०)

अकामिक मन्दिर भेलि बहार ।

चहुँदिस सुनलक भमर-भकार ॥ २ ॥

मुठछि खसल महि न रहलि थीर ।

न चेतए चिकुर न चेतए चीर ॥ ४ ॥

केश्रो सखि बेनि धुन केश्रो धुरि भार ।

केश्रो चानन अरगजश्रो सँभार ॥ ६ ॥

केश्रो बोल मत्र कान तर जोलि ।

केश्रो कोकिल खेद डाकिनि बोलि ॥ ८ ॥

अरे अरे अरे कान्हु को रभसि बोरि ।

मदन-भुजंग डसु बालहि तोरि ॥ १० ॥

भनइ विद्यापति एहो रस भान ।

एहि विष-गारुड एक पप कान ॥ १२ ॥

१—अकामिक = अकस्मात् । भेलि बहार = बाहर हुई । २—
भमर = भौरा । ३—खसल = गिर पड़ी । थीर = स्थिरता । ४—
चेतए = संभालती है । चिकुर = केरा । चीर = साड़ी । ५—केश्रो
= कोई । बेनि धुन = बेणी गूँथती है, बेणी संभालती है । धुरि भार
= धूल झाड़ती है । ६—अरगजश्रो = कस्तूरी आदि के लेप से ।
सँभार = संभालती है । ७—कान तर = कान के निकट । जोलि = भोर
से । ८—खेद = खदेड़ती है । ९—कि रभसि बोरि = क्या रमस कर
बोल रहे हो । १०—तुम्हारी प्रेमिका को (बालहि) कामदेव रूपी सर्प
ने काट लिया है । १२—एक कृष्ण ही इस विष के लिये गरुड़ है ।

(२१३)

— सरदक ससधर मुखरुचि सौपलक
 हरिन के लोचन लीला ।
 केसपास लप चमरि के सांपलक
 पाप मनोभव पीला ॥ २ ॥
 माधर, जानलन जियति राही ।
 जतवा जकर ले ले छलि सुन्दरि
 से सर सौपलक ताही ॥ ४ ॥
 दसन दसा दालिम के सौपलक
 बन्धु अधर रुचि देली ।
 देह दसा सीदामिनि सौपलक
 काजर सनि सखि भेली ॥ ६ ॥
 मोहक भग अनग-चाप दिहु
 फोकिल के दिहु बानी ।
 केवल देह नेह अछ लओले
 एतना अपलहुँ जानी ॥ ८ ॥
 भनइ विद्यापति सुन वर जीवति
 चित भँवह जनु आने ।
 राजा सिवसिंघ रूपनरायन
 लखिमा देइ रमाने ॥ १० ॥

उठ नहीं सकी । ७ — दिन = गरीब, असाध्य । जीदसि = चतुदशी ।

१ — ससधर = चंद्रमा । मुखरुचि = मुख की रोमा । सौपलक = समर्पण किया । २ — चमरि = जिस गाव की दुम का चँवर होता है ।

(२१४)

आएल उनमद समय बसत ।
 दारुन मदन निदारुन कत ॥टेका॥
 ऋतु राज आज बिराज हे सखि
 नागरी जन बदिते ।
 नव रग नव दल देखि उपवन
 सहज सोभित कुसुमिते ।
 आरे, कुसुमित कानन कोकिल साद ।
 मुनिहुक मानस उपजु प्रसाद ॥ १ ॥
 अति मत्त मधुकर मधुर रव कर
 मालती मधु संचिते ।
 समय कत उदत नहि किछु
 हमहि विधि-वस-प्रचिते ॥
 वचित नागर सेह ससार ।
 एहि रिनुपतिसौं न करण बिहार ॥ २ ॥

मनोमव = कामदेव । पीला = पीडा । ४—जवना = भितना । जहर =
 बिसका । ले ले छलि = लिये हुए थी । ५—दालिम = दाहिम = अनार ।
 बन्धु = बंधुकी फूल । ६—सौदामिनि = बिबली । सनि = समान ।
 ७—मनुग-चाप दिहु = कामदेव के धनुष को दिया । ८—मछ = है ।
 पतना = इतना । ९—भँछइ = भोखना ।

१—उनमद = उ मत्त, पागल । दारुन = कठिन । निशसन =
 करुणाहीन । नागरी जन बदिते = नागरी जियों द्वारा पूजित ।
 नव = नवीन । दल = पत्ता । कुसुमित = खिले हुए । कानन = वन ।

अति हार भार मनोज्ञ मारण
 चंद्रखि सनि भानण ।
 पुण्य पाप सताप जत हो
 मन मनोभव जानण ॥
 जारण मनसिज मार सर साधि ।
 चानन देह चीगुन हो धाधि ॥ ३ ॥
 सब धाधि आधि वैआधि जाइति
 करिण धरज कामिनी ।
 सुपहु मन्दिर तुरित आओत
 सुफल जाइति जामिनी ॥
 जामिनि सुफल जाइति अवसान ।
 धरज धरु बिद्यापति भान ॥ ४ ॥

साद = सानि । विसाद = विषाद, दुःख । २—मधुकर = भौरा । रण =
 भावाज । उदत = वार्त्ता । सेह = बड़ी । कृतुप्रतिसौ = वसव मे ।
 ३—मनोज्ञ = कामदेव । चंद्र खि सनि भानण = चंद्रमा सूर्य
 के समान मालूम होता है । जत = जितना । मनसिज = कामदेव ।
 मार = मारता है । चानन = चंदन । धाधि = उजाना । ४—
 आधि वैआधि = शोक और पीड़ा । जारति = जायगो । सुपहु =
 सुप्रभु, प्यारे प्रीतम । आओत = आवेगा । जामिनि = रात । अवसान =
 अंत । भान = कहते हैं ।

“स्मृतिमपि न वे याति दमाया विन दनुमहम् ।
 प्रकृति महते कुमस्तस्यै नम कथिकर्मणे ॥”

(कृष्ण का विरह)

(२१७)

रामा हे, से किए विसरल जाई ।
 कर धरि माथुर अनुमति मगइत
 ततहि पडल मुखआई ॥ २ ॥
 किछु गदगद सरे लहु-लहु आखरे
 जे किछु कहल वर रामा ।
 कठिन कलेवर तेई चलि आओल
 चित्त रहल सोइ ठामा ॥ ४ ॥
 से बिनु रात दिवस नहि भावप
 ताहि रहल मन लागी ।
 आन रमनि सयँ राज सम्पद मोयँ
 आछिए जइसे विरागी ॥ ६ ॥
 दुइ एक दिवस निचय हम जाओब
 तुहु परबोधवि राई ।
 विद्यापति कह चित्त रहल तहि
 प्रेम मिलाएब जाई ॥ ८ ॥

व्याकुल हो उठती है । यो दोनों अवस्थाओं में मर्म व्यथा सहती है ।

१—रामा=सुन्दरी (सखि) । से=वह । किए=क्यों ।
 विसरल=भूलना । २—सरे=स्वर में । लहु लहु आखरे=
 मधुर शब्दों में । जे किछु=जो कुछ । ४—तेई=उसीसे । ५—
 से=वह (रामा) । ६—आन=अन्य । आछिए=हूँ । ७—निचय
 =निश्चय । ८—तहि=वहीं ।

(२१८)

तिल एक सयन ओत जिउ न सह्य
न रह्य दुहु तनु भीन ।
माँभे पुलक गिरि अतर मानिए
अइसन रहु निसि-दीन ॥ २ ॥
सजनी कोन परि जीवय कान ।
राहि रहल दुर हम मथुरापुर
एतहु सह्य परान ॥ ४ ॥
अइसन नगर अइसन नव नागरि
अइसन सम्पद मोर ।
राधा बिनु सथ बाधा मानिए
नयनन तेजिए नोर ॥ ६ ॥
सोइ जमुना जल सोइ रमनीगन
सुनइत चमकित चीत ।
कह कविसेखर अनुभवि जनलौं
बडक बडई पिरीत ॥ ८ ॥

१—तिल एक = एक छय के लिये भी । ओत = ओट । भीन = भिन्न । माँभे = मध्य में । २—मिलन के समय रोमांच हो जाने से मिलने में किंचिद् नाम प्रायः का-व्याघात हो जाता था, अतएव, रोमांच हमलोगों को पक्षी के समान मालूम पड़ता था, इस प्रकार हम दिन रात मिले हुए थे । ३—कोन परि = किस प्रकार । ४—अइसन = ऐसा । ५—नोर = नाँव । ६—अनुभवि = अनुभव कर के । जनलौं = जात गया ।

(२१६)

रस बसत समय भल पाओलि
दछिन पवन बहु धोरे ।
सपनहुँ रूप बचत एरु भाखिए
मुख सौँ दूरि करु चीरे ॥२॥
तोहर वदन सम चानु होअधि नहि
जइओ जतन बिहि देला ।
कए बेरि काटि बन्नाओल नउ कए
तइओ तुलित नहि भेला ॥४॥
लोचन तूल कमल नहि भए सक
से जग के नहि जाने ।
से फेरि जाए लुकाएल जल भए
पंकज निज अघमाने ॥६॥
भनहि बिद्यापति सुनु वर जोबति
ई सम लछमी समाने ।
राजा सिवसिंघ रूपनरायन
लखिमा देइ पति भाने ॥८॥

१—पाओलि=पाया । २—रस मे एक आदमी ने आकर
कहा—भरी, मुख से अचल इटाओ । ३—वदन=मुख । चानु=
चन्द्रमा । जइआ=यद्यपि । बिहि=विधाता । ४—कए=कितने ।
कए=काया, शरीर । तइओ=तो भी । तुलित=तुल्य, समान । ५—
तूल=तुल्य । भए सक=हो सकता । लुकाएल=छिप गया । जल भए=
जल में । पंकज=कमल । ६ सम=यह सब ।

(२२०)

सुतलि छलहुँ हम घरुआ रे
गरुआ मोतिहार ।

राति जखनि भिनुसरवा रे
पिया आपल हमार ॥२॥

कर कौसल कर कपइत रे
हरवा उर टार ।

कर पकज उर थपइत रे
मुख-चढ़ निहार ॥ ४ ॥

कैहनि अभागलि बैरिनि रे
भागलि मोर निन्द ।

भल कए नहि देख पाओल रे
गुनमय गोविन्द ॥ ६ ॥

विद्यापति कवि गाओल रे
धनि मन धरु धीर ।

समय पाए तरुवर फर रे
कतयो सिंचु नीर ॥ ८ ॥

- १—सुतलि छलहुँ = सोई थी । गरुआ = गले में । २—जखनि = जिस समय । भिनुसरवा = मोर, उप काज । आपल = भाया । ३—जतुराई करवे दुप कौपते हाथ से दृश्य का पार इटाया । ४—कर पकज = कमल कपी हाथ । थपइत = स्थापित करते, धरते । पाती पर हाथ देकर मुँह देखने लगे । ५—कैहनि = कैसी । अभागलि = अभागिनी । ६—मन कए = अच्छी तरह । ८—पार =

(२२०)

सुतलि छलहुँ हम घरवा रे
गरवा मोतिहार ।

राति जखनि भिनुसरवा रे
पिया आपल हमार ॥ २ ॥

कर कौसल कर कपहत रे
हरवा उर टार ।

कर-पकज उर थपहत रे
मुख-चढ़ निहार ॥ ४ ॥

केहनि अभागलि बेरिनि रे
भागलि मोर निन्द ।

भल कए नहि देख पाओल रे
गुनमय गोविन्द ॥ ६ ॥

विद्यापति कवि गाओल रे
धनि मन धरु धीर ।

समय पाए तरुवर फर रे
कतयो सिंचु नीर ॥ ८ ॥

- १—सुतलि छलहुँ = सारं थी । गरवा = गले में । २—जखनि = जिस समय । भिनुसरवा = मोर, वप काल । आपल = प्राया । ३—चतुराई करते हुए कपते हाथ से दृश्य का दार दटाया । ४—कर पकज = कमल रूपी हाथ । थपहत = स्थापित करते, धरते । दाती पर दाप देकर मुँह देखने लगे । ५—केहनि = किसी । अभागलि = अभागिनी । ६—भल कर = अच्छी तरह । ७—पाए =

(२२१)

मोरा रे अँगनवाँ चनन केरि गछिआ
ताहि चडि कुरुरय काग रे ।
सोने चौच वाँधि देव तोर्यँ बायस
जअँ पिया आओत आज रे ॥ २ ॥
गावह सखि सब भूमर लोरी
मयन-अराधन जाऊँ रे ॥ ३ ॥
चओदिस चम्पा मओली फूललि
चान इजोरिया राति रे ।
कइसे कय मोर्यँ मयन अराधन
होइति चाड रति-साति रे ॥ ४ ॥
विद्यापति कथि गावण तोहर
पहु अछ गुनक निधान रे ।
राओ भोगीसर सग गुन आगर
पदमा देइ रमान रे ॥ ७ ॥

फलता है । कवयो सिंचु नीर = कितना भी पानी पटाओ ।

१ — अँगनवाँ = अँगन में । चनन केरि = चन्दन का ।
गछिया = वृक्ष । कुरुरय = बोल रहा है । २ — सोने = स्वर्ण से ।
तोर्यँ = तुझे । बायस = काग । ३ — गावह गामो । मयन-अराधन =
कामदेव की अराधना करने । ४ — मओली = महिला । चान = चन्द्रमा ।
इजोरिया = चाँदनी । ५ — कइसे कय = किस प्रकार । होइत =
होयगी । रतिसाति = रति जनित पीड़ा । ६ — पहु = प्रीतम । अछ = है ।
७ — रमान = पति ।

२२६

(२२२)

भंगने आओव जब रसिया ।
 पलटि चलब हम इपत हँसिया ॥ २ ॥
 रस-नागरि रमनी ।
 कत कत जुगति मनहि अनुमानी ॥ ४ ॥
 आवेसे आंचर पिया धरबे ।
 जाएव हम न जतन बहु करबे ॥ ६ ॥
 कँचुआ धरब जब हठिया ।
 करे कर बांधव कुटिल आध दिठिया ॥ ८ ॥
 रमस मांगव पिआ जग ही ।
 मुख मोडि बिहँसि चोलब नहि नहि ॥ १० ॥
 सहजहि सुपुख भमरा ।
 मुख-कमलक मधु पीअब हमरा ॥ १२ ॥
 तखन हरथ मोर गेश्राने ।
 विद्यापति कह धनि तुअ धेयाने ॥ १४ ॥

१—भंगने=भंगन में । आओव=आयेंगे २—इपत=
 थोड़ा थोड़ा । ३—रसनागरी=रस में चतुरा, सुरसिका । ४—कत=
 कितनी । जुगति=युक्ति । ५—आवेसे=आवेश में, उत्तेजित
 होकर । ६—वे बहुत यत्न करेंगे, किन्तु मैं न जाऊँगी । ७—
 कँचुआ=कँचुकी, चोली । हठिया=हठकर । ८—(कपने)
 हाथ से (उनके) हाथ को बाधा दूँगी और तिरछी एवं आपसी
 चितवन से देखूँगी । ९—रमस=रति मीठा । बिहँसि
 हँसकर । ११—भमरा=भीरा । १२—पीअब=पीयेगा ।

(२२३)

पिया जब आओर ह मभु मेहे ।

मगल जतहु करय निज देहे ॥ २ ॥

कनअ कुम्भ करि कुच जुग गति ।

दरपन धरय फाजर देह आँखि ॥ ४ ॥

बेदि यनाओय हम अपन अंगुलि

भाड परय ताहे चिकुर बिछीने ॥ ६ ॥

कदलि रोपय हम गरुष नितम्ब ।

आम पल्लव ताहे फिकिन तुम्हम्ब ॥ ८ ॥

दिसि दिसि आनव फामिनि ठाट ।

चौदिसि पसारय चौंश्क हाट ॥ १० ॥

बिद्यापति कह पुरय आस ।

हुइ एक पलक मिलय तुअ गान ॥ १२ ॥

१३—तखन = वस समय । (काम प्रपञ्च के समय) मेरा गान बर सेंग ।

१—आओर = आवेगें । २=पर । मभु=मेरे । मेरे=पर मे । जिनना मगल करना होगा, जान सही न ही कहेंगी ।

३—कनअ-कुम्भ=सोने के घड़े । कुच जुग=दीर्घी कुम्भ । ४—

आँखों में फाजर लगाकर उसे दर्पण रूप में बर्तकी=मेरी आँखों में प्रीतम अपना रूप देखेंगे । ५—वेग=बीबा । अंगुलि=गोरी ।

६—केरा को बिच्छिन कर (छोतकर) कनमें भावू कहेंगी । ७—

कदलि=केला । गरुष=विशाल । तुम्हम्ब=आन्दोलित, शब्दित ।

८—आनव=जाऊँगी । ठाट=सपूट । ९=बाजार । रिचो=कड़वा

१०—चौदिसि की गणना में चौदह गणने . . . ११=बाजार । रिचो=कड़वा

(२२४)

दुहुक दुलह दुहु दरसन भेल ।

बिरह जनित दुख सब दुर गेल ॥ २ ॥

कर धरि बइसाओल विचित्र आसन ।

रमन-रतन-स्याम रमनी रतन ॥ ४ ॥

बहु विधि बिलसए बहु विधि रग ।

कमल मधुप जनि पाओल सग ॥ ६ ॥

नयन नयन दुहु वयन वयान ।

दुहु गुन दुहु गुन दुहुजन गान ॥ ८ ॥

भनइ विद्यापति नागरि भोर ।

त्रिभुवन विजयी नागर चोर ॥ १० ॥

(२२५)

चिर दिन से बिहि भेल अनुकुल रे ।

दुहु मुख हेरइत दुहु से आकुल रे ॥ २ ॥

बाहु पसारिप दुहु दुहु धरु रे ।

दुहु अधरामृत दुहु मुख भरु रे ॥ ४ ॥

दुहु तनु काँपइ मदन उछल रे ।

किन किन किन खरि किकिनि खचल रे ॥ ६ ॥

जाइतेहि स्मित नव बदन मिलल रे ।

दुहु पुलकावलि ते लहु लहु रे ॥ ८ ॥

रस मातल दुहु बसन खसल रे ।

विद्यापति रस-सिन्धु उछलल रे ॥ १० ॥

(२२६)

सुनु रसिस्रा,

अव न बजाऊ बिपिन बैसिस्रा ॥ २ ॥

बार बार चरनारविंद गहि

सदा रह्य बनि दसिया ।

। कि छलहुँ कि होएव से के जाने

वृथा होएत कुल हँसिया ॥ ४ ॥

अनुभव ऐसन मदन—भुजंगम

हृदय मोर गेल डसिया ।

नद नदन तुअ सरन न त्याग्य

बलु जग होए दुरजसिस्रा ॥ ६ ॥

बिद्यापति कह सुनु बनितामनि

तोर मुख जीतल ससिस्रा ।

धन्य धन्य तोर भाग गोआरिनि

हरि भजु हृदय हुलसिस्रा ॥ ८ ॥

हँसते हुए । पुलकावलि = रोमांच । मतल = मत्त बना । ससन = गिर पड़ा ।

१—रसिस्रा = रसिक । २—बैसिया = बैशी । ३—दसिस्रा =

दासी । ४—कि = क्या । छलहुँ = धो । होएव = होऊँगी, बनूँगी ।

से = यह बात । के = कौन । कुल हँसिया = कुल को निन्दा ।

५—ऐसन = इस प्रकार । मदन भुजंगम = काम रूपी सर्प । गेल डसिया

= डँस गया, काट गया । ६—बलु = भले दी, बरन । दुर-

जसिस्रा = अपयश, कलक । ७—बनितामनि = लियो मे रत्न समान ।

जीतल = जीत लिया । ससिस्रा = नद्रमा ।

(२२७)

सखि, कि पुछसि अनुभव मोय ।

से हो गिरित अनुराग बखानिष

तिल तिल नूतन होय ॥ २ ॥

जनम अवधि हम रूप निहारव

नयन न तिरपित भेल ।

सेहो मधु घोल स्रवनहि सुनल

स्रुति पथ परम न भेल ॥ ४ ॥

कत मधु-जामिनि रभस गमाओल

न वूझल कहसन केल ।

लाख लाख जुग हिय हिय राखल

तइओ हिय जुडल न गेल ॥ ६ ॥

कत विदग्ध जन रस अनुमोदई

अनुभव फाहु न पेख ।

विद्यापति कह प्राण जुडाएत

लाखे न मिलल एक ॥ ८ ॥

- १—कि पुछसि=क्या पूछती हो ? मोय=मुझसे । २—
 से हो=वही । तिल तिल=छण छण । ३—निहारल=देखा ।
 ४—स्रवनहि=कानों से । परस=स्पर्श । ५—मधु जामिनि—
 बसंत की रात । रभस=काम कीड़ा । गमाओल=बिता दी ।
 केन=केलि । ६—तइओ=वो भी । जुडल न गेल=न जुड़ाया,
 ठड़ा न हुआ । ७—विदग्ध=विदग्ध, रसिक । रस अनुमोदई=रस का
 उपभोग करते हैं । पेख=देखना । ८—लाख में एक न मिला ।

प्रार्थना और नचारी



क्रुद्ध सुररिपु बलनिपातिनि
महिष शुम्भ-निशुम्भ-घातिनि
भीत-भक्त-भयापनोदन—

पादल प्रबले ॥ २ ॥

जय देवि दुर्गे दुरिततारिणी
दुर्ग मारि विमर्द हारिणि
भक्ति नम्र सुरासुराधिप—
मगलायतरे ।

गगन मडल गर्भगाहिनि
समरभूमिषु सिंहवाहिनि
परसु पाश कृपाण-सायक—

शंख-चक्र घरे ॥ ३ ॥

अष्ट भैरवि सग शालिनि
सुकर कृत्त कपाल कदम्ब मालिनि
दनुज शोणित पिशित वद्धित—
पारणा रमसे ।

ससारवध निदानमोचिनि
चन्द्र-भानु कृशानु-लोचिनि
योगिनो गण गीत शोमित-

नृत्यभूमि रसे ॥ ६ ॥

भन विद्यापति सुनइ महेसर
इ लागि कपलि तुअ सेवा ।
एतए जे घर से घर होअल
ओतए जाएअ जनि देवा ॥ ८ ॥

(२३४)

हम नहि आज रहव यहि आंगन
जो बूढ होएत जमाई, गे माई ।
एक त बहरि भेला बीच बिधाता
दोसरे धिया कर बाप ।
तीसरे बहरि भेला नारद बाभन
जे बूढ आनल जमाई, गे माई ॥
पहिलुक बाजन डामरु तोरब
दोसरे तोरब रुंडमाला
घरद हांकि बरिआत वेलाइव
धिआले जाएव पराई, गे माई ॥
धोती लोटा पतरा पोथी
पहो सभ लेबन्ह छिनाई ।
जौं किछु बजता नारद बाभन
दाढी धए घिसिआएव, गे माई ॥
भन विद्यापति सुनु हे मनाइन
दढ कर अपन गेशान ।
सुम सुम कए सिरी गौरी बिआहु
गौरी हर एक समान, गे माई ॥

(२३५)

नाहि करव घर हर निरमोहिया ।
 वित्ता भरि तन बसन न तिन्हका
 बघछल काँख तर रहिया ॥ २ ॥
 वन वन फिरथि मसान जगावधि
 घर आँगन ऊ बनोलनि कहिया ।
 सासु ससुर नहि ननद जेठौनी
 जाए वैठति धिया केकरा ठहिया ॥ ४ ॥
 धुड़ बडद ठकपोल गोल एक
 सम्पति भाँगक भारिया ।
 भनइ विद्यापति सुनु हे सुनाइन ॥
 सिव सन दाती जनत के कहिया ॥ ६ ॥

(२३६)

फतए गेला मोर धुड़वा जतो ।
 पीसल भाँग रहल सेइ गतो ॥ २ ॥
 आन दिन निषहि रहयि मोर पतो ।
 आज लगाइ देल फौन उदगती ॥ ४ ॥
 एकसर जोहए जाएव फौन गती ।
 ठेसि खसव मोरि होन दुरगती ॥ ६ ॥
 नदनवन बिच मिलल मदेस ।
 गौरी हरषित भेल छुटल फलेस ॥ ८ ॥
 भनइ विद्यापति सुनु हे सती ।
 इहो जोगिया धिक त्रिभुवन पती ॥ १० ॥

(२३७)

जोगिया एक हम देखलौं गे माई ।

अनहद रूप कहलौ नहि जाई ॥ २ ॥

पच बदन तिन नयन बिसाला ।

बसन बिहुन ओढन बघछाला ॥ ४ ॥

सिर बहे गग तिलक सोहे चदा ।

देखि सरूप मेटल दुखददा ॥ ६ ॥

जाहि जोगिया लै रहलि भवानी ।

मन आनलि बर कौन गुन जानी ॥ ८ ॥

कुल नहि सिल नहि तात महतारी ।

बएस दिनक थिक लछु जुग चारो ॥ १० ॥

भन विद्यापति सुनु ए मनाइनि ।

एहो जोगिया थिक त्रिभुवन दानि ॥ १२ ॥

(२३८)

सिख हो, उतरब पार कओन विधि ।

लोढ़ब कुसुम तोरब बेलपात ।

पुजब सदासिख गोरिक सात ॥

बसहा चढ़ल सिख फिरहु मसान ।

भंगिया जरठ दरदो नहि जान ॥

जप तप नहि कैलहु नित दान ।

प्रित गेला तिन पन करइत आन ॥

भन विद्यापति सुनु हे महेस ।

निरधन जानिके हरहु कलेस ॥

(२३६)

जखन देखल हर हो गुननिधी ।

पुरल सकल मनोरथ सब बिधी ॥२॥

बसहा चढल हर हो बुढ़ जती ।

काने कुडल सोभे गले गजमोती ॥४॥

वइसल महादेव चौका चढी ।

जटा छिरिआओल माओल भरी ॥६॥

विधिकरु विधिकरु विधिकरु करु ।

विधि न करइ से हर हो हठ धरु ॥८॥

बिधिए करइत हर हो घुमि खँसु ।

सँसरि यसल फनि सिरि गौरी हँसु ॥१०॥

फेओ नहि किहु कइइन्हि दिनकहुँ ।

पुरविल लिखल छला मोर पहुँ ॥१२॥

फरि बिद्यापति गाओल ।

गोरी उचित घर पाओल ॥१४॥

(२४०)

हर जनि बिसरय मो ममिता,

हम नर अधम परम पतिता ।

तुअ सन अधम उधार न दोसर

हम सन जग नहि पतिता ॥२॥

जम के छार जवाय कओन देख

जखन बुझत निजगुन कर घतिया ।

३०५

जब जम किंकर कोपि पठाएत
तखन के होत धरहरिया ॥४॥

भन विद्यापति सुकवि पुनित मति
सकर विपरित बानी ।

असरन सरन चरन सिर नाओल
दया करु दिअ सुलपानी ॥६॥

(२४१)

एत जपन्तप हम किअ लागि कैलहु
कथिला कएलि नित दान ।

हमरि धिया के एहो बर होएता
अब नहि रहत परान ॥२॥

हर के माय बाप नहि थिकइन
नहि छइन सोदर भाय ।

मोर धिया जो सासुर जैती
बइसति ककर लग जाय ॥४॥

घास काटि लौती बसहा चरीती
कुटती भांग धतूर ।

एको पल गौरा बैसहु न पौतो
रहती ठाढ़ि हजूर ॥ ६ ॥

भन विद्यापति सुनु ए मनाइनि
दृढ़ करु अपन गेश्रान ।

तीन लोक के एहो छथि ठाकुर
गौरा देवी जान ॥ ८ ॥

(२४२)

कखन हरघ दुख मोर
हे भोलानाथ ।

दुखहि जनम भेल दुखहि गमाएव
सुख सपनहु नहि भेल, हे भोलानाथ ।

आछत चानन ऊवर गंगाजल
बेलपात तोहि देब, हे भोलानाथ ।

यहि भव-सागर थाह कतहु नहि
भैरव धरु कर आप, हे भोलानाथ ।

भन बिद्यापति मोर भोलानाथ गति
देहु अभय वर मोहि, हे भोलानाथ ।

(२४३)

यहि विधि ब्याहन आयो
एहन वाउर जोगी ।

टपर टपर कए बसहा आयल खटर खटर रँडमाल ॥
भकर भकर सिव भाँग भकोसथि डमरु लेल कर लाय ॥
पेपन मँटल पुरहर फोरल बर किमि चौमुख दीप ॥
धिआ ले मनाइनि मडप बइसलि गाविष जनु सखि गीत ॥
भन बिद्यापति सुनु ए मनाइनि ई थिका त्रिभुवन ईस ॥

(२४४)

आहु आथ एक वस्त माहि सुख लागत हे ।
तोहँ सिव धरि नट घेप कि डमरु बजाएव हे ॥

भल न कहलें गउंरु रउंरा आनु सु नाचव हे
 सदा सोच मोहि होत कवन विधि चांचव हे ॥
 जे जे सोच मोहि होत कहा समुभाष्य हे ।
 रउरा जगत के नाथ कवन सोच लाग्य हे ॥
 नाग ससरि भुमि खसत पुहुमि लोटायत हे ।
 गनपत पोसल मजूर सेहो धरि खायत हे ॥
 अमिय चूड़ भुमि खसत बघमर जागत हे ।
 होत बघमर बाघ बसह धरि खायत हे ॥
 दूटि खसत रुद्राछ मसान जगायत हे ।
 गौरी कह दुख होत विद्यापति गावत हे ॥

(२४५)

आगे माइ, जोगिया मोर जगत सुखदायक

दुख ककरो नहि देल ।

०) दुख काकरो नहि देल महादेव
 दुख ककरो नहि देल ।

यहि जोगिया के भांग भुलैलक
 धतुर खोश्राइ धन लेल ॥

आगे माइ, कातिक गनपति दुइजन बालक

- जग भरि के नहि जान ।

तिनका अभरन किछुओ न थिकइन

०) रति यक सोन नहि फान ॥

०) आगे माइ, सोनी रूपा अनका सुत अभरन

आपन रुद्रक माल ।

भाइ विभीषन चड तप कैलन्हि
 जपलन्हि रामक नाम, गे माई ।
 पुरुष पछिम एको नहि गेला
 अचल भेला यहि ठाम, गे माई ।
 बीस भुजा दस माथ चढाओलि
 भाँग दिहल भर गाल, गे माई ।
 नीच-ऊँच सिव किछु नहि गुनलन्हि
 हरषि देलन्हि रुँडमाल, गे माई ।
 एक लाख पूत सवा लाख नाती
 फोटि सोवरनक दान, गे माई ।
 गुन अवगुन सिव एको नहि बुझलन्हि
 रखलन्हि रावनक नाम, गे माई ।
 भन विद्यापति सुकवि पुनित मति
 कर जोरि बिनश्रीं महेस, गे माई ।
 गुन अवगुन हर मन नहि आनथि
 सेषकक रहथि कलेस, गे माई ।

(२४८)

जानकी-चन्दना

रे नरनाह सतत भजु ताहो ।
 ताहि, नहि जननि जनक नहि जाही ॥२॥
 घसु नरहरा ससुरा के नाम ।
 जननिक सिर चढ़ि गेल चढ़ि गाम ॥४॥

सासुक कोर में सुतल जमाय ।

समधि बिलह तौ बिलहल जाय ॥६॥

जाहि ओदर से बाहर भेलि ।

से पुनि पलटि ततय चलि गेलि ॥७॥

भन बिद्यापति सुकबी भान ।

कवि के कवि कहँ कवि पहचान ॥१०॥

गंगा-स्तुति

(२४६)

बड सुख सार पाओल तुअ तीरे ।

छोड़इत निकट नयन यह नीरे ॥२॥

करजोरि बिनमओँ विमल तरंगे ।

पुन दरसन होए पुनमति गंगे ॥४॥

एक अपराध छेमब मोर जानी ।

परसल माए पाए तुअ पानी ॥६॥

कि करब जप तप जोग धेआने ।

जनम कृनारथ एकहि सनाने ॥८॥

भनइ बिद्यापति समदओँ तोही ।

अन्त काल जनु बिसरइ मोही ॥१०॥

(२५०)

ब्रह्मकर्मण्डलु यास सुगसिनि

सागर नागर-गृहबाले ।

पातक महिष विदारण कारण
 धृतकरवाल घीचि-माले ॥
 जय गंगे जय गंगे ।
 शरणागत भय भगे
 सुर मुनि मनुज रचित पूजोचित
 कुसुम विचित्रित तीरे ।
 त्रिनयन मौलि जटाचप चुम्बित
 भूति भूषित सित नीरे ॥
 हरिपद कमल गलित मधुसोदर
 पुण्य पुनित सुरेलोके ।
 प्रविलसदमरपुरी-पद दान-
 विधान विनाशित शोके ॥
 सहज दयालुतया पातकि जन
 नरकविनाशेन निपुणे ।
 रुद्रसिंह नरपति वरदायक
 विद्यापति कवि भणित गुणे ॥

कृष्ण-कीर्तन

(२५१)

माधव, कत तोर करव बडाई ।
 उपमा, तोहर कहव करुण हम
 कहितहुँ अधिक लजाई ॥

करम विपाक गतागत पुन पुन
मति रह तुअ परसग ॥
भनइ विद्यापति अतिसय कातर
तरइत इह भव-सिंधु ।
तुअ पद-पल्लव करि अबलम्बन
तिल एक देह दिनबधु ॥

(२५३)

तातल सैकत बारि-बिन्दु सम
सुत-मित रमनि समाज ।
तोहे बिसारि मन ताहे समरपिनु
अब मभु हब कोन काज ॥
माधव, हम परिनाम निरासा ।
तुहुँ जगतारन दीन दयामय
अतए तोहर बिसबासा ।
आध जनम हम नौंद गमायनु
जरासिखु कत दिन गेला ।
निधुवन रमनि-रभस रंग मातनु
तोहे भजर कोन बेला ॥
कत चतुरानन मरि मरि जाओत
न तुअ आदि अवसाना ।
तोहे जनमि पुन तोहे समाओत
सागर लहरि समाना ॥

(२५५)

व्यथा

माधव, कि कहव तोहर गेश्रान ।
 १ सुपहु कहलि जव रोष कयल तव
 कर मूनल दुहु कान ॥ २ ॥
 २ आयल गमनक बेरि न नीन टरु
 तइ किछु पुछिओ न भेला ।
 एहन करमहीनि हम सनि के धनि
 कर से परसमनि गेला ॥ ४ ॥
 जश्रो हम जनितहुँ एहन निठुर पहु
 कुच-कचन-गिरि-सांधि ।
 कौसल करतल बाह-लता लय
 दढ करि रग्वितिहुँ बांधि ॥ ६ ॥
 ३ सुमिरिए जव जाओ मरिए तव
 बूझि पड हृदय पपाने ।
 हिमगिरि-कुमरी चरन हृदय धरि
 कवि विद्यापति भाने ॥ ८ ॥

(२५६)

प्रेम

फूल एक फुलवारि लाओल मुरारि ।
 जतने पटाओल सुवचन-वारि ॥ २ ॥
 चौदिस बान्हल सीलक आरि ।
 अघलमन कर अचधारि ॥ ४ ॥

ततहु फुलल फुल अभिनव पेम ।
 जसु मूल लहए न लाखहु हेम ॥६॥
 अति अपरुष फुल परिनत भेल ।
 दुइ जिर अछल एक भए गेल ॥७॥
 पिसुन-कीट नहीं लागल ताहि ।
 सादस फल देल बिहि निरवाहि ॥१०॥
 विद्यापति कह सुन्दर सेहु ।
 करिष जतन फलमत होए जेहु ॥१२॥

(२५७)

शिवसिंह का युद्ध
 दूर दुग्गम दमसि भजेश्रो
 गाढ गढ़ गूढिय गँजेश्रो
 पातसाह ससीम सीमा
 समर दरसश्रो रे ॥ १ ॥
 दोत तरल निसान सहहि
 भेरि कोहल सख नहहि
 तीनि भुवन निकेत
 केतकि सान भरिश्रो रे ॥ २ ॥
 कोह नीरे पयान चलिश्रो
 वायु मध्ये राय गरुश्रो
 तरनि तेश्र तुलाधरा
 परताप गहिश्रो रे ॥ ३ ॥

मेरु कनक सुमेरु कम्पिअ
धरनि पूरिय गगन भम्पिअ
हानि तुरण पदाति पयभर
कमन सहिओ रे ॥ ४ ॥

तरल तर तरवारि रगे
बिज्जुदाम छटा तरगे
घोर घन सघात वारिस-
काज दरसेओ रे ॥ ५ ॥

तुरण फोटिअ चाप चूरिअ
चारि दिसि सौं विदिस पूरिअ
बिषम सार असाढ़ घारा
धरनी भरिओ रे ॥ ६ ॥

अन्ध कूअ कयन्ध लाइअ
केरवी फफरिस गाइअ
रुहिर मत्त परेत भूत
घैताल बिछलिओ रे ॥ ७ ॥

पार भइ परिपधि गजिअ
भूमि मडल मुड मंडिअ
चारु चन्द्र कलेव कीत्ति
सुकेत की तुलिओ रे ॥ ८ ॥

राम रूप स्वधम्म सिक्खिअ
दान दण्ड दधीचि रक्खिअ

नखसौं लिखल नलिनि दल पात ।
लीखि पठाओल आखर सात ॥
पहिलहि लिखलनि पहिल बसत ।
दोसरें लिखलनि तेसरक अत ॥
लिखि नहि सकली अनुज बसत ।
पहिलहि पद अछि जोरक अत ॥
भनहि विद्यापति आखर लेख ।
बुध-जन हो से कहए बिसेख ॥

(२६१)

डिज आहर- आहर सुत नदन
सुत आहर सुत रामा ।
चनज बधु सुत सुत दए सुन्दरि
चललि संकेतक ठामा ॥
माधव बूझल कथा विसेली ।
तुअ गुन लुबुधलि प्रेम विश्वासलि
साधस आइलि उपेली ॥
हरि अरि अरि पति ता सुत बाहन
जुवलि नाम तसु होई ।
गोपति पति अरि सह मिलु चाहन
बिरमति करहु न होई ॥
नागर नाम जेग धनि आवए
हरि अरि अरि पति जाने ।

नौमि दसाह एक मिलु कामिनि
सुखवि विद्यापति भाने ॥

(बाळ-विवाह)

(२६२)

पिया मोर बालक हम तरुनी ।
कोन तप चुकलौं द भेलौं द जननी ॥
पहिर लेल सखि एक दछिनक चीर ।
पिया के देखैत मोर दगध शरीर ॥
पिया लेली गोद के चललि बजार ।
हृदियाक लोग पूछे के लागु तोहार ॥
नहि मोर देवर कि नहि छोट भाई ।
पुरुष लिखल छल घालमु हमार ॥
यादरे बढोहिया कि तुहु मोरा भाई ।
हमरो समाद नैहर लेने जाऊ ॥
कहिहुन ब्या के किरण धेनु गाई ।
दुधवा पियाइके पोसता जमाई ॥
नहि मोर टका अछि नहि धेनु गाई ।
कौनइ विधि सँ पोसय जमाई ॥
भनइ विद्यापति सुनु ब्रजनारी ।
धोरज घरह त मिलत मुरारी ॥

(परकीया)

(२६३)

अपर पयोधि मगन भेल सूर ।
नखि कुल-सकुल बाट विदूर ॥
नर परिहरि नारिक घर गेल ।
पथिक गमन पथ ससय भेल ॥
अनतए पथिक करिअ परवास ।
हमे धनि एकलि कत नहि पास ॥
एक चिंता अशोक मनमथ सोस ।
दसमि दसामोहि कश्रोतक दोस ॥
रयनि न जाग सखी जन मोर ।
अनुखन सगर नगर भम चोर ॥
तेहे तरुनत हम बिरहिनि नारि ।
उचितहु वचन उपज कुलंगारि ॥
वामा वचन वाम पथ धाव ।
अपन मनोरथ जुगुति बुझाव ॥
भनइ विद्यापति नारि सुजानि ।
भल कए रखलक दुहु अनुमानि ॥

(२६४)

हम जुयती पति गेलाह विदेस ।
लग नहि वसए पड़ोसियाक लेस ॥

सासु दोसरि किहुओ नहिं जान ।
 आँख रतौधो सुनए नहिं फान ॥
 जागह पथिक जाह जनु भोर ।
 राति अंधार गाम बड चोर ॥
 भरमहु भौरि न देख कोतवार ।
 फाहु न केश्रो नहिं करए बिचार ॥
 अधिप न कर अपराधहु साति
 पुरुष महते सब हमर सजाति ॥
 विद्यार्पात कवि यह रस गाव ।
 उहुतिहु अबला भाव जनाव ॥
 (विद्यार्ति की मृत्यु)

(२६५)

दुखहि तोहरि कतए छथि माय ।
 कहुन ओ आवधु पखन नहाय ॥
 वृथा बुझथु ससार बिलास ।
 पल पल नाना तरहक घास ॥
 माय बाप जौ सदगति पाव ।
 सतति को अनुपम सुख आव ॥
 विद्यापतिक आयु अवसान ।
 कातिक धनल प्रयोदसि जान ।

॥ इति ॥

